करिआ सुरुज

'कालो सूर्य' नेपाली उपन्यास के भोजपुरी रूपान्तर

मूल लेखक

भरत जङ्गम

अनुवादक

डा.गंगाप्रसाद अकेला

भाषा सम्पादन

गोपाल ठाकुर

प्रकाशक

नेपाली आवाज प्रकाशान

विजुलीबजार, वानेश्वर, काठमांडु ।

फोन नं. ४७८१४८८, ४७८२१२९

मूल कृतिः **कालो सूर्य** (Kalo Surya)

मूल कृतिः भरत जङ्गम

अनुदित नामः **करिआ सुरुज** (Kariya Suruj)

अनुवादक : डा.गंगाप्रसाद अकेला

भाषा सम्पादनः गोपाल ठाकुर

प्रकाशकः **नेपाली आवाज प्रकाशान**

विजुलीबजार, वानेश्वर, काठमांडु ।

फोन नं. ४७८१४८८, ४७८२१२९

सर्वाधिकार मूल लेखक मे सुरक्षित

संकरणः पहिला (प्रथम) ११०० प्रति, १ साओन, २०६४ साल

मुद्रकः **सगरमाथा अपसेट प्रेस**

बिजुलीबजार, वानेश्वर, काठमांडू ।

मूल्यः रु. १००।–

भा.रु. Rs.75.00 US$ 2.50

ISBN: 978-99946-2-177-4

Kalo Surya (Nepali) A Novel: By Bharat Jangam
Translated into Bhojpuri: By Dr. Ganga Prasad Akela.

विश्वेश्वरप्रसाद कोइराला

फोन नं. १२५६९
चावहिल, काठमाडौं
१२ कार्तिक, २०३७

प्रिय भरत जंगमजी,

राउर लिखल उपन्यास करिआ सुरुजके अभिरूची के साथ पढनी। अभी के हमनी के राष्ट्रीय जीवन में, प्रत्येक स्तर में, भइल नैतिक ऱ्हासके चित्रण ओह में करेके प्रयत्न कइले बानी। कौनोसम्वेदनशील नेपाली खातिर अइसन भ्रष्ट स्थिति बहुत दुःख के बात बा। रउआ आपन लेखनी द्वारा अइसन स्थिति के उद्घाटन कइले बानी जे सराहनीय प्रयत्न बा। साधारण पाठक लोगन दिन प्रतिदिन अपन जीवन में अइसन स्थिति के परिणाम भोग रहल बा। राउर उपन्यास के शासनारुढ व्यक्ति लोगन पढ़िहन त शायद ओह लोग के भीतर मर गइल नैतिक चेतना कुछो मात्रा में फेर से जाग जाई कि जइसन लागता ? ऊ लोग शायद आपन एकान्त हृदय में कुछो दोषी भावना से ग्रस्त होइहन कि ?

राउर उपन्यास दारुण चित्र उपस्थित त कइलही बा आ एह उपन्यास के उद्देश्यो त ओतने बा। अर्थात् एकर उद्देश्य पाठक के एतने समझावेके बा कि देख हमनी के राष्ट्रीय जीवन केतना भ्रष्ट बना देहल गइल बा। मगर अब आवश्यकता बा अइसन स्थिति बनाबे के, राष्ट्र के अइसन दलदल में फँसावेवाला काम के कइलख ? काहे अईसन हो गइल ? ई सब बात ओरी अङुड़ी उठावेके आ एह सम्बन्ध में हमार विचार रउआ मालूमे बा। हम राजनीतिक क्षेत्र में जे करेके चाहतानीं ओकर उद्देश्य राष्ट्रीय जीवन में पुनः नैतिक मूल्य के स्थापना बा। रउआ आपन क्षेत्र से आपन स्थान से हमरा के सहयोग करेके प्रयास कइले बानी।

धन्यवाद !

राउर
द. विश्वेश्वर प्र. कोइराला

डॉ. बंशीधर मिश्र
अध्यक्ष
नेपाल भोजपुरी प्रतिष्ठान
केन्द्रीय कार्य समिति,
धापासी काठमांडू।

दो शब्द

ख्यातीप्राप्त उपन्यासकार भरत जंगम के लिखल 'करिआ सुरुज' गरीबी, पिछड़ापन, सामन्ती आ रूढीग्रस्त मूल्यमान्यता के अइसन चित्रण बा जौन आजो सामयिक आ सान्दर्भिक बा। सामाजिक विसंगति के ई उपन्यास एगो मार्मिक चित्रण बा। तात्कालीन राजनीतिक व्यवस्था में राज्य के अकर्मण्यता के कारण से आम जनता के भोगेके परल कठिनाई बड़ा मिहिन ढंग से पर्दाफास कइल गइल बा जौन आजो के सच्चाई बा। एह उपन्यास में खँखड़ा सामन्ती राष्ट्रवाद पर ई उपन्यास एगो भारी व्यंग्य बा। समग्र में ई उपन्यास पाठक के आपन मातृभूमि खातिर सोचे खातिर विवश करे में सफल रही।

अइसन अनमोल कृति के ई भोजपुरी अनुवाद भोजपुरी सहित्य के श्रीवृद्धि करेके साथे भोजपुरियन के बीच एगो गम्भीर विषय के परोसेके सफल प्रयास प्रयास के रूप में हम लेले बानी।

एह भोजपुरी अनुवाद खातिर अनुवादक डॉ. गंगाप्रसाद अकेला आ भाषा सम्पादक गोपाल ठाकुर के हार्दिक धन्यवाद !

डॉ. बंशीधर मिश्र

२०६४/३/१३
धापासी, काठमांडू ।

एतवार के दिन

बहुत दिन से हमार मनःस्थिति असन्तुलित बाटे । ई गाँव आ शहर सब के भविष्य से वर्तमान के खेलवाड़ करत देखला पर हमरा वर्तमान सङे घृणा पैदा हो गइल बाटे । एह देश के प्रत्येक मानवीय जीवन से लड़त आइल परिस्थिति हमरा दिल के दहला रहल बाटे । हम ना कहे आ ना निश्चित करे सकतानी कि बहुत दिन से हमरा काहे अइसन हो रहल बाटे । हमरा प्रत्येक अंग-प्रत्यंग में कम्पन होए लागता कौनो निश्चित रास्ता निर्धारण करे खातिर, सुन्दर भविष्य तेयार करे खातिर । तइयो स्थिति एतना विकराल बाटे कि हम साबितो ना करे सकतानी ।

आज हम सबेरे उठ गइल बानी । दैनिक कार्यतालिका अनुसार हमार चाय नइखे आइल । चाय आवे में अभी दू घंटा बाँकी बा । चाय खातिर हमरा दू घंटा प्रतीक्षा करेके बा । हम निश्चय कइनी, आज बिहनेके चाय हम आपन साथी जीवन के घर में पियब, इहे विचार कके हम घर से निकल गइनी ।

जीवन हमार बड़ पुरान साथी बाड़न । ऊ एगो सरकारी कार्यालय में नायब सुब्बा बाड़न । काठमाण्डू सन जगह में एगो छोट डेरा ! ठीके बाटे । उनकर मेहरारू खुदे खाना बनावेली । दूगो छोट-छोट बच्चा, स्कूल में

पढ़ावेके समय हो गइल बाटे । जीवन आँफिस जाएः से पहिले आ आँफिस से लौटला के बाद बेटा-बेटी में ओझरा जालन् । काहेकि श्रीमती के सँझिया-बिहने बच्चा से उनकरा फुर्सतो त दिआवेके बाटे । उनकर पारिवारिक सुख देखला पर हमरा ईर्ष्या होला । केतना सुन्दर उनकर घर के वातावरण बाटे ! सब काम बिना नोकर के सम्पन्न हो जाता ।

जीवन के कोठली के दुआरी पर पहुँचे से पहिले अनायासे हमार डेङ रुक जाता । भीतर दुनू प्राणी के बीच भइल विवाद सुनाता । हम जीवन के बोलावेके हिम्मत ना करे सकनी आ ओह से आगहू ना बढ़े सकनी । उनकरा दुनू के बातचीत हम स्पष्ट सुन रहल बानी ।

"तू काहे बात नइखू बुझत ! खाली ओरहने देत रहेलू । जेकरा लगे पइसा बाटे, ऊ बोर्डिङ में पढ़ावता, दार्जिलिङ पेठावता आ लन्डन पहुँचावता, हमरा ओह से कौनो मतलब नइखे ! जे बाटे ऊ खाएके द । घरे में पढ़ाव । आगा साल दुबटिया के प्राइमरी स्कूल में भर्ती करा देहम । हमार प्रमोशनो होई आ पैसो पहुँच जाई ।"

"रउआ त पच्हुओ इहे कहले रहनी ! बेटा ६ बरीस के हो गइल, बेटी चार बरीस के हो गइली । कब स्कूल में नाम लिखाएब, कौनो ठेकान नइखे । रामकृष्ण के बेटा-बेटी त तेसुरे साल से बोर्डिङ में पढ़ रहल बाड़न । रउएः लेखा त उहो सुब्बे बाड़न ?"

मेहरारू के बात ना बुझला से जीवन आक्रोशित होके कहलन - "तू कैसन अबुझ बाडू ? मालूम बा कि हमार तलब केतना बाटे ? ओह से घर ठीक से चलता कि ना ? केतना महिना बीत गइल चाय पियल छोडल ? सँझिया-बिहने उसिनो चाउर से तोहार पेट भरे ना सकनी हँ, तब ऊ साल बेटा-बेटी के कइसे स्कूल पेठाईं ? कहल आसान बाटे, स्कूले त पेठावेके बा नू ? कपड़ा किनेके परी, किताब किनेके परी, स्कूल के फीस देवेके परी आ तू रामकृष्ण के बात करताडू ? ऊ काहे ना पढ़ाई ? ऊ त्रिभुवन एयरपोर्ट भन्सार कार्यालय के ना.सु. बाटे । ओकरा एक दिन के आमदनी हमार तीन महिना के तलब से बेसी हो जाता । ओतने नइखे ! एक बरीस रह गइल त जिनगीभर सुतले-सुतले खाई । इहो त देख, दू बरीस अगाड़ी जब खरदार रहे तब तीन महिना घरे बइठ गइल रहे । ओकर स्टैण्डरे दोसर हो गइल बाटे । ओकर बात कइला से हमनी के होई ? अब बस कर, जा के खाना बनाव । आँफिस जाएः में देरी होई ।"

बेसी उत्सुक होके जीवन के मेहरारू पुछतारी- "ई त्रिभुवन एयरपोर्ट भन्सार कहाँ बाटे ?"

बात समाप्त करे खातिर जीवन कहलन - "गौचर भन्सार बा नू !"

"तब त रउओ प्रमोशन छोड़के ओतही बदली करा लीं ।"

झोंकाते जीवन कहलन - "हँ एयरपोर्ट भन्सार जइसे तोहरा बापेके सम्पत्ति होखे, कहले से बदली हो जाई का ?"

कुछ देर चूप रहला के बाद जीवन फतफताए: लागता - "हमार के बाटे पावर में ? कहीं से नाता लगइला के बादो सचिव आपन नाता में नइखन आवत । चाकरी करेके शुरू करीं, घर में बेटा-बेटी के ना देखला पर चुल्हिओ ना जरी । दिन में आँफिस में कुछ करीं उहो ना होई, चढ़ौना चढ़ावेवाला कौनो चीज आपन लगे नइखे, तब हमार कइसे आम्दनीवाला अड्डा में बदली होई । कुछे दिन पहिले त एक जनेके आपन टेबुल पर राखके महिनो तक सिखइनी, सहायता कइनी, अबो त सचिव जी खुश होइहन, कर, अन्त:शुल्क भा भन्सार कौनो जगे जाएके मौका मिली कहके बड़ आशा लगइले रहनी, मगर का करीं ? भाग में ना रहला पर ना होखेला । हम जौना छौंड़ा के सिखइले रहीं इहे छोटी भन्सार के हाकिम बन गइल । अब एक बारिस के बाद ऊ जब घरे लौटी त टाल रोपेयाकमाके आई । ओइसन आदमी कइसे मौका ना पाई ? आखिर सचिवजी के सार के दामाद नू भइलन ? अशे त आदमी के बँचाबेला । चिन्ता करेके जरूरी नइखे । हमरो मौका आई । ओकरा बाद बेटा-बेटी के बोर्डिङ में पढ़ाएब, तोहरोके सोना से सजा देहब । जाके खाना बनाव, साढ़े ६ बज गइल बाटे ।"

एही बीच में बेटा-बेटी रोए: लागता । शायद बेटा-बेटी तुरन्ते जागल बाटे । ओकनी के बात के विषय दोसरे तरफ चल जाता । जीवन कहतारन - "आज पावरोटी नइखे, जल्दी खाना बनाव ।"

ढेर दिन हो गइल रहे, हम जीवन का घरे ना गइल रहनी । बाहरे रास्ता में चलत बेरा उनकर मुस्कान से भरल मुँह से मात्र हम परिचित रहनी । जीवन के घर में महीनन से चाय ना बनल रहे । बेटा-बेटी खातिर पावरोटी तक ना रहल जीवन के घर में सबेरे चाय के आशा कइल हम ठीक ना समझनी । ओहू पर जीवन के बोलावहू में हिचकिचाहट हो गइल । हम विचार कइनी, दिन में आँफिस में भेंट करे जाएब ।

जिनगी से जुड़ल आशा आ धैर्य शायद उनकरा के सहारा देले बाटे । काठमाण्डू शहर में रहला के बादो ऊ वर्षो तक बेटा के पढ़ावेके नइखन चाहत, उसिनो चाउर पेटभर खाएके नइखन चाहत । आपन घरोके उनकरा चिन्ता नइखे, अइसने तर्क उनकरा प्रति हमरा हृदय में उठता ।

अइसने अवस्था में हम घर पहुँचतानी । सात बज गइल बाटे । हमार कोठली में चाय के प्याली पहुँच जाता । चाय के बाफ हमार मुँह के अगाड़ी निकल रहल बाटे । प्याला ना पिए: तक हमार चुश्की चलते रहता । हमरा आँख के सामने जीवन लेखा हमार सयकड़ो साथी सब के इयाद आवे लागता, कहाँ बाटे ? कैसन बाटे ? कैसन स्थिति में बा ? कइसे सहता ? अइसने प्रश्न सब से हमार छाती फाटे लागता आ हम एगो पूर्ण प्रश्न बनेके निश्चय करतानी - अभी के वर्तमान समाज में ।

हम जीवन के आँफिस में पहुँच के पुछतानी - "दस बज गइल । कौनो कर्मचारी आइल नइखे ?"

"केकरा से भेंट करेके बा ?" - एगो अधबैस आदमी हमरा के प्रश्न से भरल उत्तर देता ।

"जीवन सुब्बा साहेब से" - हम आपन रोआव से भरल आँख चारुकात के कुर्सी, टेबुल आ कोठली का ओर घुमावते पुछनी - "सुब्बा साहेब के कोठली इहे बाटे ?"

'जी !' - ऊ मुड़ी हिलावते बतावे लागता - "इहवाँ खरदार साहेब, उहवाँ सुब्बा साहेब बइठेलन आ उहवाँ भीतर उपसचिव सहिब बइठेलन ।"

हम हँसते-हँसते पुछनी - "रउआ कहाँ बइठतानी त ?" ऊ हकबका गइल आ कुछ देर के बाद जबाब देलक - "कहाँ बइठब हमनी का ? पिउनो खातिर कहीं कुर्सी होला ? आ बइठेके जगहो त नइखे ! कोठली के बाहरे बइठल रहेके बाटे, घंटी बोलइला पर भीतर पइसेके पड़ता । चाय कहला पर, चाय बनावेके बाटे । सिकरेट कहला पर सिकरेट खरीदके लेआवेके पड़ता । बइठेके त जरूरते नइखे पड़त ?"

ऊ आपन काम के विषय में एतना आसानी से बतइले रहे कि ओकरा प्रति मन में आउर उत्सुकता बढ़ गइल आ हम फेर पुछनी - "केतना बरीस से रउआ इहाँ काम करत आ रहल बानी ?"

"चौबीस पहुँच के पचीसवाँ बरीस चढ़ गइल।" - निर्धोक होके ऊ जबाब देलक आ कोना में रहल एक कुर्सी के तरफ देखावत कहलक - "उहवाँ बइठ जाईं ! इहे सुब्बा-साहेब के टेबुल बाटे। हम दोसर कोठली खोले जातानी।"

कोठली खाली बाटे आ हम अकेले बानी। हमार नजर कोठली के चारू ओरी दउरे लागल। कोठली में स्टील के तीनगो बन्द दाराज आ ओकरा उपर छिटाइल कागजपत्र आ फाइल सब बाटे। कोठली के कोना में हीटर, चायदानी, कप-प्लेट आ देवाल पर कलेण्डर टाङल बाटे। पर्दा लागल एगो दुआरी के बगल से उपसचिववाला कोठली के एगो रिभल्भिंग चेयर आ टेबुल मात्र देखाता। प्रवेश-निषेध के बोर्ड टाङल बाटे। उहवाँ बइठेवाला उपसचिव कैसन होइहन ? इहे प्रश्न हमार मन में उठता। तबे जीवन के आवाज सुनाता - "कृष्णबहादुर !" जीवन कोठली में प्रवेश कइला के बादे हमरा देखके अकचकाते पुछता - "अरे ! कहाँ से इहाँ आ गइनी ? भेंट ना भइला त ढेर दिन हो गइल ?"

"हँ, तोहरे से भेंट करे दसे बजे आ गइल रहनी।"

प्रफुल्ल मुद्रा में जीवन कहलन - "देखीं न ! घर से साढ़े नौ बजे किलनी। आँफिस समय में बस चढ़े में बहुत भींड़ रहता। हम त पैदले चल के आवतानी। केतनो जल्दी आवेके चाहला पर दस-साढ़े दस होईएः जाता। आ जल्दीओ आके का करीं ? उपसचिव जी एगारे बजे से पहिले ना आवेलन। ऊ जइले ना आवस्, कौनो कामे ना होला।"

जीवन दराज ओरी बढ़लन आ दराज से चार-पाँचगो फाइल निकाल के आपन टेबुल पर रखलन। तबे कृष्णबहादुर कोठली में प्रवेश कके कहता - "आपने हमरा के बोलइले बानी ?"

कृष्णबहादुर के चाय बनावेके ईशारा कके जीवन पुछलन -"खरदार साहेब ना अइलन ह का ?

"आज उनकरा के उपसचिव जी कौनो काम में पठइले बाड़न। काल्हे आँफिस ना आएब कहत रहलन। सुब्बा साहेब के मालूम नइखे का ?" - कृष्णबहादुर कहलख।

"का कहीं ? कर्मचारी सब के त ई हाकिम लोगनी बँन्हुआ मजदूरे लेखा बुझेलन। महिना में पन्द्रह दिन त उनकरे काम करेके पड़ता।" -

लम्बा साँस खींच के जीवन बोललन - "का करीं, सरकारी कार्यालय में नोकरी कइले बानी कहके नाको फुलावल बेकार बाटे। ना कइला से हाकिम खिसिआ जाता ? हाकिम के खिसिआ गइला से बदली हो जाई भा राजीनामा देवे बाहेक आउर कौनो उपायो ना रही। हाकिम के खुश कके रखला पर रेकर्डो नीक रही आ सहुलियते काफी मिली। फायदा देखीं कि बेफायदा देखीं, कहीं त ?" हमरा ओरी देखके जीवन आपन मन के हल्का कइलन।

हम असमंजस में बानी। कार्यालय के चालचलन खुद मालूम नइखे, खुद नइखी भोगले, से कुछ कहलो ना जा सकेला तइयो जीवन के कहले लेखा हमहुँ कुछ कहनी ना। खाली प्रश्नवाचक दृष्टि से जीवन के चेहरा पर देखनी। हम कुछियो उत्तर ना देवे सकनी।

"आज सचिव जी ई फाइल तेयार कके लेआवेके कहले बाड़न आपन विवेक आ बुद्धि अनुसार के विवरण लिख चुकल रहनी मगर उनकर मने ना मानलक। अब हम ई फाइल कइसे बनाईं ? हमार दिमागे काम नइखे देत ?" जीवन हाँथ से फाइल टेबुल पर राखके टोपी हिलावे लगलन आ कहलन - "उनकर कहले लेखा करीं से हमार विवेक नइखे मानत, ना कइलो पर ओह से फुर्सत मिलेवाला नइखे।"

अब तक ले उनकर बात हमार दिमाग में घुसल नइखे। हम कुछियो बोलेवाला स्थिति में नइखीं। एहि बीच में जीवन हमरा से पुछलन - "विशेष कौनो काम रहे का ?"

तुरन्ते हम उनकरा कुछियो जबाब ना दे सकनी, काहेकि उनकरा से भेंट कइल हमार कौनो विशेष काम ना रहे। हमरा त केवल जीवन के घर के सबेरेके खटपट के सम्बन्ध में उनकरा से भेंट करेके इच्छा रहे। उनकरा सम्बन्ध में कुछियो जानेके उत्सकुता हो गइल रहे, ओही खतिरा उनकर कार्यालय तक आइल बानी।

उनकरा के हम घबराते कहनी - "विशेष त कुछियो ना रहल रहे, खाली तोहरा से भेंट कर लीं इहे सोचके आइल रहनी। ढेर दिन हो गइल रहे भेंट भइला, ओही से आ गइनी।"

हमरा स्पष्ट रूप से ना कहला पर उनकरा आश्चर्य लागल होई काहेकि कुछ बरीस पहिले हमनी खूबे मिलेवाला साथी में से रहनी सन। आज परिस्थिति हमनी के बीच में संकोच पैदा क देले बाटे। जीवन एगो

जिम्मेवार कर्मचारी का साथे एगो घर के जिम्मेवार मालिको त बाड़न ! जीवन फेर दोहरा के पुछलन - "कुछ त जरूर होई ?"

एतने में कृष्णबहादुर दू कप चाय टेबुल पर राखता आ चाय से बात आगे बढ़ता ।

हम कहनी - "तुरन्ते खाना खाके ना आइला बाड़ऽ का ? अभी चाय पीबऽ ?"

जीवन तनि अँटक के जबाब देता - "हँ, सबेरे खाना नानु ओतना रुचेला आ फेर आँफिस में अइला के बाद चाय पीएके आदतो त लाग गइल बाटे । का करीं, ई चाहो त सरकारीऽ सहुलियते बीच के नु बा । एकर उपभोग त करही के पड़ता । हमनी लेखा छोट कर्मचारी के आउर बेसी सहुलियत कहाँ बाटे ? इहो त हाकिमेके तजबीज पर निर्भर बाटे । मिलबे करी अइसन त कुछियो नइखे । हाकिम के मन ना होई त काल्हे से रोक लाग जाई ।"

सहुलियत के चाय पर हमरो हाँथ चल जाता । चाय के चुश्की सङे हमार ध्यान सबेरेके वार्तालाप पर केन्द्रित हो जाता । जीवन शायद खाना खाएके मन ना होला के कारण कम त नइखन खइले ! ना.सु. के नोकरी, काठमाण्डू के बास, कम-से-कम एक सय पचास रोपेया घर किराया, केतना होएबे करी चार प्राणी के खतिरा ? उसिना चाउर खइलो पर त चार आदमी खातिर महिना में सत्तर किलो लागिएः जाई । तरकारी, नून, तेल, मसल्ला इहो सब त चाहबे करी । ई त महिना के खर्च भइल । वार्षिक खर्च में पर्व-त्योहार, लत्ताकपड़ा आ मेहमान सब के हिसाब कइला पर हम त जीवन के घर के बजेटे बनावे में असमर्थ हो गइल बानी । कइसे चलावत होई हें ?

टेबुल के दुनू कात से आइल चाय के चुश्की के बीच में हम कहतानी - "जीवन ! तोहरा नोकरी करत केतना बरीस भइल होई ?"

"इहे दस बरीस ! तोहरा मालूमे बाटे जब हमरा घर से पइसा आइल रुक गइल तब बाध्य होके हमरा आपन कॉलेज के पढ़ाई छोड़ेके परल रहे । ई हमार हाकिम उपसचिव हमनीएके क्लास के साथी शिवनाथ शर्मा बाड़न । उनका लगे पइसा रहे, उच्च शिक्षा प्राप्त कइलन । उनकरा नोकरी कइला त छवे बरीस भइल बाटे । ऊ हमार हाकिम बाड़न । नोकरी के हिसाब से उनकरा से हम चार बरीस जेठ बानी । पद के हिसाब से

हमरा से ऊ दू स्तर उपर बाड़न आ तलब के हिसाब से हमरा से उनकर तीन गुना बेसी बाटे ।"

"एः ! इहे शिवनाथ !" - हम कहनी - "उनकर बाबु काफी धनी रहलन का नू ! राणा के समय के डिट्ठा ! पकनाजोले में उनकर घर बा इहे बाड़न नू ?"

"हँ, इहे बाड़न ।" - जीवन निराश होके जबाब देलन - "का कहीं ? उनकरा घर में साथी के रूप में गइल रहनी हमनीका आ अभी उनकर नोकर लेखा बिजुलीके, टेलिफोन के पइसा बुझावे जाएके पड़ता आ पर्व-त्योहार में सामान खरीदके पहुँचावेके पड़ता ।"

हम जीवन के कहनी - "आपन साथी हाकिम भइल अड्डा में त आउर नीक होखेके चाहीं कि ना ?"

जीवन कहता - "हमनी के सरकारी अड्डा के परम्परे अइसन बाटे कि हाकिमेके हाँथ में कर्मचारी के जीवन रहता । हाकिम के कौनो कर्मचारी निमन ना लगला पर ओकरा के सतावेके बहुतो नियम-उपनियम के व्यवस्था बाटे । ओहु से विचित्र ई बाटे जे कौनो नियम - उपनियम नहिओ भइला पर हाकिम यदि चाहीं त आपन से उपरवाला हाकिम के बहाना बना के परेशान कर सकेला । अइसनके परम्परा बाटे । ओही से एकरा भीतर सब के पैसही के पड़ता, ना पैसला से कल्याणे नइखे । ओहू पर हमनिओके हाकिम के उपर के हाकिम के खुशी राखेके पड़ता । हाकिम चाहीहन त महीने दिन में हमनी के लखपति बना सकेलन । ई वास्तविकता बाटे आ ओही आशा से हमनी के उनका लोगनी के खुशी राखेके पड़ता । ई हमनी खातिर परम्परे बन गइल बाटे ।"

जीवन से हम बेसी बात चाहिओके ना पुछ सकतानी । हमनी का मित्रता में कौनो कमी नइखे, तइयो हम ना पुछ सकतानी । जीवन के वास्तविकता से अब हम ओतना दूर नइखीं । हम उनकरे मुँह से सुन सकेब तबे अपना के सफल समझेब । ऊ फाइल लेके सचिवजी के कोठली में जाएके तेयारी में बाटे । एतने में हमनी ओरी बिन देखले शिवनाथ आपन कोठली में प्रवेश कइलन । साथे जीवनो आपन सलामी देवे खातिर उनकरा कोठली में चल जाता । कुछे देर में जीवन लौट के आपन कोठली में आके हमरा के कहता - "हम ऊ फाइल के काम से सचिवजी के इहाँ जा रहल

बानी, तूँ तब तक शिवनाथजी से जाके बतिआ। हम तबले लौट के आ जाएब।"

जीवन जल्दी आवेके आश्वासन देके चल जाता। हमरो शिवनाथ से भेंट करेके इच्छा हो जाता। कृष्णबहादुर के बोलाके शिवनाथ इहाँ आपन नाम के स्लीप पहुँचा देवेके कहनी। हमरा कहला से कृष्णबहादुर स्लीप त पहुँचा देलक मगर शिवनाथ हमरा के तुरन्ते ना बोलइलन। तनिका देर बइठेके सन्देश देलन। कृष्णबहादुर का ओर हमार ध्यान आकर्षित भइल।

हाकिम के घण्टी पर भीतर-बाहर करे में माहिर कृष्णबहादुर के नोकरी कइला पचीस बरीस हो गइल रहे। ऊ जौना समय में नोकरी में प्रवेश कइले होई, शायद ओ समय में शिवनाथ पढ़ेके शुरूओ ना कइले होइहन। सरकारी कार्यालय में पिउन से नीचा के त कौनो दर्जा जरूरे नइखे। ओही से कृष्णबहादुर शुरू में पिउन के नोकरी कइले होइहन आ शायद पिउने होके अवकाशो पइहन। ई कइसन निजामती नियम बाटे? पिउन के नोकरी करे खातिर नेपाली में लिखापढ़ी करेके योग्यता चाहीं मगर सिपाही आ पुलिस में भर्त्ती होखे खातिर ई अनिवार्य नइखे। पुलिस में शुरू में कन्स्टेबुल में भर्त्ती भइल व्यक्ति के इन्स्पेक्टर आ एस.पी. बने में कौनो रोक नइखे। सिपाहिओ में भर्त्ती भइला पर पेन्सन पावेके समय तकले सुबेदार आ लप्टन हो सकेला। मगर पिउन के नोकरी में पचीस बरीस पूरा भइलो पर ओकरा के एको तह तक प्रमोशन ना होखेला? ई कइसन नियम बाटे? सुनले रहनी, राणा के समय में सिपाही आ लिखे - पढ़ेवाला सिपाही वर्गीकरण कके लेखनदास से बहिदार तक जात रहे? तइयो कृष्णबहादुर आपन पद पर खुशी लउकता। कार्यालय में सब से पहिले इहे आवेलन आ सब से पीछे इहे जालन।

नेपाली वेशभूषा में एगो युवक कोठली में प्रवेश करता। ऊ एही कार्यालय के शाखा अधिकृत बाटे से निश्चय ओकरा एगो सुसज्जित टेबुल पर बइठला के बाद हम कइनी। खुदे ना चिन्हला के कारण उनकरा ओरी ध्यान देहल हम जरूरी ना समझनी। थोड़के देर में ऊ शिवनाथ के कोठली में प्रवेश कइलन। शिवनाथ उनकरा से देरी से आवेके कारण पुछलन आ ऊ जे उत्तर देलन से हम स्पष्ट सुने ना सकनी। "सचिवजी के बेटा के ..जाउलाखेल.....सेन्ट जेवियर्स ..... भींड़ बस .....।"एतने हमरा सुनाइल।

शाखा अधिकृत कोठली से बाहर अइलन। शिवनाथ के कोठली से बोलाहट के विद्युतघण्टी बाजता। घण्टी के आवाज समाप्तो ना भइल रहे कि कृष्णबहादुर दौड़ते कोठली में पैसलन आ कोठली से बाहर आके हमरा कोठली के भीतर प्रवेश करेके संकेत कइलन।

हम कोठली के भीतर प्रवेश कके शिवनाथ से हाँथ मिलाके औपचारिकता पूरा करतानी। शिवनाथ हमरा से खुल के बात ना कर रहल बाड़न। हो सकेला, उनकरा अपना पद के घमण्ड होखे। हम महशूस कइनी, ऊ असहज महशूस कर रहल बाड़न। शिवनाथ के आँख टेबुल के चारू ओरी घुम रहल बाटे, अइसन बुझाता कि ऊ कौनो हेरा गइल चीज के खोजे खातिर चारू ओरी देख रहल बाड़न। कोठली में छाइल मौनता के तोड़त हमहीं पुछनी - "शिवनाथ जी ! रउआ इहाँ बानी से हमरा मालूमे ना रहे। रउआ कब से इहाँ बानी?"

"प्रमोशन भइला के बाद से, करीब एक बरीस होखे लागल।" - शिवनाथ बहुत गम्भीर होके जबाब देलन।

हमनी दुनूका बीच बातचीत ना भइलो ढेर समय हो गइल रहे। काल्ह आ आज के शिवनाथ में आकाश-जमीन के अन्तर बाटे। औपचारिक बातचीत समाप्त होखे लगला के बादो ऊ ठीक से हमरा से दिल खोल के बोले ना सकलन। हम विद्यार्थी जीवन के कुछ संस्मरण उनकरा के सुनइनी तब उनकरा में तनी स्पष्टता देखे में आइल। हमरा विषय में ऊ कौनो विशेष ना पुछलन। हम खुलस्त होके आपन अतीत के विषय में उनकरा के सुनइनी, आपन भविष्य निश्चित नइखे इहो सुनइनी। ओकराबाद हम शिवनाथ से पुछनी - "कौना-कौना कार्यालय में काम कइले बानी? अब कहीं बदली होखेके विचार त नइखे?"

"लोक सेवा एही मन्त्रालय में छौ बरीस पहिले पठा देले रहे। एक बरीस एही मन्त्रालय में काम कइनी। ओकरा बाद अन्तः शुल्क, कर कार्यालय सब में दू बरीस काम कइनी। अब मिल जाई त वीरगंज बा विराटनगर भन्सार में जाएके फिराकमे बानी।" - शिवनाथ आपन बात के समर्थन करत कहलन - "एः मन्त्रालय में बइठके का करेम? दस-पाँच मात्र बजावेके काम बाटे। काम बाटे कहीं त उहो नइखे, ना कहीं तबो एक-दूगो नीचा से आइल फाइल उपर पेठावेके काम, एतने त बाटे? एही मन्त्रालय में बइठल

रहला पर आदमी के मानसिक, शारीरिक आ आर्थिक शक्ति क्षीण होता। हम त कौनो व्यस्त रहेवाला कार्यालय में जाएके चाहतानी। देखीं, का होता ?"

शिवनाथ के मन के बात आसानी साथ बुझेके मौका पइनी। हमरा से उनकर संकोच मेटा गइल लेखा बाटे। संकोच करेवाला अवस्थो त नइखे ? हम एक साधारण नागरिक बानी, हमरा आगे शिवनाथ लेखा व्यक्ति जब आपन गुणगान सुनइहन तब उनकरे मूल्य बढ़ी। हमहुँ ओही मौकामे एगो बात जोड़ देलीं - "चार बरीस तक अन्तःशुल्क आ कर कार्यालय के अनुभव से त निश्चय रउआके भन्सार कार्यालय में काम करे योग्य बना देले होई ?"

"इहवाँ अनुभव के आधार थोड़े देखल जाला ?" - शिवनाथ आपन सम्बन्ध में स्पष्टीकरण देलन - "लोकसेवा से इहाँ पेठावेके समय में केतना सोर्स लगावेके पड़ल रहे, का कहीं ? हमरे बाबु के तालीम देल व्यक्ति लोकसेवा में रहलन, उनकरा लगे बाबु खुदे जा के जै से भी होखे अर्थ बा परराष्ट्र में मिला देवेके कोशिश कइला के वादे त हमार सिफारिश इहाँ भइल आ हम इहाँ अइनी। इहाँ अइला के बादो हमरा एकबरीसतकले कौनो काम के जिम्मा ना दिहल गइल। पछाड़ी बहुत कोशिश कइला पर अन्तःशुल्कमे गइनी, तब मात्र हमार जिनगी के रास्ता ठीक से बन पइलक।"

हम मनेमन विचार कइनी, शिवनाथ अन्तःशुल्क आ कर में रहला पर प्रशस्त पइसा कमइले होइहन आ आव फेर भन्सार में जाएके फिराकमें बाड़न। आर्थिक स्थिति खूब मजबूत बनावेके फिराकमे लागेवाला शिवनाथ पइसा ना कमाईवाला अड्डा आ पइसा ना कमाईवाला व्यक्ति के बेकम्मा समझेलन। उनकर प्रस्तुतीकरणमें हमार कौनो प्रतिक्रिया नइखे। एही क्रम में हम पुछनी - "राउर तलब केतना बाटे ?"

उपहाशपूर्ण मुस्कान देत बोललन - "केतना कहीं, सिगरेट महिनाभर पिएलल पहुँच जाता ? इहे चार सय आ कुछियो हाँथ में आ जाता। घर बनावे खातिर सरकारी सापटी लेले रहनी, ओहो कट जाता। फेर संचयकोष कटला पर त कुछियो हाँथ में नइखे आवत सेहो कहला से होई ।"

"घर कहाँ बनइले बानी ?"

"ठमेल में बनइले बानी। सरकारी सापटी के रकम से जमीनो खरीदे में ना पहुँचल। खुशी से भरल लम्बा साँसलेत बोललन - "दू लाख आपन लगे रहे, एगो छोट बङ्गला बनइनी। घर से त हम कौनो अंश ना लेनी।"

"बेटा होके पैतृक सम्पत्ति के आश कइलो त ठीक नइखे।" हम उनकर बात में शह देत कहनी - "जे कुछियो बाटे, दुःख-सुख खुदे भोगल त ठीके बाटे नुँ ?"

शिवनाथ के विचार के विपरीत त हमहुँ ना कहनी। उनकरा के अब एगो कार किनेके बहुत बड़का इच्छा बांकी बाटे। एतने नइखे, ओकरा के प्रयोग करेके क्षमता प्राप्त करे खातिर सेहो ऊ निश्चय कर लेले बाड़न। उनकरा के उनकर हाकिम से पूरा विश्वास आ भरोसा बाटे कि निकट भविष्य में ऊ भन्सार के हाकिम होखे जा रहल बाड़न।

हम पुछनी - "वीरगंज आ विराटनगर भन्सार में कौन ठीक बाटे ?"

"ओइसने बाटे दुनू, मगर तइयो वीरगंज बेसी नीक बाटे काहेकि ऊ काठमाण्डू के प्रवेशद्वार बाटे।"

"एः ! तब त उहवें गइल ठीक रही।" - हम उनकर बात के आउर पुष्टि कर देनी।

"कर आ अन्तः शुल्कमे रहला पर चौबी से घंटा त्रासपूर्ण अवस्थामें रहे पड़ता। भन्सार के विषय में त ऊपरतकले मालूमे बाटे। नीचा से ऊपरतक दर्जा अनुसार भाग मिलेवाला बात केकरा के मालूम नइखे ? खाली कमबेसी के बात मात्र बाटे। फेर मन भइला पर अनुचितो कइला पर त मालामाल बनेके बात बाटे। ई बात त राणाकाल्हे से चल आ रहल बाटे।"

"अनुचित काम नहिओ कइला पर आइल त उचिते ने भइल ?" - हम उनकर बात के शह देत कहनी - "कइसन आम्दनी बाटें ऊँहमा ?"

"इहे बुझीं जे महिना के अठारे हजार से बीस हजार तकले पहुँच जाता। आउर त का कहीं ? छोट कर्मचारी बहिदार के भाग में चार हजार पहुँच जाता। फेर तलब देला के दोसर दिन एकाउण्टेण्टे ऊ सलामीवला रकम बाँट देता। ऊ से केहु से ई छिपल नइखे। अनुचित रकम कहलो ना जा सकेला। ओही से त हमार पूरा कोशिश ओही में बाटे ?"

टेबुल उपर रहल टेलिफोन के घण्टी बजला से हमनी के बातचीत रुक गइल। शिवनाथ हाँथ के ईशारा करत "तनि रुक जाईं' कहके टेलिफोन

उठा के कहे लगलन - "हलो, हजुर, नमस्कार हजुर ! हम जीवन के कह देले बानी ..... उँहे फाइल लेके आइल बाड़न हजुर ..... उनकर दिमागे में नइखे घुसता। हम इहवाँ सेक्सन अफिसर आ जीवन के लगा के सम्पन्न करवा देहब। अपने पठा दीं हजुर .....हजुर नमस्कार।"

टेलिफोन राखके हमरा ओरी देखके शिवनाथ कहता - "सचिवजी के बात ना कर्मचारी बुझता, ना कर्मचारी के बात सचिवजी बुझेलन ! हम पर गइनी बीच में, दुनू के मध्यस्थता करे खातिर।"

विषयवस्तु से खुद परिचित ना रहला के कारण कुछियो ना बोलके सहमति मात्र जनइनी तबे जीवन कोठली में प्रवेश कइलन। जीवन हमरा के बिन देखले टेबुल के दोसरा ओरी शिवनाथ के कुर्सी के बगल में जा के खड़ा हो गइलन आ फाइल के विषय में आपन मन्तव्य व्यक्त करे लगलन - "एः फाइल में सचिवजी जइसे कहले बाड़न आर्थिक नियम से ओइसे करेके नइखे। हम कइसे आर्थिक नियम विपरीत लिखीं ? सचिवजी कहतारन 'नियमसियम सब मिलाके ले आव'। नियम में उनकर कहला लेखा नइखे। रउएः विचार करीं हाकिम साहेब, ठेक्का के काम सम्झौता अनुसार सम्पन्न हो गइल बाटे। पावेवाला रकम ठेकेदार ले चुकल बाटे। अब ई अनावश्यक दावी कइसे श्री ५ के सरकार स्वीकार करी ? पचास साठ हजार के बात रहला पर कुछ कइलो जा सकत रहे, ई त असी लाख के दावी के बात बाटे ? का कहीं, हमरा त कुछ फुराते नइखे ? हमनी त छोटका कर्मचारी हईं, नोकरी के भरोसे जीवन बँचावेके पड़ता ? काल्ह विशेष प्रहरी विभाग अथवा अख्तियार दुरोपेयोग जब छानवीन करी तब का कहेम ? देखीं हाकिम साहेब ! रऊएः विचार करीं।"

"ठीक बाटे फाइल दीं त।" - शिवनाथ जीवन के हाँथ से फाइल लेके उल्टावे लगलन आ कहे लगलन - 'सचिवजी जे बात कहले बाड़न ओ में रुउआ बेसी तर्क ना करीं। राउर जाई त छोट नोकरी आ जब सचिवजी के जाई तब का होई ? उहो त विचार करीं ? उनकर कहल हमनी के कौनो हालत में पूरा करहीके बाटे। फेर निर्णय करेवाला हाकिमो त सचिवजी बाड़न ! सचिवजी त खाली मन्त्रालय में आ फाइल के टिप्पणी में राय फरक ना होखे से मात्र चाहेलन। खुदे फँसेवाला काम ऊ खुदे त निश्चिते ना करिहन। मान लीं यदि फँसिएः गइलन त उनकरा के कुछियो करेके तागद नेपाल में केहु के नइखे। ऊ किनकर आदमी बाड़न, रउरा मालूमं नइखे ?

कुछियो होखे, हमनी के नून खइले बानी, उनकर आज्ञा शिरोपर करके काम करेके चाहीं।"

कुछ मिनट तक फाइल अध्ययन कइला के बाद शिवनाथजी कहलन - "देखीं, कइसे लिखब ? जानकारी होई ऊ गइल, एही तरीका से लिखीं। निर्माण आ यातायात मन्त्रालयो से देवही के चाही, ढंग से राय देलही बाटे। एकरे आधार पर सम्झौता अनुसार ठेकेदार काम सम्पन्न करेके चाहत रहे मगर महँगाई बढ़ते गइला के कारण आ नक्सा इस्टीमेट से कुछ बेसी काम ठेकेदार के करेके सम्बन्ध में बेर-बेर ठेकेदार के देल गइल पत्रो से स्पष्ट बाटे आ सम्बन्धित मन्त्रालय द्वारा सेहो देवही के प्रकार के राय रहला के आधार से आर्थिक नियम में उल्लेख ना भइल परिस्थिति सृजित हो गइला के बादो हाल के स्थिति में एक बेर खातिर ठेकेदार के दावी बमोजिम असी लाख देवेके अवस्था देखला से निकासा खातिर बेहोरा प्रस्तुत करतानी कहके लिख देला से हो जाई। राउर-हमार घर-घराना से जाएवाला नइखे ? देवेवाला यदि देवेके चाहता त रउआ आ हमनीका काहे माथा दुखाईं सन ? जाईं, आजे फाइल पेश करेके बाटे।"

शिवनाथ के आसानी से कहला के बादो जीवन के दिमाग में बात घुसले नइखे। जीवन फाइल पकड़े तक से हिचकिचा रहल बाड़न। शिवनाथ के दू-तीन बेर आदेश देला के बाद फाइल लेके बिन बोलले जीवन कोठली से बाहर निकललन्।

शिवनाथ हँसते कहलन् - "जीवन हमनी के सहपाठी बाड़न। चिन्हीं कि ना ? बाते नइखे बुझताडन ? एही से त उनकर उन्नति नइखे भइल। नोकरी कइला दस बरीस हो गइल।"

टेलिफोन के घण्टी बाजता। शिवनाथ टेलिफोन में बतिआएः लगलन - "हलो ..... नमस्कार हजुर ! हजुर लगा देले बानी ..... हजुर आजे पेश हो जाई हजुर ..... ठीक बाटे, हम आ रहल बानी। नमस्कार हजुर।"

हमरा ओरी देखके शिवनाथ कहलन - "हमरा सचिवजी इहाँ जाएके बाटे। काल्ह-परसों आईं ना, बात करेम। अभी हम जाईं त ?"

शिवनाथ आ हम कोठली से बाहर निकल गइनी। शिवनाथ चल गइलन आ हम बाहर के कोठली में अँटक गइनी। जीवन आपन टेबुल के बगल के कुर्सी पर बइठेके ईशारा कइलन। एतहें बइठ गइनी। शाखा

अधिकृत के नजर में हम नयाँ आदमी रहनी ओह से ऊ हमनी ओरी बेर-बेर देखे लगलन। ओही बीच में जीवन हमार परिचय शाखा अधिकृत से करइलन। हमार नमस्कार के प्रतिउत्तर उहो खुशी होके कइलन। हमनीका बीच साधारण बातचीत होखे लागल। उनकरो नोकरी कइला तीन बरीस मात्र भइल रहे। ओइसे देखला पर उनकर पोशाक साधारण रहे, कौनो तड़कभड़क ना रहे। हमरा बुझाइल, ऊ नोकरी के स्वाद ना पइले रहलन, ओह से सुखले तलब पर आश्रित रहलन।

शाखाअधिकृत से जीवन कहलन - "कहीं हाकिम साहेब, ई फाइल के सचिवजी के अनुकूल कइसे बनावल जाई ?"

"देखीं सुब्बासाहेब ! रउआ जइसन टिप्पणी लिखम हम ओही में दस्तखत कके उपर पठा देहम आ फेर रउआके उपसचिवजी कहिए: देले बाड़न तब फेर एकरा विषय में काहे बेसी तर्क-वितर्क करतानी ? नोकरी करेके मन नइखे त राजीनामा करेके परी, करेके मन बाटे त कहले लेखा करेके परी। बेकार में समय बर्बाद कइला से कौनो फायदा नइखे।"

जीवन कुछियो ना बोलके फाइल उल्टाके टिप्पणी के मजबून शुरू करे लगलन। ना कइला से होखेवाला ना रहे। जीवन नोकरी से बरिआरी त ना करे सकेलन। नोकरी छोड़के करेवाला पेशा उनकरा लगे कुछियो नइखे। जीवन के खतिरा नायब सुब्बा के नोकरी त पूरा जिनगी बाटे।

एह कोठली के गन्थन आ समस्या से हमरा कौनो मतलब नइखे काहेकि ई ना त हमार विषय बाटे ना हमार सुझबुझ के भीतर पड़ता। हमरा त केवल वर्तमान जिनगी से वास्ता बाटे। एही प्रसंग में हमरा शाखा अधिकृत कृष्णगोपालजी से कुछ पुछेके उत्सकुता बढ़ गइल आ हम उनकरा से पुछनी - "कृष्णगोपालजी ! नोकरीवाला जिनगी रउआ कइसन लागता ?"

हमार प्रश्न सुनके ऊ गम्भीर हो गइलन। ऊ तुरन्त उत्तर ना देवे सकलन। फेर हमरा प्रश्न दोहरावेके कहलन। फेर जब हम प्रश्न दोहरइनी तब विचलित होके गम्भीर स्वर में कहलन - "रउआ बहुत कठिन प्रश्न कइले बानी।"

हम हँसके कहनी - "कौनो झन्झट बुझाता त कौनो बात नइखे, छोड़ दीं। हम त ए: कारण से जाने चहनी ह कि यदि अच्छा बाटे त हमहुँ नोकरी करेके प्रयास करीं कि ? आउर कौनो विशेष कारण नइखे।"

कृष्णगोपालजी बोललन - "हमरा त कौनो झंझट नइखे, मगर राउर तीन सकेण्ड के प्रश्न के हमार तीन घंटा के उत्तर बाटे। ओही से हम कहे में हिचकिचातानी। सरकारी उच्च पद में राउर कौनो नजदीक के नातेदार बाड़न तब त नोकरी करीं आ यदि नइखे त कुत्तो से बेसी दु:ख पाएब। हँ, दोसर उपाय इहो बाटे कि यदि रउआ तेल हर्दी घँसे में ओस्ताद बानी तबो ठीक बाटे।"

जीवन बीचे में बोललन - "सोझे कह दीं ना हाकिमसाहेब ! तीन 'च' अर्थात् चाकरी, चुगली आ चम्चागिरी ?"

जीवनद्वारा व्यक्त तीन 'च' के अर्थ सुनके हम ठठाके हँस देनी। तीनू जने हँसे लगनी। कोठली के वातावरणे आनन्दमय होखे लागल रहे। जीवन के मुँह पर गम्भीरता छा गइल। ऊ ओही ठेक्का से सम्बन्धित फाइल छाँटिआ रहल बाड़न। उनकर मुँह पर देखला के बाद हम सोचे लगनी कि कइसन परिस्थिति से जीवन गुजर रहल बाड़न। ऊ अइसन हजारो दिन बिता चुकल बाड़न। धन्य बाटे उनकर सहनशीलता आ सहिष्णुता। आदमी के मौका के प्रतीक्षा में केतना कष्ट सहेके पड़ता ? अभाव के दौड़ से गुजरेवाला घर में उनकरा का शान्ति भेंटत होई आ अनुचितता के कार्यतालिकामे चलेवाला कार्यालय में उनकरा केतना आराम मिलत होई ? तइयो ऊ नाखुश बाड़न अइसन कौनो संकेत नइखे लउकत काहेकि ऊ नेपाली बाड़न। गाँव आ शहर के हावापानी में सम्मिश्रित एक जीवन।

जीवन के फाइल लिखे खातिर बाध्य करेवाला हाकिम लोगनी के मनोवृत्ति के सम्बन्ध में खोजे आ जानेके उनकरा कौनो अधिकार नइखे। उनकर विवेक सरकारी राजश्व असी लाख देवेके नइखे चाहत तइयो ऊ विवश बाड़न। नहिओ चाहला पर उनकरा टिप्पणी लिखही के बाटे। दैनिक दस रोपेया खातिर उनकरा पूरा जीवन बेंचेके पड़ल बाटे।

जीवन फाइल में आपन काम समाप्त कके शाखाअधिकृत के टेबुल पर फाइल राखके कहलन - "लीं, अब उपर पेठाईं रउआ। हम त आपन नोकरी बचइनी।"

कृष्णगोपालजी फाइल उल्टावते कहलन -"एतना कइला के बाद अन्त:शुल्क भा कर कार्यालय में जाएके मिल जाई तब त नीमने बाटे।"

कृष्णगोपाल के आशावादी वाक्इसे सहमति जनावते जीवन कहलन - "कोशिश करीं, हाकिमसाहेब ! बदली होखेके कोशिश करीं कहतानी त रउआ करते नइखीं । रउआ बइठलेके देवे आई ?"

"इहे त ना भइल । का करीं जीवनजी ! कहला से थोड़े होला ? राउर-हमार केहु रहला पर ओह तरहे थोड़े एके जगे बइठल रहतीं स ? देखीं ना, हरिकान्त के नियुक्त भइला के बादे अन्तः शुल्क के डिस्टलरी शाखा में खटा देहल गइल । मोहर खुदे लगावेके जरूरतो नइखे आ घरेमें बइठले बइठले महिना के पचीसो हजार बुझावहु आवता । अइसन में ऊ एम. ए. पास करिहन त कौन आश्चर्य भइल ? अभी हाले फेर सप्तरी के मालपोत कार्यालय में बदली हो गइल बाटे । कुछियो ना होई तइयो बरीस के पाँच लाख त कमएबे करिहन । उनकरे स्तर के हमनीका एको साँझ ठीक से मांस खाएके त बाते छोड़ दीं असन के तरकारी तक खाएके इच्छा पूरा नइखे होत ?"

जीवन कहलन - "ऊ त हमनी के मन्त्रीजी के भगिना बाड़न, छोड़ दीं ! शिवबहादुर के बात करीं ना ! स्थानीय विकास विभाग में जब खरदार रहलन तब कइसन अवस्था रहे । फेर जिला कार्यालय में अस्थायी ना. सु. होइओके काम करत समय में त कौनो ओतना ठीक ना रहलन । जब इहाँ आके भन्सार में ६ महिना बइठलन, देखीं उनकर बिल्डिङ्ग ? अब ऊ काहे नोकरी करिहन । घरेके किराया से मात्र रउआ लेखा सातगो हाकिम बराबर के आम्दनी हो जाला । ओइसे त मसानघाटोके रखवारी में रहला पर पक्के मुर्दा भेंट जाता । देखत जाईं । हमनी लेखा मूर्खो के त पैर कहिओ रास्ता पर परवे करी ?"

कृष्णगोपाल आ जीवन के बीच हो रहल बातचीत पर हम कौनो प्रतिक्रिया ना देनी काहेकि अइसन बातचीत त ओकनी के दैनिक कार्यतालिका बन गइल बाटे ।

कृष्णबहादुर आपन ड्यूटी में सतर्क बाड़न । हाकिमसाहेब से चाय लेआवेके आदेश पा के तुरुन्त तीन कप गरम चाय टेबुल पर लेके आवता । चाय पीते कृष्णगोपाल कहलन् - जीवनजी ! हम आज जल्दीएः जाएब । तनि सस्ता डेरा बानेश्वर तरफ बाटे, उहे देखे जाएब । कोई पुछिहन त - "आँफिस के काम से गइल बाड़न कह देहम । हँ, ई फाइल सचिवजी के कोठली में पहुँचा दीं ।"

कृष्णगोपाल कोठली से बाहर निकल गइलन । कोठली में जीवन आ हम मात्र बानी । जीवन आपन विषय में हमरा से कुछियो कहे लेखा मुखाकृति बनाके फाइल के उल्टा-पल्टा रहल बाड़न । उनकरा कुछ बोले से पहिलही हमहीं पुछ देनी - "जीवन ! घर में बच्चा सब आ भउजी के आरामे बा नु ?"

"ठीके बाटे । बच्चा सब कभी स्वस्थ्य कभी अस्वस्थ्य, अइसने त होला ।"

"बच्चा सब के स्कूल में राखेके समय ना भइल ह का ?"

"समय त हो गइल बाटे, मगर .....!" फेर सम्हरके ऊ अगाड़ी बोललन -"आगे साल राखेके विचार कइले बानी ।"

जीवन अबो हमरा से आपन वास्तविक जीवन नुकावेके चाहता । एह नेपाली समाज के अइसने मनोवृत्ति बाटे । जेतना भी दुःख होखे, ना अगुताएके । इज्जत के डर, केहु आपन वास्तविकता ना जान पावे जइसन धारणा । अइसन कब तक ले चलत रही ?

जीवन हमरा सम्बन्ध में बहुतो प्रश्न पुछेलन । हम आपने ढंग से उत्तर देतानी । जीवन हमरा कहला से सन्तुष्ट ना होखेलन । विशेष कारण से हम जीवन से भेंटे आइल नइखीं । हमार उत्सुकता हमरा के खींचके लेआइल बाटे से हम ना कहे सकतानी । तइयो साथी भाई लोगन का विषय में बात शुरू हो गइला पर उनका शंका ना रहल । उनकरा के सचिवजी के इहाँ फाइल लेके जाएके बाटे । एही से संक्षेप में बात समाप्त कके हमरा के तनि ओतहें बइठेके कहके जीवन सचिवजी के इहाँ चल गइलन ।

कोठली में अकेले बानी । हमार आँख कृष्णबहादुर के खोजी में बाटे । कुछ देर में कृष्णबहादुर कोठली में आवेलन । हम उनकरा के रोकेके विचार से बातचीत करेके शुरू कर देनी आ कहनी - "कृष्णबहादुर जी ! रउआ बहुत अच्छा चाय बनाव तानी ।"

"का अच्छा रही ?" हमरा लगे आके लजाइल लेखा बोललन - "होटल लेखा थोड़े बनावेके जान तानी ? हाकिमसाहेब चाहे ठीक नइखे कहके गुस्सा करत रहेलन ।"

"ओइसन कहल त हाकिम लोगनी के आदते बाटे । सही में अच्छा बाटे ।" - हम कहनी ।

कृष्णबहादुर के मुँह पर खुशी छा गइल । ऊ हमरा से कुछ कहे आ पुछेके इच्छा से एने-ओने देखे लगलन । हम लगेके कुर्सी पर बइठेके आग्रह कइनी । कुर्सी तनि खीच के एगो कोना में धब्बदे बइठके कहलन - "हजुर आज दिनभर रह गइनी । फेर छोटा-बड़ा सब हाकिम के चिन्हले बानी । सबेरे त सुब्बासाहेब के मात्र खोजत रहनी ?"

हम आपन माथा हिला के उनकरा के सकारात्मक जबाब देत कहनी - "कृष्णबहादुर जी ! रउआ पचीस बरीस तकले एही कोठली में मात्र काम कइनी ?"

हमार प्रश्न सुनके ऊ हँसे लगलन । कुछ सम्हर के ऊ बोललन - 'इहे कोठली मात्र का रही ? ऊ कोठली में त मात्र तीन बरीस भइल बाटे । पिउने होके हम बहुतो अड्डा में काम कइले बानी । कुछ मन्त्रीओके कोठली में बइठनी । चारगो मन्त्रालय में अब तक काम कर चुकल बानी । अब केतना करेके बाटे, देखीं ?"

"राउर तलब केतना बाटे ?"

"शुरू में अस्थायी नोकरी कइनी, बाद में स्थायी भइला पर जम्मा भइल ग्रेड सब मिलाके अभीओ दू सय नइखे पहुँचल । चार बरीस बाद दू सय पहुँच जाई ।"

"घर कहाँ बाटे ?"

"दहचोक, इहाँ से कसके रउआलोगनी चलेम त तीन घंटा लागि, हमनीका दू घंटा लागता ।"

"एः ! ओतना दूर से सब दिन आवतानी ?"

"ना अइला से होई ? हमनीका हाकिम त नइखीं ?"

"काहे, हाकिम के ना आवेके पड़ता का ?"

"अइहन तबो उनकर खुशी, ना अइहन तबो उनकर खुशी । घर तक मोटर लेवे जाता तब त एगारे बजे से पहिले केहु ना आवेलन । फेर हाजरी कइला के बादे उनकर जागिर हो जाता ? छोट कर्मचारी के त 'छड्के' कइल जाता, उनकरा लोगनी के नानु कइल जाला ?"

कृष्णबहादुर के कहल मन के मोह लेवेवाला बात में हम खुदे विमोहित हो जातानी । पचीस बरीस तकले विभिन्न सरकारी कार्यालय आ

हाकिमलोगनी के बुझेवाला कृष्णबहादुर एकदमे भुक्तभोगी हो गइल बाड़न से हम अनुभव करतानी । उनकर बात में स्पष्टता बाटे । बहुत बुझ गइला के कारण ना ऊ धकमका ताडन ना उनका डरे रह गइल बाटे । शायद हाकिम के ना रहला पर ऊ अपना के स्वतन्त्र महशूस करेलन, इहो हो सकता ।

'कृष्णबहादुरजी ! रउआ तलब से खाएके पहुँच जाता ?" - हम मुख्य प्रश्न करतानी ।

हमरा ओरी घूमके कृष्णबहादुर बेमन से हँसते कहेलन - "रउआ सब बात बुझलोके बाद ई बात पुछतानी ? कृष्णबहादुर के अर्थ हमार अकेले पूर्ण शरीर मात्र त नइखे ? हमरा साथे हमार मेहरारू आ बेटा-बेटी सेहो त बाटे ? बल्कि एह से पुछीं ना कि राउर तलब से घर के नून तेल तक त चल जाला ?"

कृष्णबहादुर के तीक्ष्ण दिमाग देखके हम कुछ देर विचलित हो गइनी । हमार एक प्रश्न के अनेक उत्तर सुनके तुरुन्त हमरा में आउर प्रश्न करेके हिम्मत ना रह गइल । हम आश्चर्य से उनकर मुँह देखे लगनी । तब बातचीत के विषयवस्तु बदलके हम पुछनी - "एतना लम्बा अवधि तक रउआ नोकरी कइले बानी तब त नेपाल के बड़का-बड़का लोगोके त चिन्हले होखेम ?"

'कइसे ना चिन्हेब ? मन्त्री, सचिव, डाइरेक्टर, हाकिम बहुतोके चाकरी कइनी । कइसे ना चिन्हेब, निमन से चिन्हतानी ।" - कुछ देर चूप रहके फेर कृष्णबहादुर कहे लगलन - "हमनी गरीब खातिर केहु के चिन्हलो से कौनो काम नइखे होखेवाला । आपन दुःख आपने साथ बाटे । बहुत हाकिम लोगनी के रहस्य हमनीका मालूम बाटे । इहे उगिल देहब कि ? इहे सोचके आँफिस छोड़ला के बादो भेंट भइला पर - 'कृष्णबहादुर ! अबो नोकरी में बाड़ ? कहाँ बाड़ ? हँ, इ लऽ चाय पीहऽ' कहके एक रोपेया फेंक देवेलन ।"

ऊ फेर कहते जालन - "इहे हाँथ से केतना हाकिम लोगनी के स्वागत कइनी ? ठेकान नइखे । अड्डा के चालमाल बुझे खातिर शुरू-शुरू में 'कृष्णबहादुर' छोड़के हाकिम के मुँह से आउर कुछियो ना निकलेला मगर जब बुझके तनि ठीक हो जालन तब घंटी बजावेके बिसर गइला के बादो 'घन्टी नइख सुनत का ?' कहके उल्टे धमकावे लागेलन । ओकरा बाद त हमनीका उनका मन के बात बुझके काम करेके पड़ता ।"

"का रउआ हाकिमलोगनी के आँफिस के चालमाल बुझावेके पड़ता ?" - अनजान लेखा हम पुछनी।

"सब के थोड़े मालूम रहता ? दोसर बात, एगो हाकिम के कइल व्यवहार दोसरा के नइखे नुँ सुनावेके ? नयाँ हाकिम के त महिनो दिन तक हमनी के कहेके पड़ता। फाइल इहाँ बाटे। फलाना के घर इहाँ बाटे। फलाना फलाना से हे तरे भेंट करता। पहिलेके हाकिम से सम्पर्क रहल व्यक्ति ई-ई बाड़न। अइसने त बाटे नुँ ? ना अघइलातक आदमी के व्यवहार दोसर होला आ अघा गइला पर दोसरे हो जाला ?"

भाग्य के दोष देके मन बुझावेवाला कृष्णबहादुर आपन काम से ओतना असन्तुष्ट ना लउकेलन। केहु पइसा कमाके अत्यन्त धनीक होगइलो पर भी उनकरा कौनो ईर्ष्या नइखे। काम अनुसार तलब नाहिओ भइला पर असन्तुष्टि व्यक्त कइला के बादो उनकरा लगे पूर्ति करेके उपाय शून्य बाटे। तइयो ऊ सन्तुष्टे लउकेलन। एकरा के हमार नेपाली समाज के गुण कहीं भा दोष ?

कृष्णबहादुर के कौन कार्यालय में केतना कमाई होला से मालूम नइखे, तइयो कौन हाकिम केतना कमइलन से निश्चित रूप से उनकरा मालूम बाटे। हाकिम लोगन के पुरना घर भा डेरा उनकरा मालूम बाटे। एकरा अलावे नयाँ घर के धपधपाएवाला कोठलीओ ऊ गन्ती करलेले बाड़न। हाकिम होखे में दैवी शक्ति के आवश्यकता होला कहे में ऊ पूर्ण विश्वस्त बाड़न। एही से आपन प्रत्येक हाकिम के ईश्वरीय शक्ति के रूप में ऊ मानत आइल बाड़न। उनकरा कभी-कभार साधारण रोग के सतावत समय में हाकिम के डाँट पर रोग के भागल एक दूगो घटना ऊ हमरा के सुनइलन। पन्द्रह दिन तक ले एको दाना अन्न मुँह में ना रखलो पर दैनिक चार घण्टा घोड़ा लेखा दौड़के आँफिस आके नोकरी बँचाके राखेके घटना ऊ बतावेलन। बेटी के बिआह में रोपेया के अभाव भइला पर भोगल दुःख आ बेटी के घर ना भइला से अपने घर में राखल जइसन दुःखपूर्ण घटना से दुःखी कृष्णबहादुर मिल गइला पर हाकिमी पदो चला सकेलन जइसन बातो हमरा के सुनावेलन।

पिउन स्तर के कृष्णबहादुर के अपना अनुभव के आधार पर हाकिमो चलावेके दावी कइला पर हम आश्चर्य में पड़ जा तानी। उनकर हैसियत साधारण बाटे। "बात करेके, साधारण नेपाली लेखापढ़ी करेके आ सहीछापे त

करेके बाटे ? मुख्य काम खरदार आ सुब्बा कर देवेलन। बाँकी रह गइल सहीछाप ?" ऊ सिलसिला में ऊ फेर कहलन - "जिम्मेवारी त केहु के नइखे ? काम बिगड़ गइल तब 'उपर के आदेश रहे' कहके पछुआ देवेलन। कहाँ उपर ? केतना उपर ? उपर के त ठेकाने नइखे ? एतना कहके फुर्सत पावेवाला हाकिम हमहुँ देखले बानी। कहीं त ! ओइसने कह देला से हम हाकिमी ना चलावे सकेम का ?"

कृष्णबहादुर तनि होश कके बोललन -"ओइसे त हमरा लेखे ई बात 'आकाश के फल आँख तरेड़के मर' कहल जइसन बाटे। हमार त जाते पिउन बाटे। बाबु-माइ जन्मावे बखत जौनो कौनो जात दिहलन तबभी परीस्थिति हमार जात कायम कर देले बाटे। पचीसो बरीस तक त कृष्णबहादुर पिउन कहइनी, तब अब केतना बरीस बाँचेके बाटे जेकरा कारण एकरा से अपना के अपमानित समझीं। ओहु पर हमनी के शास्त्र में लिखल बाटे - 'जे आपन लगे बाटे ओकर उपेक्षा ना करीं।"

कृष्णबहादुर के बातो ना समाप्त भइल रहे कि जीवन आ गइलन। ऊ बहुत खुशी मन से आपन टेबुल ओरी बढ़ते कहलन - "देखीं ना, सचिवजी के इहाँ क्यू में रहके भीतर जाएके पड़ता, ओही से अबेर हो गइल।"

जीवन खुशी बाड़न। सबेरे के तुलना में अभी आनन्दित लउकताड़न। विशेष बात ना होके जीवन में एतना परिवर्तन नहीएः आइल होई । वर्षो से सुख्खल जीवन में आशा के कली लाग गइल लेखा बाटे। उनकर चेहरा देखके हम सहजे बुझे सकतानी जे सचिव उनकरा से खुशी हो गइल बाड़न। हम उनकरा से पुछनी - "राउर काम से राउर हाकिम खुशी भइलन ह का ?"

हमार बात सुनके जीवन अकचका गइलन। ठोढ़ कँपकँपावत आश्चर्यित होके कहलन - "कइसे बुझ गइनी ?"

हम हँसके कहनी - "कौन लमहर बात बाटे ? बल्कि कहीं ना, का भइल ह ?"

कृष्णबहादुर के बाहर जाएके संकेत कके जीवन लम्बा साँस लेलन आ कहे लगलन - "सचिवजी के त आज के लेखा 'मूड' हम जिनगीभर ना देखले रहनी। गइला के बादे हम फाइल के विवरण सुनइनी, धर्रा में राख

देवेके कहलन, रख देनी । टेबुल के कात में आदेश खातिर खड़ा हो गइनी । सचिवजी कहलन - "शुरू से तू मन्त्रालय में बाड़ ? हमरा के 'हजूर' ना कहे से पहिले ही पुछ देलन - "कौन कार्यालय में जाएके विचार कइले बाड़ ?" एकाएक ओइसन बात सुनके हमार सम्पूर्ण शरीर काँपे लागल । कहेके चाहतानी, कहले नइखे जात । कुछियो ना कहके दुनू हाँथ जोड़के निहुरले रहनी ।"

सचिवजी के कोठली में भइल घटना हमरा के बतावत समय में अभी भी हम उनकर शरीर काँपते लेखा देख रहल बानी । उनकर चेहरा लाल हो गइल बाटे । अइसन बुझाता जइसे ऊ सचिवे के कोठली में बाड़न । कहते-कहते उनकर बोलिएः नइखे फुटत । ऊ कुछियो ना कहे सकल बाड़न तइयो उनकर बदलल चेहरा देखके उनकरा से हम आगे पुछनी - "तब का भइल जीवन ?"

जीवन खुदे सम्हरत कहलन - "हँ ! सचिवजी हमरा के 'मूर्ख !' कहके सम्बोधन कइलन । हम तबो कुछियो ना बोलनी । 'देख, तोरा के मात्र हम ई चुनेके मौका देले बानी' कहलन । हमार दिमाग में ज्वारभाटा उत्पन्न हो गइल । कहाँ अच्छा, कहाँ खराब ? हम छाँटिआवे ना सकनी । खुद बइठल जगे के अलावा सब जगे अच्छा देखते बानी । जिनगी में पहिल बेर मिलल मौका, नीमने जगे कहेके पड़ल । मगर ऊ निमन जगे हमरा मस्तिष्कमे ना आइल । हमरा मुहँ से केवल एतना मात्र निकलल -'बहुत दुःख पइले बानी, जहाँ आज्ञा होई, ओतहें जाएब ।' सचिवजी से आदेश भइल - 'कर में जइब ? हो गइल, मारवाड़ी से साँठगाँठ तू ना मिलावे सकब ?' हमार करेजा धकधक करे लागल । आगे में आइल एगो कार्यालय के मौको क्षणे में चल गइल । हमरा दिमाग में आइल कहीं रसुवा के माल कार्यालय में त ना खटादिहन ? आपन होश सम्हार के कहनी - "भन्सार में गइला से ठीक होईत कि ?" हमार बात सुनके सचिवजी हँसके कहलन पहिले काहे ना कहले मूर्ख ? कहेके त कह देनीं, फेर हमरा दोसर फिकिर लाग गइल - कहीं उत्तर तरफ के भन्सार में पेठा दिहन तबो ई मौका चल जाई । कइसे आपन इच्छा प्रकट करीं इहे दुविधा में रहीं । फेर सचिवजी से आदेश भइल - 'छोटी भन्सार जइब कि ?' लक्ष्य त हमार प्राप्त भइल, जेकरा प्रतीक्षा में हम दस बरीस से दुःख के जीवन काटत रहनी । सुनके हम आनन्द के साँस लेनी । ओही प्रस्ताव के 'होई' कहेके मात्र लागल रहीं कि हमरा नजर में रामकृष्ण के

स्टैण्डर घूमे लागल । ओकर बेटा-बेटी के प्रसन्न मुँह से स्कूल बस के प्रतीक्षा करेके बात मन में आ गइल । आपन इच्छा व्यक्त करेके दृढ निश्चय कके एक डेड पछाड़ी हटके हाँथ जोड़के कहनी - 'दयादृष्टि बाटे त एयरपोर्ट भन्सार में भइला से होई ।' हमार बात खतम होते सचिवजी कहलन - 'उहवाँ जाएके त कहतार, चलन मालूम बा ?' यथार्थ में बात ना बुझलो पर सारांश में बात बुझ गइनी । एही से गर्दन हिलाके सहमति जनइनी । उनकर आदेश भइल - "काल्हे शिवनाथ के हम कहले बानी कहके टिप्पणी लेआवेके कह दिह ।" खुशी से हमार पैर ना रुकल । पछाड़ी हट के हम बाहर निकल गइनी ।

एतना सुनइला के बाद उनकर शरीर के कँपकँपी कम होत गइल । ऊ बहुत खुश लउकलन । ऊ आपन कमजोरी त ना बतइले रहतन यदि हम ओह बेरा इहाँ ना रहतीं त । जीवन का विषय में ओह से जादे जानेके जरूरी ना समझनी । अब कौनो प्रश्न करेके पक्ष में हम नइखीं । केवल उनकर खुशी में साथ देत हम कहनी - "बहुत निमन भइल आज । अब कुछ दिन के बाद त एयरपोर्टे ओरी भेंट होई । ना ?"

'बहुते ना, बहुत-बहुत निमन भइल ।' - जीवन तुरन्ते कहलन । "रउआ मालूमे नइखे हमार दुःख के दिन सब के सम्बन्ध में । अब भगवान दीहन त कुछे महिना में घरबार बना लेहम ।"

जीवन आपन अतीत में कइल मूर्खतापूर्ण बात के आगे बतावे लगलन - "देखीं न, जौना फाइल में हम कुछियो ना लिखे चाहत रहीं इहे फाइल हमार जिनगी बदल देलक । हम आज तक ले इहे ना कके दुःख पावत रहनी । नोकरी कइला पर सुझबुझ के बिसर के आज्ञापालन कइल जरूरी रहता ।"

जीवन आपन सुखमय भविष्य के सम्बन्ध में हमरा के बहुत कुछ सुनइलन । दोसर डर के बातो बतइलन, ओतहाँ बेसी निगरानीओ होत रहेला कादोनि ! भइलो पर सब के त इहे चाहीं नुँ ! आ से हो गइला पर केहु कुछियो ना करे सकी ओहु में ऊ विश्वस्त बाड़न ।

बहुत समय हो गइला के कारण हम जीवन से बिदा लेके जाएके चाहतानी । ऊ हमरा के बात में ओझरावे लगलन । अन्त में जीवन हमरा के एक कप चाय पिअइला के बादे बिदा करेके तेयार होता । उनकर अनुरोध

हम ना काट सकतानी । जीवन के कहला पर कृष्णबहादुर चाय बनावे चल जाता ।

रात के दस बज गइल बाटे । नीन नइखे परल । बिछौना पर पूरे देह छितराके सुतल बानी । हमरा आँख के चारु ओरी जीवन के घर के घटना से लेके कार्यालय के स्थिति आ बाद में सचिव के आश्वासन के बाद जीवन में आइल परिवर्तन एक-एक कके, आवे लागता । शिवनाथ आ कृष्णगोपाल जइसन जिम्मेवार लोगन के चित्तवृत्ति सम्बन्ध में सोचला के बाद हम खुदे डेरा गइनी । हमार शरीर आरामरहित हो गइल बाटे । घन्टों तक कृष्णबहादुर के सम्बन्ध में सोचला के बाद फेर जीवन हमार मस्तिष्कमे घूमे लागता । हमार मनस्थिति असन्तुलित होते चल जाता ।

✠✠✠

सोमार के दिन

एही देश लेखा हमरो घर प्रत्येक दिन अभावे से सतावल गइल बाटे । प्रत्येक दिन मेहरारू के कचकच हमरा सुनही के पड़ता । कभी नून नइखे, कभी तेल नइखे, कभी जरना नइखे त कभी चाउरे नइखे ? महिनाभर के सामान पूर्ण रूप से खरीदके रख दीं से चाहिओके ना होला । बाजार में सब दिन सब कुछ नइखे मिलत । प्रत्येक दिन मूल्यपरिवर्तन के सरकारी घोषणा से आपन बजेट असन्तुलित हो जाता । कौनो चीज कम अनला के बादो ओही से मिलाके चलाएब से ना कके अभाव के घोषणा ना होखे तकले हमार मेहरारू बाजार में अभाव बाटे, से पतिआते नइखीं ? हम घर नइखीं देखत, घर के आवश्यकता ओरी ध्यान नइखीं देत एतने उनकर कहब हमरा प्रति रहता ।

आज भोरे हम सुननी 'चीनी नइखे' हम मनेमने विचार कइनी, 'जे सुनेके चाहत रहे, सुननी ।' परसुए: डिल्लीबजार में एक घंटा क्यू में खड़िआके आधा के.जी. चीनी अनले रहीं, आज खतम हो गइल सुनके कौनो आश्चर्यो नइखे लागल । दोसर बात पूरे देश में नइखे कहल सामान हमरो घर में नइखे । काथी के आश्चर्य ? एही दू हप्ता में चीनी के मूल्य दू बेर बढ़ गइल बाटे । पहिल बेर दस प्रतिशत बढ़ल रहे त दोसर बेर पैंतालीस प्रतिशत बढ़ गइल बाटे । हमार छोट बुद्धि इहे कहता कि एतना मूल्य बढ़ गइला के बादो ई अभाव काहे हो रहल बाटे ?

अभाव के कारण से मूल्यवृद्धि कइल गइल बाटे से बात सरकारी घोषणा में उल्लेख नइखे कइल गइल । बल्कि सब ओरी चीनी उपलब्ध करावल गइल समाचार लटका के राखल बाटे । तब घर में रहेवाली हमार मेहरारू कइसे विश्वास करी कि चीनी नइखे भेंटत ? उनकरा ई मालूम नइखे । इहवाँ वास्तविकता एगो होला आ समाचार दोसरे होला । हम उनकरा से ना बहस करे सकतानी आ ना उनकरा के समझावे सकतानी । काहेकि उनकरा लगे प्रमाण बाटे, हमरा लगे नइखे । एही से अभाव के श्रृंखला तोड़के अभावपूर्ति करेके बाटे ।

बानेश्वर के प्रत्येक दोकान में पइसके देख लेनी । दोकानदार सब के नकारात्मक रूप में मुड़ी हिलइला के कारण हमार डेड आगे बढ़ते जाता । घट्टेकुलो के शुरू के दोकान से देखते गइनी । केहु हमरा के देखके हँसता, केहु तमसा के 'नइखे' कहता । केहु के हमरा पुछलो पर उत्तर में मुड़ी हिलावे तक के मन नइखे । घर खातिर चीनी उपलब्ध करावेके जिम्मा लेके चलल हम कौनो दोकान में बिना पुछले ना रहनी । हम पुछते जा रहल बानी । एकाएक हमार आँख के आगे बड़का-बड़का अक्षर में लिखल लाल बोर्ड - "इहाँ साल्ट ट्रेडिङ्ग लिमिटेड से उपलब्ध करावल चीनी आ नून बिक्री होला, चीनी मूल्य ..... केजी, नून मूल्य रु..... के.जी. ।" देखाता । मूल्य लिखेवाला जगह पर सफेद कागज साटल बाटे । खुशी के लमहर साँस लेके खड़ा हो गइनी आ जेबी से रोपेया टटोलके सोचनीं, नूनो ले गइला से निमने रही । आपन हाँथ के झोरा आगे बढ़ाके दू के.जी. चीनी आ चार के.जी. नून देवेके दोकानदार से अनुरोध कइनी ।

दोकानदार हमरा के नीचा से ऊपर तक देखके खिसिआके कहलक - "रउआ मालूम नइखे, चीनी नइखे कहतानी ?"

कुछ देर त हम ओकर बाते ना बुझनी । जब बुझ गइनी तब हम कहनी - "रउआ दोकान में त हम अबे आवतानी तब कइसे मालूम होखी कि रउआ इहाँ नइखे ?"

दोकानदार के फतफताहट में हमरा विश्वास ना भइल । लगे में रहल छोटका स्टुल पर बइठके हम कहनी - "ऊ उपर जौन बोर्ड टाङल बाटे ओ पर 'नइखे' कहके लिखल त नइखे । हमरा के का मालूम ? हम त बोर्ड देखनी आ राउर दोकान भीतर पइसनी ह ।"

दोकानदार कौनो उत्तर देवे खातिर ईच्छुक ना लउकलन । इहो हो सकता कि भोरे से हमरा लेखा बहुतो गहँकी के कहत-कहत थाक गइल होइहन, सेहे हम अनुमान कइनी । हमहुँ त कतेको दोकान पार कके इहाँ आइल बानी । हम उनकरा के कइसे समझाई ? कुछ देर के चुप्पी के बाद सौम्य तरीका से दोकानदार कहलन - "आजे मात्र चीनी थोड़े नइखे ? केतना दिन हो गइल ? रउआ लोगनी बुझते नइखीं । बोर्ड के बात करतानी रउआ ? ई हमनीका इच्छा से नइखे नुँ टाङल ? ई त साल्ट ट्रेडिङ्ग खुदे आपन काम देखावे खतिरा जगह-जगह पर हमरा लेखा बहुतो दोकान पर टाङ देले बाटे । हमनीका ओकर डीलर नइखीं से नइखीं कहत, पक्के बानी सन । ओही अनुसार हमनी के बिक्री खातिर चीनी उपलब्ध करावेके चाहीं कि ना ? कहीं त ? का कहीं ? ओकनी के कोठली भीतर घुमेवाला कुर्सी पर बाड़न । हमनीका गहँकी का साथे कटु व्यवहार करेके पड़ता ?"

"साँचे चीनी नइखे ?" - हम विश्वस्त होखेके चाहतानी ।

"नइखे, रहला से त हमनीएके नु फायदा होई । नइखे त का करीं ?"

"कौना कारण से ई अभाव भइल बाटे ?"

"का कहीं, कारण त हमनीओ के कहाँ मालूम होता ? अभी मूल्य बढ़ला पर त मिलेके चाहत रहे । परसवें आँफिस में गइला पर मिली, रोपेया बुझाके जाईं कहलन त बीस बोरा के रोपेया बुझाके आइल रहनी ह । रोजो साल्ट ट्रेडिङ्ग के एक बेर चक्कर लगइलो पर नइखे मिलत । आज से एक एक बोरा कके डीलर सब के खाली ना होखेके ढंग से दीहन सेहो सुननी ह । इहे एको बोरा मिलला पर एक पाव, दू पाव कके आइल लोगन के दे सकेम तबो नीमने होई ।"

हम तुरत्ते कहनी - "साहुजी ! तब त साँझ के इहाँ अइला पर आधा के. जी. त हम पा लेहम् ?"

ऊ कठहँसी करत कहलन - "का विश्वास बाटे अइसन कर्मचारी लोगन के बात के ? रउआ कहीं, आज दस दिन से रोपेया जम्मा करवाके त आज तक ले नइखन देले ? अबो एक बोरा दीहन से कइसे विश्वास करीं ? हम त ई निगम का कर्मचारी लोगन से तंग आ गइल बानी । ऊ लोग व्यापारी रहतन तब नु व्यापार के विषय में बुझतन ? कागतपत्र के लेखापढ़ी जनले से आदमी व्यापारी हो जाइत, तब त सभे पढ़ल लोग व्यापारे करतन,

धन कमईतन, टाटा आ बिड़ला बनतन। ई नेपाल में त के का करे सकता ? के का नइखे कर सकत ? एही बात के ठेकान नइखे। एतहाँ केकरो कुछियो कइला से होला। विचार करीं त ! हमरा कहेके अर्थ ई बाटे जे जौन व्यापार निगम सब के जिम्मा दीहल गइल बाटे, का ऊ सफल बाटे ?"

दोकानदार के व्यक्त कइल ऊ विचारप्रति हम आकृष्ट भइनी। हमार मुँह देखके ऊ बात आगे बढ़ा रहल बाड़न। ऊ कहे लगलन - "एः ! चीनी के अभाव के कारण डिजेल बाटे कादोनि ? कहीं त, डिजला के त एही हप्ता में भाव बढ़ गइल बाटे ? ई निगम सब के काम जनता के ठगही के बात बाटे त ? विश्वासे ना होखेवाला तर्क देवेलन। डिजेल के अभाव के कारण त्रिभुवन राजपथ बन्द भइल कहला पर विश्वास कइल जा सकता, से बन्द ना भइल बाटे ? ओकरा अलावा दोसर एक संस्थान के रोपवे सेहो त चलता ? सारांश में इहे बाटे कि यदि व्यापारी व्यापार कइले रहतन तब जइसे भी इज्जत बँचावे खातिर कइसनो परिस्थिति के सामना कके सामान उपलब्ध करइतन ? ई त पड़ल बाटे कर्मचारी के हाँथ में ? अइसन अभाव भइला पर आउर ओकनी के भाव बढ़जाता ? छोट-छोट व्यापारी चाकरी करे जाता, बड़का व्यापारी होटल में निमन्त्रण देता ? महेरारु, बेटा-बेटी आ नातेदार तक के पैरवी शुरू हो जाता ? तब, अइसन अभावो ना रहला पर अभाव हो जाता ?"

ऊ कहते-कहते एकाएक रुक जालन आ हाँथ के ईशारा से हमरा के सचेत करावेलन। सड़क के ओह पार फुटपाथ पर जा रहल एक अधबैस आदमी के देखाके ऊ चट्टदे कहेलन - "ओह आदमी के चिन्हतानी ?"

दोकानदार के बात पर केन्द्रित रहेके कारण हम फुटपाथ तरफ तुरत्ते ना देखे सकतानी। हम बिलमके फेर पुछतानी - "केकरा के कहतानी ? केकरा के कहतानी ?

"अरे ! ऊ मोट-मोट नइखन ?"

"एः ! ना, हम नइखी चिन्हत ?"

"ओइसन आदमी के रउआ नइखीं चिन्हत ?"

"ओह आदमी के हम कबहु देखलहीं नइखीं।"

"राउर घर कहाँ बाटे ?"

"घर त एतहें काठमाण्डू में बाटे।"

"तब त रउआ उनका के चिन्हहीके चाहीं।"

"पाँच लाख जनसंख्यावाला शहर में सब के सब थोड़े चिन्हे सकेला का ? सम्पर्क सम्बन्ध जेकरा से बाटे ओकरा के मात्र चिन्हल जाता।"

"खैर, ना चिन्हल भी हो सकेला।" उनकरा विश्वास पर ठेस लागल होई एह से लम्बा साँस लेके आपन मुखाकृति बदल के कहलन - "ठीके बाटे। रउओके त हम नइखी चिन्हले।"

ऊ चूप हो जालन। बात के सिलसिला बदल गइल बाटे। ओ आदमी के विषय में हमरा जानेके उत्सुकता पैदा हो गइल। पक्के ऊ विशेष आदमी हो सकेलन। हम धीरे से दोकानदार तरफ देखकें पुछनी - "ऊ के बाड़न ?"

ऊ एकदम साधारण ढंग से कहलन - "इहे खाद्य संस्थान के हाकिम त बाड़न !"

"तब काहे मोटर बिना पैदले चल रहल बाड़न ?"

"सेवानिवृत्त हो गइल बाड़न। नोकरी में रहला पर कहाँ देख सकत रहीं ?" उनकर चाकरीदारो के भेंटल मुश्किल रहे। अब जनता से घुलेमिले खतिरा फुटपाथ पर चलेके शुरू कइले होइहन। कौनो कमी से थोड़े पैदल चलल होइहन ? निगम सब में अइसने-अइसने व्यक्ति के भइला से त बाजार अइसन स्थिति में पहुँच गइल बाटे : अब देखीं, संस्थान के घाटा करइलन, जनता के मारलन आ ओकनीका छाती फुलाके, नाक खड़ा कके निर्धक्क होके चल रहल बाड़न। लाज त तनिको नइखे। हमनीका देखतानी त लाज लागता।"

हमरा कुछ महिना अगाड़ी के 'गोरखापत्र' के समाचार इयाद हो जाता। ओही समाचार के सम्बन्ध में हम कहनी - "साहुजी ! खाद्य संस्थान दूषित तेल बेंचेके अभियोग में कुछ व्यक्ति के उपर सरकारी स्तर से कारवाई चलइले रहे से समाचार हमहुँ कुछ महिना अगाड़ी पढ़ले रहनी। इहे संस्थान नु बाटे ?"

'हँ, इहे संस्थान। हँ तेल के बात कहनी ह, इहो दूषित तेल त जनता ना खाएः पइलक।"

पचास-पचपन्न उमीर के ई दोकानदार स्पष्ट देखेलन। हमरा से निसंकोच होके आपन विचार सब व्यक्त कर रहल बाड़न। शायद अभी मन में खुशी महशूस कइले बाड़न। उनकरा फुर्सत बाटे, काहेकि दिन के एगारह बज गइल बाटे।

हमार उत्सुकतावाला ओ व्यक्ति के सम्बन्ध में बात शुरू कइलन - "ऊ पहिलेवाला व्यक्ति के विषय में त बाते ना भइल रहे।"

"अरे, का बात करीं ओइसन अत्याचारी लोगन के ? हम त रउओ चिन्हले होखेम समझके देखा देले रहनी। ओइसन लोगन के इयाद अइला पर त हमार दिमागे में हलचल मच जाता, खून खउले लागता। ऊ देश आ जनता के खून चुसेवाला लोगन के त भोथका खुकुरी से टुकड़ा-टुकड़ा कके चौबट्टी पर पहुँचा देवेके मन करता, मगर का करीं ? अपना लगे शक्ति नइखे। कुछ करेम, खुदे पागल हो जाएम। तब का करीं ? इहे असन्तोष व्यक्त करेके अतिरिक्त आउर कौनो उपाय नइखे ?"

उमीर से बूढ देखला के बादो उनकर जोश से भरल बात अबो कुछ करे खातिर घचघचावेके मानवीय शक्ति हम स्पष्ट रूप से उनकरा में देख रहल बानी। दोकान खाली उनकर पेशा बाटे जइसन हम बुझनी। भावना के देखला पर अबो मौका पइला पर कुछ करेके उनकरा में जोश बाटे। ऊ जे कह रहल बाड़न, ओ में उनकर स्वार्थ नइखे।

जब तक ले हम उहवाँ रहनी दसो आदमी चीनी के खोज में अइलन आ निराश होके चल गइलन। केहु कहलन - "भोटाहिटी में चीनी दे रहल बाटे, उहवें जाएके पड़ल।" हम सोचनी, आदमी खातिर चीनी काहे एतना महत्वपूर्ण हो गइल बाटे ? चीनी के बिना आदमी बाँचिएः ना सकी का ? काहे अइसे समय बरबाद कके दउर रहल बाटे ? एकर उत्तर त खुदे हम बानी। हमरो त समय बरबाद हो रहल बाटे। यही सन्दर्भ में हम बात उठइनी -"चीनी के माग पूरा ना कइला पर सरकार स्पष्ट रूप से काहे घोषणा नइखे करत ? ना कह देला पर आदमी त उपाय खोजीएः ली नुँ ! कि ना ?"

"राउर विचार सोरहो आना ठीक बाटे। अइसने सरकारी नीति के कारण त दुनियाँ दुःख भोग रहल बाटे : जौन चीज नइखे, ओकर विकल्प आदमी तुरन्ते खोज लेता। ई आदमी के गुण बाटे। इहवाँ त जनता के

दुविधा में राखके लुटेके बाटे। तब काहे ओइसे करी ? रउआ मालूम बा ? चौबीस घण्टा तक कृत्रिम अभाव देखावे में सफल हो गइला पर काठमाण्डू शहर में मात्र प्रत्येक वस्तु पर पांचो लाख उपभोक्ता के शोषण कइल जाला ? अइसने कइला से त कर्मचारी आ बड़का-बड़का व्यापारी रातोरात मालामाल हो जाता। हँ, सुनी ! रुउआ आश्चर्य लागी - कुछ दिन पहिले चीनी के भाव बढ़ला पर ओकर व्यापारी पहिला बेर में सात लाख रोपेया आ दोसर बेर में बीस लाख रोपेया नाफा कमाइल रहे। ओकरा के के देखीं ? बाजार में चीनी के अभाव बाटे। चीनी खाएवाला चीनी खाएके छोड़ दी अइसन त हमरा नइखे लागत ? रउआ चीनी के जरूरत बाटे त रउआ त दू-तीन रोपेया के मात्र फरक परी नुँ, की नइखे ?"

मुड़ हिला के हम उनकर विचार में सहमति जनावतानी। ऊ कहते रहलन -"एः देश के कर्मचारी भइला से पहुँच जाई। शासन चलावेवाला कर्मचारी, उद्योग करेवाला कर्मचारी, ठेक्कापट्टा लेवेवाला कर्मचारी, व्यापार करेवाला कर्मचारी। ई सब त कर्मचारीएः त चला रहल बाटे ? रउआ कहे सकतानी, इहवाँ कौन अइसन महत्वपूर्ण बात नइखे जे कर्मचारी ना चला रहल होखे ?"

"तश्करी।" - हम आपन समझ से तुरुन्त कहनी।

"उहो कर्मचारी के सहयोग बिना चलता से बुझतानी का ?"

उनकर प्रश्न के उत्तर हमरा लगे नइखे। उनकरा में आउर हमरा से बात करेके उत्साह बढ़ रहल बाटे। ऊ कहेलन -"ई चाउर के भाव घटेके समय बाटे, मगर भाव दिन प्रति दिन बढ़ले जा रहल बाटे। एही रूप से चाउर के भाव बढ़त जाई तब वर्षात तक ले एतना बढ़ जाई कि सीमित आयवाला व्यक्ति चाउरे खाइल बाध्य होके छोड़ दी। सागपात आ दाल के देखीं, पञ्च साल से दोब्बर हो गइल। कौनो चीज बेंचे लायक ना रह गइल बाटे। हम त छोट व्यापारी बानी। जौन रेट में खरीद करेके पड़ता, ओही अनुसार मुनाफा राखके बेंचेके पड़ता। हमरा मन में सन्तोष नइखे। सन्तोष नाहिओ रहला पर पेशो ना छोड़ सकतानी। ई हमार मात्र नइखे, हमनी के कमजोरी बाटे।"

हम धीरे से पुछनी-"रउआ दोकान करत केतना समय हो गइल ?"

"इहे पाँच बरीस भइल।"

"ओ से पहिले का करत रहनी ?"

"नोकरी में रहनी, महालेखा परीक्षक के कार्यालय में । शुरू में नोकरी त कुमारीचोकमे छोटे पद में कइले रहनी ।"

"बहुत पहिले ?"

"पद्म शमशेर के समय में । जीवन के बहुत लम्बा समय नोकरी में बितइनी । पेन्सन पाक गइल रहे, राजीनामा देके निकल गइनी ।"

"एः !"

"राजीनामा करेके सेहो विशेष कारण बाटे । आपन स्वभाव लटर-पटर में ना लागेके रहे, उहवाँ नियमित कुछियो ना रहे । राजश्व छोड़ेके मन ना मानत रहें । पकडीं त नीचावाला के, ऊपरवाला के आँख से देखलो पर सुखले बइठल रहेके पड़त रहे । ध्यान देके कइला पर एतना बेरुजु पकडल जा सकत रहे, जे सयो बरीस में भी फरछावल ना जा सकत रहे । ओइसन ना करेके स्थिति में राजश्व में घाटा पहुँचाके तलब खाइल उचित ना समझनी । हम छोड़ देनी । नोकरी छोड़ला के बाद कुछियो काम ना कके कइसे बइठीं, से सोचनी । काम के खोज में उद्योग विभाग में दउरे लगनी । नोकरी छोड़ला पर जेतना रोपेया मिलल रहे, ओही से काम करेके रहे । उपयुक्त उद्योग खोलेके स्वीकृति मङला पर 'ई त बन्द बाटे' जानकारी दीहल गइल । मन अनुसार के उद्योग खोलला पर नेपाल में बजारे ना रहे । जेकर बाजार रहे, से बड़का-बड़का सब हाप लेले रहे । एक जनेके कौनो उद्योग खोलेके स्वीकृति मिल गइला के बाद ओजगे ओइसने दोसर उद्योग के स्वीकृति ना देवेके सरकारी नीति के कारण वर्षो तक ले दउरला के बादो उद्योग खोले में सफल ना होखे सकनी । अन्त में इहे दोकानदारी के शरण लेवेके पड़ल ।"

कुछे समय के बइठकी में दोकानदार आ हमरा बीच में घनिष्टता कायम हो गइल । ई उनकरे स्पष्टता के कारण भइल । दोकानदार के पहिले हम जौना दृष्टि से देखले रहीं, से दृष्टि ना रहल । अभी उनकरो प्रति श्रद्धा हो गइल । बिहने से ओ रस्ता से चलत बेर मुँह ना घुमावेके परे इहे सोचके उनकर नाम पुछनी । अपनो परिचय देनी ।

रत्नबहादुर जइसन परिपक्व आ भलादमी दोकानदार काठमाण्डू में कमे होई । उनकरा में व्यापारी मनोवृत्ति के अभाव देखनी । उनकर बात से

बाजार के आउर धूर्त व्यापारी के तुलना में उनकर अलगे व्यक्तित्व बाटे से अनुभव भइल । अइसने व्यापारी बजारभर हो जाई तब त बाजार साँचे में 'आदर्श बजार' हो सकत रहे ।

बाजार में बढ़ते गइल महँगी के रोकेके उपाय के सम्बन्ध में पुछल हमार प्रश्न के उत्तर में ऊ कहलन -"ई महँगी प्रशासनिक कमजोरी के कारण हो गइल बाटे । साथे सरकारी नीतिओ एकरा के प्रभावित कइले बाटे । बाजार नियन्त्रण करेके पूरा अधिकार भइलो पर प्रशासन मौन रहता । एगो कठिनाई प्रशासन के हो सकता आ ऊ बाटे निगम आ संस्थान सब के मनमानी मूल्य निर्धारण । ओकरा बाहेक के आउर सामान सब सेहो बाटे जे खुला बाजार में मनमानी भाव में बिकारहल बाटे । ओकरो त देखल जा सकता । विचार करीं त, दोबर मूल्य लेके बाजार में माल बेंच रहल बाटे । विदेशी सामान विक्री करेवाला दोकान में रउआ जाएके हिम्मते ना होई । उहवाँ त मनपरी दाम बाटे । उहाँ के एगो नमूना सुन लीं । जौन इलेक्ट्रोनिक घड़ी आजकल एकसय पचास में मिलता, इहे घड़ी ओ बाजार में आठ सय पचास तक में बिकाइल रहे । कहीं त, आज एकसय पचास में बेंचलो पर पक्के मुनाफा में बेंच रहल बाड़न तब आठ सय पचास के भाव में बेंचला पर केतना बेसी लेलक ? खुदे हिसाब करी ! एही तरहे प्रत्येक सामान में देखत जाईं, अइसने देखेम । खैर, छोड़ दीं विदेशी सामान के बात । लत्ते कपड़ा ओरी देखीं । नेपाली आ भारतीय कपड़ा में पचास प्रतिशत से बेसी नाफा लेके बेंचेलन तब जापानी आ हङकङ के कपड़ा में शतप्रतिशत नाफा लेके आराम से ना बेंचिहन ? का प्रशासन आन्हर बाटे ? छानवीन करेके ओकरा अधिकार नइखे ? नियम आ ऐन के व्यवस्था केवल पुस्तक के शोभे बढ़ावे खातिर बाटे ?"

हम 'गोरखापत्र' के समय-समय के समाचार के इयाद कके कहतानी - "देखीं, प्रशासन त समय-समय पर करेवाला कारवाई कके रोपेयो पइसा दण्ड कइले रहे, से समाचार सुनले बानी । रउआ कहतानी कुछियो कारवाही कइलही नइखे ? ई का ह, हम त बुझबे ना कइनी ।"

"रउआ समाचार में कालाबाजारी के दस हजार, पाँच हजार आ एक हजार तक दण्ड देवेके पढ़ले बानी ?"

"अइसने पाँच रोपेया से एक सय पचास रोपेया तक दण्ड देवेके पढ़ले बानी ।"

"तब ? ई एक-डेढ सय दण्ड बड़का स्टॉकिस्ट के नइखे कइल गइल । बड़का व्यापारी के त केहु छुअही ना सकेला । पहिल बात त ओकरा साथे पइसा के शक्ति रहता । दोसर बात, हमार ऐन-नियम एतना सरल बाटे कि केतनो हद कीटान कइला पर बड़का व्यापारी के कौनो असरे ना परी । खैर, एकरा के छोड़ दीं आ सरकारी नीति का तरफ विचार करीं । कहीं त, हमनी जइसन गरीब देश खाद्यान्न जइसन सामान के निर्यात करेके छूट देता ? देश के भीतर उबजल अन्न से देश के भीतरवाला के त प्रशस्त खाएके नइखे पुगत तबो देश के जनता के पेट काटके डॉलर कमाईके नीति लागू करता ? फलस्वरूप मुट्ठीभर व्यक्ति के फायदा होता आ अधिकांश जनता भूखे मरता । दाल, मरचा, आदी, लहसुन आ भटमास लेखा कम उबजेवाला समान सब निर्यात कइल जाता ? तब कइसे सस्ता हो सकता ?"

रत्नबहादुरजी बहुत अनुभवी बाड़न । ईहो हो सकता, ऊ ए: देश के नीति आ प्रशासनिक दक्षता बुझके निपुण बाड़न । पद्मशम्शेर के समय से नोकरी कके विभिन्न सरकारी कार्यालय के विषय में निमन से बुझले बाड़न ।

उनकरा से बहुत महत्वपूर्ण बात बुझेके आशा लेके हम पुछनी - "मूल्य नियन्त्रण करेके कौनो उपाय बाटे ?"

ऊ तुरन्ते उत्तर देलन -"निश्चय बाटे । हमनी के देश के कौनो शहर के मुख्य बाजार केकरा हाँथ में बाटे, मालूम बा रउआ ? हँ, एकनीए: के हमनीका देश के महँगीग्रस्त बनइले बाड़न । मेची से महाकाली तक ले देख लीं, एकनीएका बाटे । काठमाण्डू के बाजार में देखीं, केन्द्र में एकनीएका बाड़न । एकनी सब के मनोवृत्ति केवल धन जम्मा कके घर पहुँचावेके मात्र होता । ओइसे त जन्मसिद्ध नागरिक हो गइला पर हमनी बराबरे के नागरिक जइसन समान हक इनकरो सुरक्षित बाटे । ओकरा साथे साथ उनकर जगे भी ओतने सुरक्षित बाटे । ई दुनू हाँथ में लड्डु लेके बइठेवाला सबकेहु के प्रति ईमान्दार नइखे, केवल 'धन' प्रति मात्र बाटे । इनकरा उपर नियन्त्रण अनिवार्य बाटे । हम कह देनीं, सरकारी नीति हमनी के आवश्यकता अनुकूल होखेके चाहीं । निगम-संस्थान के कर्मचारी के स्वतन्त्रता प्रदान ना करेके चाहीं । प्रशासन के दत्तचित्त होके मूल्य नियन्त्रण में लागेके चाहीं ।"

मनमाफिक जबाब पइनी । हमरा आउर कौनो प्रश्न करेके हिम्मतो ना भइल । हमरा चीनी खोजेके बाटे । चीनी बिना घर ना लौटेके निश्चय कके निकलल रहनी हम । घंटो तक बइठ गइनी रत्नबहादुरजी के दोकान में । चाहे केतनो परी चीनी लेइएके जाएम सोचके भोटाहिटी जाएके निश्चय कइनी आ कहनी -"बहुत खुशी लागल बाटे रउआ से भेंट भइला पर । अब त परिचयपात हो गइल । पाछहु भेंट होई । हमार हार्दिक धन्यवाद बा रउआ के महत्वपूर्ण बात के जानकारी देवे खातिर । अभी हम जातानी । हमरा चीनी खोजेके बाटे ।"

रत्नबहादुरजी से बिदा लेके हम सड़क के एहपार-ओहपार के दोकान में पइसे लगनी । हम एगो दोकान से निकल के दोसर दोकान में पइसे लागल रहीं तबे एकजने हमार ध्यान आकर्षित कइलन -"भइया ! ई असन बा ?"

एगो झोरा कान्हा पर लटकइले बीस बाइस के खद्दर के दौरा-सुरुवाल पर वेस्टकोट पेन्हले, डाँड़ में कपड़ा लपेटले, खाली पैर आ माथा पर अव्यवस्थित ढंग से टोपी पेन्हले आ काठमाण्डू में पहिलके बेर आइल जइसन युवक से हम पुछनी - "तोहार घर कहाँ बाटे भाई ?"

"घर त पूर्व तीन नम्बर पहाड़ के सोलु बाटे ।" ठेकानते पुछलक - "असन इहे बाटे ?"

"भाई ! ई असन नइखे ।"

"अइसने घरेघरवाला, चारू ओरी दोकाने-दोकान कहले रहलन, ई नइखे त कहाँ बाटे ?"

"इहवाँ से तनी दूर बा । भाई ! काठमाण्डू पहिलका बेर आइल बाड़ ?"

मुड़ी हिला के सहमति जनइलक । हम कहनी .... 'तनी रुकजा ! हमरो उहवें जाएके बाटे ।"

हम एक-दूगो दोकान में गइनी तब तक ऊ उहवें हमार प्रतीक्षा करत रहे । तनी देर में ओकरा साथे भोटाहिटी तरफ प्रस्थान कइनी ।

"भाई ! असन में कौन काम बाटे ?"

"खरीदारी करेके बाटे । घर से खरीदारी करे आइल बानी ।"

"कब इहाँ अइलऽ? पहिलहु आइल रहलऽ कि पहिलके बेर अइलऽ ह ?"

"काल्ह बाऱ्हबिसे से बस चढ़के अईनी, रस्ते में छोड़ देलक। हम नयाँ आदमी, कबो ना आइल रहनी ..... ?"

"काहे बस रस्ते में छोड़ देलक ? बस बिगड़ गइल का ?"

"का कहीं, बिगड़ गइल कि का भइल, मालूम नइखे। तेल खतम हो गइल कहत रहे। बस उहवें रह गइल, आदमी सब पैदले चल देलक। हमहुँ चल देनी। पइसा त पूरे ले चुकल रहे।"

"रात कहाँ बितइले रहलऽ?"

"एन्हीएः बितइनी। का कहीं कौन जगह रहे ? जौन घर में बइठल रहनी उहवाँ के बाते ना हम बुझे सकनी। हँ, ओइसने बात करेवाला त हमार मुर्गा ले लेलक ?"

"कइसे मुर्गा ले लेलक ?"

"हमार मनो ना रहे तबो मुर्गा ले लेलक।"

"पैसा ना देलक ?"

"पैसा त देलक मगर जेतना देवेके चाहत रहे, ओतना ना देलक।"

"केतना देलक ?"

"एक सय एक बीस आ छौ रोपेया।"

"केतना मुर्गा रहे ?"

"एक बीस आ एगो।"

"काहे ओतने देलक त ?"

"इहे त कहनी हँ ! ना देहम कहला पर आठ-दस जने घेरके अनेक प्रकार के बात करे लागल। 'मुर्गो लादके कहीं नेपाल जाइल जाला ? पइसा लेके आराम से बस में चढ़के नेपाल जा' कहे लागल। बस के आदमी से पुछनी त ना ले जाएम, ले गइला पर पइसा लागी कहलक। हम अकेले रहनी, का करतीं ? छोड़ही के पड़ल।"

"इहाँ लिआके बेंचला पर बहुत पइसा होई से मालूम ना रहे ?"

"मालूम रहे तबे त लिआइल रहनी ? रास्ता में ओइसन हो जाई से त मालूम ना रहे। बड़का-बड़का महाजन ओतना कम पइसा दीहन से ना मालूम रहे ? ए, इहवाँ बहुत पइसा मिल सकत रहे, ना ?"

"उहवाँ जेतना देलक ओकर चौगुना मिल सकत रहे। अब खतम हो गइल, ओकर बाते छोड़ द ऽ। काठमाण्डू में काथी खरीदारी करे आइल बाड़ ?"

"बरीसभर के नून, मट्टीतेल, कपड़ा।"

"एः ! तोहार नाम का ह ?"

"तोपबहादुर, गाँवघर में रिट्ठे कहेला लोग।"

सगरमाथा के गोद सोलु में जन्मल तोपबहादुर अत्यन्ते सरल आ शुद्ध बाटे। लोभ-लालच आ बिना लप्पन-छप्पन के, शुद्ध पहाड़ी प्रकृति में रमल श्रमजीवी लउकेवाला तोपबहादुर के चेहरा पर हम पूरा नेपाल देखतानी। हम आसानी से अनुमान कर सकतानी, ओकरा जेबी के रोपेया से ओकर आवश्यकता पूरा ना होई । ओकर घर से कइल गइल हिसाब आ अब करेवाला हिसाब ना मिलला पर ई का सोची आ ओकर पूर्ति कइसे करी ? हम पुछनी -"भाई ! तोरा लगे केतना रोपेया बाटे ?"

"बाऱ्हबिसे में काल्ह मिलल पइसा के आज सबेरे हिसाब कइला पर एक सय चार रोपेया रहे। सबेरे पाँच रोपेया के खाना खईनी ह। अब एक सय रोपेया में एक रोपेया कम बाटे।"

"कपड़ा केतना किनेके बाटे ?"

"बाबु खातिर एगो वेस्टकोट आ कमरमें लगावेवाला कपड़ा। माई आ बहिन खातिर एक-एक गो पेटीकोट। पइसा बाँची त अपना खातिर कमीज-सुरुवाल, ना बाँची त वेस्टकोट-सुरुवाल के कपड़ा।"

"नूनो-तेल त लेजाएके बाटे कि ना ?"

"ले जाएके बाटे। बरीसभर के नून-तेल त लेजाहीके पड़ी।"

"नून-तेल केतना ले जइबऽ ?"

"चौदह किलो नून आ बीस-बाइस लिटर तक तेल ले जाएके पड़ी।"

ओकर जौन हिसाब हम सुननी ओ से सहजे अनुमान हो गइल जे ओकरा जेबी में जेतना रकम बाटे ओकर पाँच गुना बेसी लागी तइयो ऊ आश्वस्त बाटे कि ओकर सब आवश्यकता पूरा हो जाई । हम ओकरा के मजाक के रूप में पुछनी - 'भाई ! एकरा अलावे आउर कुछियो किनेके बा कि ?"

ऊ तुरन्त जबाब देता - 'हँ, चीनी आ चायपत्तिओ लेजाएके बाटे । बाबु के पेट दुखइला पर गरम चाय पीला से आराम हो जाला । बराबर ना खाएके, कभी-कभी मात्रे । हम त भोर परा गइल रहनी हँ ।

ओकर बात से हमरा हँसी लाग गइल । चलते-चलते हम रुक गइनी आ ओकरा के देखनी । घबराके ऊ कहलक -"बेसी ना चाहीं, एक किलो मात्र चीनी चाहीं । काहे रउआ हँस देनी ?"

हम कहनी -"हमहुँ चीनी खोजे चलनी ह, ना मिलल ह ।"

"असन में त मिली नुँ ?"

"का कहीं, ना कह सकतानी ? तइयो चलऽ । भेंट गइल त निमने होई ।" ऊ हमरा के नीचा से ऊपर तक देखके पुछलक -"भइया ! आपने के घर कहाँ बाटे ?"

हम उत्तर देनी -'ईहे काठमाण्डूए: में बाटे भाई ! काहे पुछलऽ ह ?"

"रउओ दूरे से अईनी ह कि जाने खातिर, आउर कुछ ना ह । काहे, चीनी नइखे मिलत ?

"नइखे मिलत ।"

"घर में बाबु कहले रहलन, असन पहुँचब, उहवाँ सबकुछ मिल जाई । तनि दूर जइबऽ, कपड़ा मिली । कपड़ा किनत बेर जेतना कही, ओतना ना दिह, कहले रहलन । उहवाँ बहुत चालाक देशी महाजन रहता । हमरा बाबु सब सिखाके भेजले बाड़न ।" तोपबहादुर बुद्धिमत्तापूर्ण ढंग से कहते जाता - 'ऊ महाजन सब हमनी के भाषा ना बोलेलन । तनी-तनी बोललो पर हमनी से फरक रहेला !"

ओकर बात करेके ढंग में कौनो चलाकी नइखे । हमरा से बात करे में ऊ कौनो कठिनाईओ नइखे महशूस कइले । ऊ कहते जाता -"आज

खरीदारी कके बिहने सबेरे चलला पर त पाँच दिन में घर पहँचिए: जाएम । आवत बेर त तीने दिन में पहुँच गइल रहनी । जाएके बेर मोटरी रही ।"

ओकर जेबी के पइसा से इहाँ के बाजार से ऊ सामान किने ना सकी एह बात से ऊ अनभिज्ञ बाटे । ओकरा विश्वास बाटे – ऊ खरीदारी करचुकल बाटे आ अब ऊ घर लौटेके तेयारी में बाटे । शायद ओकरा घर छोड़ल चार दिन हो गइल बाटे । अब घर के इयाद ओकरा आवे लागल बाटे । काठमाण्डू से घर में सामान ले गइला पर ओकर बाबु, माई आ बहिन खुश होई तौना बात के ऊ कल्पना करे लागल लेखा बुझाता ।

हम धीरे से ओकरा से पुछनी -"केतना के कपड़ा किनेके तोहार बाबु कहले बाड़न ?"

"पाँच हाँथ के मोटका खद्दर के कपड़ा बाबु के वेस्टकोट खातिर आ उनकरे खातिर दू से सवा दू रोपेया तक के नौ हाँथ के कपड़ा किनेके कहले बाड़न । पन्ह साल त बाबु खुदे आइल रहलन । हम एह साल आइल बानी । हँ, यदि पुग गइल तब अपनो खातिर नीमने कमीज-सुरुवाल के कपड़ा ले जाएके सोचतानी । ना पहुँचलो पर वेस्टकोट-सुरुवाल त लेइए: जाएके पड़ी । पइसा पहुँच गइल तब एगो इस्टकोटो लेके जाएम । हँ, एगो लाइटरो किनेके विचार बाटे । हमनी के गाँव के बड़का घर के एगो आदमी ले गइल बाटे । नयाँ हो गइला पर केतना आनन्द होई !"

ओकरा हिसाब से ओकरा साथ के रोपेया से सब पहुँच जाई आ ओही से ऊ एगो लाइटरो किनेके निश्चय कइले बाटे । हम पुछनी -"भाई ! मट्टीतेल आ नून केतना के लेवेके कहले बाड़न ?"

ऊ इयाद कके कहता -"दस रोपेया के नून, तीस रोपेया के मट्टीतेल आ चार-पाँच रोपेया के एगो खाली कन्टर लेवेके कहले बाड़न ।"

हम कहनी - "हिसाब कइले बाड़ ? जेतना तू कहताड़ ओतना में सामान मिल जाई तइयो तोरा लगे जेतना पइसा बाटे, ओ से हो जाई ?"

"ए, हम त हिसाब नइखी कइले, काल्हे से हम इहे बात मने में विचार कर रहल बानी । हिसाब ना पुगी जइसन लागता । बाऱ्हबिसे में मुर्गा बहुत सस्ते में ले लेलक से त मन में लागल रहे । साँचे, हम जेतना कहतानी

ओतना सामान हमरासंगे जेतना पइसा बाटे ओ से ना पहुँची जइसन लागता !"

हम कुछियो उत्तर ना देके चलते गइनी आ उहो पुछेके कोशिस ना कइलक। हकमनीका बढ़ते गइनी। सड़क पार करेके जगे हम खड़ा हो गइनी। ऊ अगाड़ी बढ़े लागल तब ओकर बाँह पकड़के हम रोक देनी। एगो मोटर तेजी से हमनीका आगे से निकल गइल, ओकरा पाछे दोसर, दोसर के पाछे तेसर। एही तरहे मोटर के लाइन जाले खतम ना भइल तब तक हमनीका खड़े रहनी। ओही समय में तोपबहादुर कहता - 'एः ! देखही के बिसर गइनी। रस्ता काटेके बेर चारू ओरी देखके चलिहऽ से बाबु त कहले रहलन।"

ओकर फतफताहट से हमरा कौनो मतलब ना रहे। हमरा एकेगो चिन्ता बाटे कि ओकरा साथ के पइसा से एकोगो सामान खरीदेके स्थिति नइखे। ओकर बाबु जे एकइसगो मुर्गा देके भेजले रहलन से दू महिना आगेके काठमाण्डू के भाव में बिकाइल रहीत तब त तोपबहादुर आशा से भी बेसी के सनेस संगी - साथीओ खातिर लेके जा सकत रहे। मगर का करी ? ना ओकर आनल सामान ठीक से बिकाइल ना बाजार के भाव दू महिना पहिले लेखा बाटे। आजकाल काठमाण्डू में कौनो बाजार के रूप निश्चित नइखे ? चौबीसे घन्टा के भीतर शतप्रतिशत के रफ्तार से मूल्यवृद्धि हो रहल बाटे।

हमनीका भोटाहिटी पहुँच गइनी। हम एक-दूगो दोकान के आगे खड़ा होके चीनी पुछे लगनी। तोपबहादुर हमरा साथे खड़ा होत रहे आ चलत रहे। एही क्रम में एगो दोकानदार से जबाब मिलल - "काल्हु तक त रहे, देले रहीं। अब चीनी के भाव बढ़ेवाला बाटे ओही से डीलर खुदे स्टक रखले बाटे। हमनी के नइखे देत। हमनी के कइसे दीं ?"

दोकान में पइसके दोकानदार के निहोरा कइनी -"रउआ किहाँ मिलता सोचके बहुत दूर से आइल बानी। जेतना पइसा कहेम, हम देब, हमरा के दे दीं।" शान्त भाव से दोकानदार कहता -"साँचे नइखे ! रहला से खुदे फायदा होइत, राउरो काम हो जाइत, ना देवेके त बाते नइखे। रउआ लोगनी के सेवा खातिर त हम बइठल बानी। काल्हे आइल रहतीं त हम केतनो देके पेठा देतीं। आज नइखे, माफ करीं !"

फेर विनम्रतापूर्वक हम कहनी - "साहुजी ! हमरा बेसी ना, पन्द्रह-बीस जेतना लेहम लेके, आधा किलो मात्र दे दीं।"

उहो विनम्र होके हमरा कहलन - "देखीं हजुर ! हमार काम सामान बेंचेके बाटे। डीलर जौना भाव में हमरा देले रहे, मुनासिब मुनाफा राखके बेंचनी। अब भाव बढ़ेवाला बाटे कहके डीलर हमनी के सामान ना देलक त हमनीका कइसे बेंचीं ? कहीं ना ? हँ, हमनीका मालूम बाटे, ग्राहक लोगनी मूल्य में घटी-बढ़ी के कौनो परवाह ना करेलन, सामान मिल गइला से काम बा। अभी के समय भी त अइसने बाटे। डीलर हमरा के निर्धारित मूल्य से बीस प्रतिशत बेसी लेके एक सय बोरा चीनी देले रहे। हमहुँ सरकारी नियम अनुसार बीस प्रतिशत से बेसी मुनाफा ना राखके तीने दिन में, सब चीनी बेंच देनी। नइखे हजुर ! साँचे नइखे ! माफ करीं !"

निराश होके हम लम्बा साँस खींचतानी। भोटाहिटी तक अइला के कौनो फायदा ना भइल। उपाय खातिर हम दोकानदार से धीरे से पुछनी - "कहाँ मिली त ?"

"का कहीं, असन में त साल्ट टेडीङ्ग के डिपो बाटे। कहे जेतना त ना मिली, सुनले बानी, मच्छिन्द्र बहाल में दे रहल बाटे कादोनि !"

हम दोकान से सड़क परं आ गइनी। तोपबहादुर चारू ओरी के दृश्य देखे में मस्त रहे। हमरा बिना ऊ असन ना पहुँच सकत रहे, ओह से ऊ हमार प्रतीक्षा में रहे। हम तोपबहादुर के छकाके कहनी - "का देख रहल बाड़, तोपबहादुर ? चल, असन आ गइनी।"

हमनीका कुछे मिनट में असन के दुबटीआ में पहुँच रहल बानी। तोपबहादुर खतिरा त सब असने बाटे। मगर हम दुबटीआ में पहुँचावेके निश्चय कइनी। असनचोक पहुँचे से पहिले तोपबहादुर के असन इहे बाटे, समझा देनी। घर से निकलला के चार दिनबाद ठीक जगे पहुँचला पर तोपबहादुर हर्षित हो गइलन आ चौक के चारू ओरी ठिकिआवे लगलन। हम कहनी - "भाई ! इहे बाटे असन।"

आदमी, गाई, रिक्सा आ गाड़ी के भीड़ में आँख दौड़ावत अचरज में पड़के तोपबहादुर कहलन -"इहे बाटे असन ?"

"हँ, इहे बाटे।"

हमरा से तोपबहादुर एतना विश्वस्त हो गइल रहे कि ओकरा हमरा कहला में शंके ना रह गइल। अभी ऊ आपन कल्पना के असन में बाटे। असन के पूरे नेपाल सम्झेवाला गाँवघर के भाई लोगन के पहिलके बेर देखला पर विश्वस्त ना भइल स्वाभाविके बाटे। अइसन बाटे हमनीका राजधानी के आवश्यक सामान सब के बाजार ! तीस हजार वर्गफीट में अवस्थित असन में घन्टे भर में लाखो के कारोबार होता। सयो बरीस से प्रख्यात ई बाजार आजो ओही रूप में चल रहल बाटे।

"मट्टीतेल आ नून कहाँ मिलता ?"-तोपबहादुर हमरा से पुछता -"का कहीं ? हम त इहाँ धकमका गइनी।"

हम चौक के कोना में बोर्ड देखनी -"नेपाल आयल निगम से प्राप्त मट्टीतेल इहाँ मिलता, ओही बोर्ड का लगे से शुरू भइल क्यू हमनी तक ले बाटे। हम कहनी - "भाई ! एही लाइन में लाग जो, तोहार पलहा अइला पर मट्टीतेल ले लिहे।"

ऊ खुशी होके कहलक - "तब त खाली कन्टर किनेके परल।"

हमनी लगे खाली टीन सब बेंचे खातिर राखल रहे। देखाके हम तोपबहादुर के कहनी - "भाई ! खाली टीन इहाँ किनके लाइन में खड़ियाके मट्टीतेल ले लिहे। हमरा चीनी खोजेके बाटे।"

साल्ट ट्रेडिङ्ग के बोर्ड लटकावल दोकान तरफ हम गइनी। उहवाँ केवल बोर्ड मात्र बाटे, ना आदमी बाटे, ना चीनी। हम लगेके दोकानदार से पुछनी। 'खतम हो गइल होई' जबाब सुनलाके बाद उनकरे सल्लाह अनुसार मच्छिन्द्रबहाल जाएके निश्चय कइनी।

तोपबहादुर चौक में अकबक होके बइठल रहे। ऊ खरीदारी शुरू ना कइले रहे। हम ओकरा लगे जाके फेर कहनी - "भाई ! खाली टीन आ मट्टीतेल ले लिह ! हम जा रहल बानी।"

ऊ बेमन से मुड़ी मात्र हिलइलक। हम असन से मच्छिन्द्रबहाल गइनी। मच्छिन्द्रबहाल चौक में लाइन लगाके चीनी बाँटत देखनी त एतना खुश हो गइनी कि लाइन में ना लाग के चीनी के बोरा के बगल में खड़ा होके कहनी - "साहुजी ! हमरो चीनी दीं।"

विक्रेता अपने काम में व्यस्त रहे। लाइन में खड़ा भइल एक जने भद्रपुरुष हमरा के कहलन - "रउआ चीनी चाहीं त लाइन में लाग के आईं। हमनीका घंटो से लाइन में बानी।"

ओ व्यक्ति के बात समाप्तो ना भइल रहे कि लाज से हमार मुँह लाल हो गइल। खुदे बुझेवाला बात ओह व्यक्ति से सुनला पर हम ठीक ना महशूस कइनी। हम कुछियो कहेके हिम्मत ना कइनी। हम आपन नजर क्यू तरफ दौड़इनी। सयकड़ो लोग खड़ा रहे। गलत सोचेके बाते ना भइल। निमन नाहिओ लगला पर क्यू में लाग गइनी।

लाइन बहुत मुश्किल से आगे बढ़त रहे। सय व्यक्ति के बाद में मात्र आपन पलहा आवेके स्थिति में खड़ा भइल हम दू घंटा सोझे लागेके अनुमान कर सकतानी। दिनो ढल गइल रहे। सोचनीं, अब चीनी लेलाके बाद साँझ हो जाई। झोरा बढ़ाके हम दू किलो मंगनी। आधा-आधा किलो मात्र देवेके बात विक्रेता सम्झइलन। आधा किलो चीनी लेके क्यू से बहर अइनी।

हम असन होके घरतरफ चल देहनी। एकाएक हम तोपबहादुर के एगो टीन के बगल में खड़ा भइल देखनी। हम सोचनी ऊ मट्टीतेल किन लेले बाटे। तोपबहादुर के बगले में जा के हम पुछनी -"भाई ! मट्टीतेल किन लेले बाड़ ?"

तोपबहादुर हमार मुहँ पर उदास मन से देखलक। ओकर दुनू आँख हम लोर से भरल देखनी। ऊ हमरा के कुछियो जबाब ना देलन। फेर हम उनकरा से पुछनी - "का भइल ? मट्टीतेल त किन लेले बाड़ नुँ ?"

ऊ असन के एगो कोना ओरी टकटकी लगाके बइठल बाटे। हमरा के देखिओ ना सकल बाटे। हमार प्रश्न के उत्तरो देवेके ओकर मन नइखे। हम ओकर मुड़ी के आपना ओरी घुमाके पुछनी - "का भइल तोपबहादुर ! कह ना कह, का भइल ?"

ओकरा आँख से लोर गिरे लागता। ऊ आपन कमीज से लोर पोंछत रोआइन मुहे कहता - "मट्टीतेल में हमार सब रोपेया खतम हो गइल। अब खरीदारी करेके पैसो नइखे बाँचल ? सामान ना ले जाएम त घरे लौटेके जरूरते नइखे। बाबु ओतने मुर्गा बेंचके बरीसभर खातिर सामान लेके जात

रहलन। हम मट्टीतेल मात्र लेके जाएम त घर के भीतरो ना पइसे देल जाई। ओहु पर घरे जाएः वास्ते पैसो नइखे। सब इहे महाजन ले लेलन।"

हम पुछनी - "मट्टीतेल केतना लेलऽ ? केतना पइसा देलऽ ?"

ऊ कहलक -"खाली कन्टर आठ रोपेया में लेके लाइन लाग गइनी। बहुत देर के बाद हमार पलहा आइल। केतना राखीं, महाजन पुछलन। बीस लिटर राखेके कहनी। तेल राखला के बाद रोपेया केतनो देला से ना पहुँचल, आउर द कहे लगलन। एकइस लिटर रखले बानी कहलन। हमरा से पाछेवाला कहलन - 'हिसाब बाद में करेम, महाजन जेतना कहेलन ओतना रोपेया दे दीं।' जेतना रोपेया रहे ओ में से दू रोपेया राखके सब दे देनी। लाइन से बाहर निकलते दोसर आदमी कन्टर पकड़के राख लेलक। ऊ तीन रोपेया मङले रहे। हमरा लगे दू रोपेया मात्र बाँकी बाटे कहनी। 'बाद में एक रोपेया दे दिह' कहके छीन लेलन। अब हमरा लगे एको रोपेया नइखे। कइसे खरीदारी करीं ? कइसे घरे जाईं ?"

ओकरा के समझावते कहनी -"अब का करब त ? तोरालगे रोपेये कम रहे। तोरा से मट्टीतेल साहु नवासी रोपेया लेलक। अब पइसा नइखे त का करब ? बाबु के सब बात बतइहऽ। का करिहन तब बाबु ?"

ऊ कहलक - "घरे जाएके त बाते ना रहल।"

ओकर समस्या के समाधान ओकरे से पुछनी - "का करब त ?"

"ई एक कन्टर तेल ले गइला से ना लेगइल ठीक बाटे। ई तेल बेंचेके बात कइले रहनी। ऊ महाजन बेंचब त किन लेहम कहले बाटे। बेंच के रोपेया लेहम।" ऊ कहते जाता - "आसनसोल में हमार भइया कोइलाखानी में काम करेलन। हमहुँ उहवें जाके दू-चार महिना काम कके रोपेया कमाईब, ओकराबाद लेजाएवाला सामान लेके जाएम।"

"कहाँ बाटे आसनसोल ? तू गइल बाड़ ?"

"गइल त नइखीं। जाएके ठान लेला पर पहुँच जाएब नुँ ! का करीं, घरे जाएके रस्ते बन्द हो गइल, आउर कौनो उपायो त नइखे ?"

ओकरा से मट्टीतेल लेवेके बात कइलहा व्यक्ति हमनीका आगे आके कहता - "देब ? देवेके बा त देदऽ, हमरा दोसरो काम में जाएके बाटे।"

तोपबहादुर मुड़ी हिला के स्वीकृति देलन। ऊ व्यक्ति आपन दोकान में लेआवेके कहलक। तोपबहादुर के आग्रह पर हमहुँ उहवाँ गइनी। ऊ दोकानदार मट्टीतेल भरके लेवेके आशय व्यक्त कइलक। ओकरा लेल हम स्वीकृति देनी। ऊ टीन फोरके हमरे सामने मट्टीतेल भरला पर सोरह लिटर मात्र पहुँचइलक। तोपबहादुर एकइस लिटर लेले रहनी, कहले रहे मगर अभी भरला पर सोरहे लिटर पहुँचता। हम फेर दोहरा के भरेके कहनी।

'ओतने बाटे।'

दोकानदार सोरह लिटर के अड़सठ आ टीन के सात रोपेया सहित पचहत्तर रोपेया तोपबहादुर के देलन।

मट्टीतेल में कमी देखके हम आपन चीनी में भी शंका कइनी। जोखला पर साँचे पचास ग्राम कम बाटे। अब हमरा हाँथ में चीनी आधा किलो नाहोके चार सय पचास ग्राम मात्र बाटे। आपने सामने विक्रेता जोखके-भरके देले रहे, ओतहाँ से चित्त बुझाके चल देला पर फेर ना पुगल कहे जाएम त खुदे मूर्ख बनेके होई । हमरा बुझाइल, नियन्त्रित मूल्य किनल सामान में अइसने होला।

तोपबहादुर आ हम असनचोक में जातानी। अभी ओकरा हाँथ में पचहत्तरेगो रोपेया बाटे। असन के नाटक में ऊ पुरे चौबीस रोपेया गवाँ देलक। चौबीस रोपेया से ओकरा माई के बरीस दिन पहुँचेवाला पेटीकोट असनचोक में बिला गइल रहे। तब ओकर बाबु के कमीज आ कमर में बान्हेवाला कपड़ा, बहिन के पेटीकोट आ अपना खातिर नयाँ कपड़ा अब सपने बनके रह गइल। ओकरा घरे बरीसभर अन्हारे रही। परिवार के खाना बरीसभर फिंके रही। ओकरा त ई इयादे ना रहल। ओकरा केवल सामान खातिर रोपेया के जरुरी बाटे। ऊ रोपेया कमाइएके घरे लौटेके निश्चय कइलक। तोपबहादुर कोसो दूर से गोड़ घिंसिआके असन आइल रहे मगर जेतना ऊ असन के श्रद्धा आ विश्वास कइले रहे, असन ओकरा के ओतने अपमान आ शोषण कइलक।

असन ई ना बुझलक कि सकभर ओकरा के ईमान्दारीपूर्वक सहूलियत प्रदान कके खुशी बनाईं। असन त केवल एतने जानता कि अइसने सीधा सादा लोगन के नकली आ मिसावट के सामान जिम्मा लगाके खुद के जिएके बाटे।

तोपबहादुर के आवश्यकता पूर्ति करे से हम असमर्थ बानी। पाँच-दस सहयोग देला से ना होई । ओही से हम लाचार बानी। हम उपाय रहित बानी। हम ओकरा के विदेश जाएः से नइखीं रोक सकत ?

तोपबहादुर से हम दुःखी होके कहतानी - "तु घरे चल जा भाई ! विदेश में आउर बेसी दुःख होई। कभी ना गइल आ ना देखल जगे, जाएके निश्चय ना करऽ। बिहने सबेरे के बस में चढ़के बाऽहबिसे होत घरे चल जा। तोहरा के घरे माईबाबु कुछियो ना कहिहन। विश्वास करऽ, घरे चल जा भाई ! घरे लौट जा !"

ऊ दुःखी होके कहते जाता - "हम त घरे जइबे ना करेम। कौन मुँह लेके हम घरे जाएम ? बल्कि भइया जहाँ बाड़न ओही जगे जाके उनकरे साथे कोइलाखानी में काम करेम, रोपेया कमाएम आ तब घरे लौटेखुनी जेतना कहल गइल रहे ओ से बहुत बेसी सामान लेके जाएम।"

"आज कहाँ रहबऽ त ?"

"इहवें कहीं रह जाएब।"

"हम जाईं त ?"

"होई।"

"तू एनहीएः रहब ?"

"एनहीएः त रहेके परी आज।"

हम तोपबहादुर से बिदा लेके आपन रास्ता पकड़ ले तानी आ सोचत जातानी। इहाँ से एह देश के युवाशक्ति समय आ परिस्थिति के चपेट में पड़के विदेश चल जाता ! महँगी आ अनियन्त्रित बाजार के कारण तोपबहादुर जइसन श्रमजीवी ई देश गवाँ रहल बाटे। बुढ़ाबुढ़ी ओकर माईबाबु एगो सहयोगी बेटा गवाँ रहल बाड़न। ओकर बहिन माया करेवाला एगो भइया गवाँवतारी। ओकर संगीसाथी एगो अच्छा मित्र गवाँवता।

✠✠✠

मङर के दिन

एगो सरकारी कार्यालय के कोठली में हम घन्टो से बइठल बानी। हमार काम होते नइखे। फाँटवाला के हमरा से बोले तक के फुर्सत ना देखतानी। हमरा साथे चार जने आउरो काम के प्रतीक्षा में बाड़न। हमरा पहुँचते मातर 'तनी रुक जाईं, राउर काम कर देहम' कहके ओकर देल आश्वासन में हम ओझरा गइल बानी। कोठली में कुर्सी के अभाव बाटे। हम कभी खड़ा हो जातानी, कभी एगो अपरिचित व्यक्ति के कोना में बइठल कुर्सी पर बेशरम होके बइठ जातानी। बहुत देर बइठला से देह दुःखाएः लागता, ओही से कभी कोठली के बाहर निकल जातानी। हम एः बीच में फाँटवाला के दू बेर 'हमार कागज दोसर फाँट में भेज दीं ना' कहके अनुरोध कर चुकल बानी। 'काम कर रहल बानी से देखत नइखीं ?' जइसन ओकर देल जबाब से हमरा फेर कहेके मन नइखे करत।

आज हम एः कार्यालय में दू हप्ता बाद आइल बानी। महिनों से लटकल ई काम कौनो कठिन काम नइखे। बीस मिनट लागभीरके कर देला से हमार काम हो जाई तइयो बीसो बेर दउरला के बादो नइखे भइल। काम साधारण बा। हम कुछ महिना पहिले ओही कार्यालय के एगो कर्मचारी के सलाह अनुसार तीन सय पचीस रोपेया बुझा देले रहीं। नियमतः ऊ काम

ना होखेके जानकारी पइनी, काम ना भइला पर ऊ तीन सय पच्चीस रोपेया फिर्ता हो जाई से मौखिक आश्वासन देहल गइल रहे, ओही से कार्यालय में दउरे लगनी । रोपेया ना मिली सेहो नइखे कहत । देवेके सम्बन्ध में जल्दी कारवाईओ ना हो रहल बाटे । कम-बेशी जेतना भी होखे पइसा के मोह होखबे करेला । ओहु में खुदे बुझावल पइसा बाटे ।

हमार कम पइसा के काम भइला से बाटे कि का नू, फाँटवाला हमरा काम में ध्याने नइखे देत ? आ कि हम तरीका ना बुझे सकल बानी, ओ से हमार काम नइखे होत ? तीन सय पचीस रोपेया खातिर ओहु से बेसी खर्च कर चुकनी । हमरो समय के त मूल्य बाटे आ इहाँ आवहु में त हमार कुछ खर्च हो जाता । हर खेप कम्ती में हम दू घंटा बितइले बानी । बीसो बेर के दउराई । अनेरे घण्टो के प्रतीक्षा के बादो काम ना भइला से फेर ना आएम निश्चय कके रोपेया के मोह त्याग के कार्यालय से लौट के आ जातानी । मगर कुछ दिन के बाद 'आपन मिलेवाला रोपेया काहे छोड़ दीं ? मिल गइला से एगो काम त होई' आशा लेके फेर कार्यालय में दउर रहल बानी ।

हम कोठली में आपन काम के प्रतीक्षा में खड़ा बानी । फाँटवाला एगो फाइल के काम में व्यस्त बा । ऊ हमरा आ आनो हमरा लेखा ओकरा टेबुल के आगे बइठल आनो लोगसे भी बोले तक के फुर्सत नइखे जइसन देखा रहल बाटे । ओही बीच में वातावरण के भंग करते एगो आदमी कोठली में प्रवेश करते कहता -"एः हजुर ! हमार काम भइल ?" उनकरा के देखते चिन्ह गइनी । ऊ महेशकुमार केडिया बाड़न । उनकरा के हम वर्षो से चिन्हतानी, जब से ऊ काठमाण्डू आइल बाड़न ।

उनकर भारी आवाज फाँटवाला के कान में पहुँचे सें पहलही कुर्सी से तुरन्त उठ के कहे लागता -"आईं, आईं महेशकुमारजी ।"

फाँटवाला महेशकुमार के संगही के टेबुल लगे के एगो कुर्सी खींचके बइठेके कहता । महेशकुमार हमरो के एगो कुर्सी खींचके बइठेके कहलन । ऊ कुर्सी पर बइठलन आ हम उनकरे बइठल कुर्सी के बाहीं पर सट के बइठ गइनी । हमरा विषय में पुछलन । हम आपन काम के विषय में बता देनी । उहो इम्पोर्ट लाइसेन्स के काम में आइल रहलन ।

फाँटवाला आदरपूर्वक उनकरा के कहलक -"महेशकुमारजी ! आपने काल्हे आएब से बुझाइल रहे । सब काम खतम कके रखले बानी, खाली डाइरेक्टर साहेब के सहीछाप बाँकी बाटे ।"

हँस्ते महेशकुमार के आज्ञापालन कके दराज से फाइल निकाल के कहलक - "आपने तनी बइठीं । हम डाइरेक्टर साहेब के सहीछाप कराके ले आवतानी ।"

"कौनो बात नइखे ।"

फाँटवाला फाइल लेके कोठली से बाहर निकल गइल । हम उनकरा से जानेके चहनी -"महेशकुमारजी ! अभी विदेश के व्यापार खुदे शुरू कइले बानी ?"

हमार प्रश्न सुनके हमार हाँथ पकड़के धीरे से दबा के चूप रहेके ईशारा कइलन । मुँह से कौनो जबाब ना देला के कारण हमरा उनकरा प्रति शंका हाखे लागल । ऊ भारतीय पासपोर्ट पर तीन महिना पहिले हङकङ गइल रहलन से हमरा मालूम बाटे । दस बरीस से काठमाण्डू में रहते अइलो पर ऊ अपना के नेपाली नागरिक बनावेके प्रयास में नइखन लागल, ईहो बात हमरा मालूम बाटे । बर्मा में जन्मल महेशकुमार बर्मा से निष्काशित होके नेपाल में रहे लगलन तइयो अपना के भारतीय नागरिक कहे में गर्व करेलन । ओही समय में हमरा एगो सरकारी नीति इयाद परता -'प्रत्यक्ष भा अप्रत्यक्ष रूप से कौनो विदेशी ई व्यापार ना कर सकता ! ओह नीति के विरुद्ध एगो विदेशी के काहे एतना बेसी स्वागत कइल जाता ? काहे एतना बेसी सहुलियत देहल जाता ? हमरा मन में ओह विषय में जाने-बुझेके उत्सुकता उत्पन्न हो गइल ।

महेशकुमार हमरा से पुछलन -"राउर बेसी काम बाटे ?"

हमरा काम में बेसी देर लागेवाला त नइखे । नइखे भइल, ऊ से नाहिओ कहला से होई । काहेकि आजो हमार काम होखेके स्थिति नइखीं देखत । एही से उनकरा के हम कहनी -"छोटे काम बाटे । शायद आजो ना होई ।"

ऊ पुछलन -"रउआ गाड़ी में बानी कि पैदले बानी ?"

हम उनकरा के कहनी -'पैदले आइल बानी । हमनी के एतना महँगा पेट्रोल राखके थोड़े गाढी चढ़े सकतानी ? पैदले चलल स्वास्थ्यो के दृष्टिकोण से ठीक बाटे ।'

एतने में फाँटवाला भीतर पइसते कहता - "महेशकुमारजी ! काम हो गइल । ई फाइल लेके पैठारी शाखा में जाईं । आपने के कागज उहवें बाटे । उहवें से लेलहम ।"

फाँटवाला महेशकुमार के फाइल देलक । महेशकुमार हमरा के 'एक मिनट' कहके फाइल लेके कोठली से बाहर चल गइलन । हम फाँटवाला के आपन काम के बारे में अनुरोध कइनी । ऊ आज काम सम्भव नइखे 'बिहने आईं, राउर काम कर देहम' कहलख । बिहानो होई, ओईसन कौनो लक्षण हम ना देखतानी । ऊ 'बिहने कर देहम' मात्र कहले रहित तइयो हम बिहने के आशा लेके लौट जइती । मगर ऊ 'करदेहम्' जइसन अनिश्चित शब्द प्रयोग कइले रहे, एही से हम निराश होके 'होई, बिहने आएम' कहके कोठली से निकल गइनी ।

हम कार्यालय के नीचला दुआरी पर पहुँचनी तबे महेशकुमार आपन काम समाप्त कके हमरा आगे पहुँच गइलन । हम उनकरा के कहनी -'एतना जल्दी काम खतम कर लेनी ?"

"हँ त ! बेसी समय लगावेके बाते नइखे ।"

"केतना दिन के 'पेन्डीङ' काम बाटे ई ।"

"बस, परसवे त देले रहीं । बहुत दिन हो जाई त ई मुल्हा लोगनी के खाहुके त ना मिली ।"

हमार मन में कुछियो भइल होखे बाँकिर ओठ पर मुस्की लेआके कहनी - "बहुत जल्दी काम करवा लेतानी ! इहो त बाटे, रउआ लोगनी जइसन व्यापारी के बेसी फुर्सतो त ना रहेला ? जेतना जल्दी होखे काम समाप्त कइलो त अच्छा बाटे ।"

ऊ हमरा काम के विषय में पुछलन - "राउर काम हो गइल ?"

"आज बेसी काम भइला के कारण ना हाखे सकल, बिहने बोलइले बाटे ।"

"काहे ना भइल ? हमहीं कह देतानी आपन आदमी बाड़न । पहिले काहे ना हमरा के कहनी ?"

उनकर बात सुनके हमरा आश्चर्य लाग गइल, आपने देश में एगो विदेशी के आदमी कहके अपना के चिन्हावेके अवस्था देखके ? ओइसे त ऊ हमरे फायदा खातिर कहले बाड़न ! ई बात हमरा खतिरा फयदेके भइलो पर हम ना सहे सकतानी । हम मनेमन कहनी, बल्कि हमार काम ना होई लेकिन अइसन स्थिति कभी ना आवेके चाहीं ?

हम उनकरा बात के प्रति कौनो प्रतिक्रिया ना जनइनी । हम चूपे रहनी । इहे कहलन -"रउआ अब कहाँ जाएब ?"

हमार आज के काम इहे रहे जौन ना होखे सकल । कहीं जाएके विशेष कामो ना रहे । एही से हम कहनी - "घरे जाएम शायद ।"

"दिने में घरे जाएब ? फुर्सत बाटे त हमरे सङे चलीं ।"

"कहाँ ?"

"हमरा आँफिस में ।"

हम उनकरा साथे जाएके तेयार हो गइनी । ऊ कार तरफ बढ़लन आ हमहुँ बढ़नी । कार के आगे के सीट पर दुनूगोड़े बइठ गइनी । गाड़ी उनकर आँफिस तरफ बढ़ गइल । ऊ बात निकाललन -"रउओ भी फरेन ट्रेड में लाग गइल बानी ?"

"लागल त नइखीं । लागेके विचार से कार्यालय में दउरे लागल बानी । मगर, ना होई । हमनी जइसन लोग कइसे करिहन ?"

सम्भवतः हमरा ऊ विदेश-व्यापार के बारे में सलाह करे खातिर आपन आँफिस में लेके जा रहल बाड़न । हम उनकरा से धीरे से पुछनी -"का रउआ विदेश के व्यापार शुरू कर चुकल बानी ?"

"विदेश-व्यापार त हम पहलही से करत रहनी । रउआ मालूमे बाटे, पहिले दोसरा के इम्पोर्ट लाइसेन्स खरीदके करत रहनी, अब आपने फर्म बाटे । बस ओतने फरक बाटे ।" हम उनकरा के समझावत कहनी -"रउआ त भारतीय नागरिक बानी ? कइसे आपन फर्म रजिष्ट्रेशन करइनी ? कि नेपाली नागरिकता लेलेनी आपन साथी धारीवाले जइसे ?"

बात समाप्त करते ऊ कहलन "बाद में बता देहम् ।"

शुरू-शुरू में काठमाण्डू में उनकर दु:खो के दिनसब हम नीमने से देखले रहीं । आढ़ाई सय के नोकरी कके काठमाण्डू के फुटपाथ सब पर ऊ घूमत रहलन । पचास रोपेया के एगो कोठली में ऊ महिनाभर रहत रहलन । आज महेशकुमार के तीन-तीन गो कार अठारे सय के बंगाल के गैरेज में मौजूद बाटे । ऊ आपन कौनो बात हमरा के बतावे में ना हिचकिचालन । त अभी काहे ना बतइलन, हम ना बुझे सकनी ।

हमनी उनकर आँफिस के नीचा सड़क पर आ गइनी । ऊ आपन गाड़ी रोकके कहलन -"हम रउआ से सलाह करेके चाहतानी । चलीं उपर आँफिस में ।"

हम दुनूजने उनका आँफिस में पहुँच गइनी । करीब तीन महिना हो गइल रहे हम उनका आँफिस में ना आइल रहनी । आँफिस में बहुत परिवर्तन हो गइल रहे । कर्मचारियो ढेर हो गइल रहसन । उनकर केबिन अलगे बाटे । पहुँचते मातर ऊ हमरा के 'गरम भा ठन्ढा ?' खाएके प्रस्ताव रहलन ।

ऊ आपन आँफिस के पिउन के बोलइलन -"बहादुर ! ए: बहादुर !"

एगो नवयुवक कोठली के केवाँड़ी खोल के हाजिर भइल -"का साहेब ?"

हम अइसन बहादुर कहल शब्द भारत के कलकत्ता, दिल्ली आ बम्बई में मात्र सुनले रहनी । आज काठमाण्डूओ में सुननी । सुनते हमरा मनमस्तिष्क में धक्का लागल । हमरा मन में महेशकुमार के प्रति गलत भावना पैदा हो गइल । ओह विषय में हम चूप ना रहे सकनी आ ओह युवक के पुछनी -"भाई ! तोहार नाम बहादुर बा ?"

युवक जबाब देलक -'हँ, हजुर ।'

ओकरा बात में अविश्वास कके पुछनी -"का बहादुरो नाम होला ?"

"इहाँ साहेब बहादुर कहेलन । एही से हमार नामे बहादुर हो गइल ।"

"इहाँ नोकरी कइला केतना हो गइल ?"

"तीन महिना होखे लागल ।"

"इहाँ से पहिले का नाम रहे तोहार ?"

"नाम त रामप्रसाद बा ।"

"तब काहे बहादुर कहतानी, रामप्रसाद कहीं ना !"

महेशकुमार हमार आशय बुझ गइलन, ऊ कठिन समझ के कहलन -"रामप्रसाद कहला पर नाम लम्बा हो जाता । 'कान्छा' कहीं त दोसरो के नाम 'कान्छा' बाटे, एही से सुविधा के हिसाब से 'बहादुर' कहतानी ।"

हम उनकरा के समझावते कहनी -"ई कौनो बहादुरी कइले होखे तब 'बहादुर' कहला पर ठीक रही । ई कौनो बहादुरी कइले लेखा त नइखे बुझात, तब काहे बेकार में 'बहादुर' के उपाधि देले बानी ?"

महेशकुमार ठीक ना मान के कहे लगलन -"बहादुरी कइले रहे कौनो जमाना में नेपाली, ओही से बहादुर कहल त निमने बा नुँ, कि नइखे ? सब त नोकर के 'कान्छा' आ 'बहादुर' कहता !"

"बहादुर शब्द त ठीके बा, तइयो हमनी के सुनला पर ठीक नइखे लागत ।"

"अच्छा, ओह बात के छोड़ दीं ।" - ऊ कहलन - "आजकाल का कर रहल बानी ?"

ऊ आपन आँफिस के फाइल उल्टावे लगलन । कुछ देर के बाद हम पुछनी -'महेशकुमारजी ! आजकाल विदेश-व्यापार का अपने फर्म के नाम से कर रहल बानी ?"

"हँ त, का करीं ? नेपाल सरकार के नीति कौनो ठीक नइखे । कभी कुछियो होता त कभी कुछियो हो जाता । जइसे-जइसे नीति में परिवर्तन होता, हमनीओ के आपन व्यापार में परिवर्तन करेके पड़ता । रउआ मालूम बा, पहिले एक सय साठ प्रतिशत के भाव में इम्पोर्ट लाइसेन्स खरीद के हमनी काम कइले बानी । अब सरकारी नीति बदल गइल । एक्सपोर्ट के बोनस ना दवेके हिसाब लाग गइल । कहाँ से हमार काम चली ? जइसने सरकार के नीति में परिवर्तन होता, हमनीओका ओइसहीं करतानी । एही से अपने फर्म रजिष्ट्रेशन करइनी । आपन जरूरत के माल खुदे मङावतानी । लाइसेन्स अपने नाम से बनावतानी । काम त चलावही के पड़ता । कहीं, का करीं ?"

हम उनकरा से पुछनी - "सरकार के नीति में परिवर्तन होत रहता का ? एगो कौनो ठोस नीति नइखे रहत ?"

ऊ जबाब देलन -"कहाँ एगो नीति रहता ? कभी बोनस पर लाइसेन्स देता त कभी डॉलर के बारह आ सोरह कके दूगो विनियम रेट कायम कके इम्पोर्ट फ्री करता । कभी सोरह के घटाके चौदह करता । कुछियो करिहन हमनी व्यापारी लोगन के नोकसान ना कर सकेलन । हमनीए: के सलाह अनुसार त सब होला !"

हम उत्सुक होके पुछनी -"केकर सलाह अनुसार ?"

"हमनी के ग्रूप के सलाह अनुसार ।"

"रउआ लोगनी के ग्रूप कइसन बाटे ?"

ऊ उपहासपूर्ण ढंग से हँसते कहलन -"ई कौनो रउआके देखेवाला ग्रूप थोड़े ह ? हमनी नेपाल में कइसे टीकल बानी ? रउआ लागता कि हम अकेले काम कर रहल बानी ? हमनी बड़का बड़का व्यापारी लोग के एगो ग्रूप बाटे । ओ में शक्तिशाली व्यक्ति सब भी बाड़न । हमनी के जरूरत पड़ला पर छोटा-बड़ा सरकारी कर्मचारिओ के मिलावतानी । हमनी के विशेष भेंटघाट टेलिफोन से होला । रउआ के हम ग्रूप ना देखा सकतानी ।"

उनकरा कहे अनुसार नेपाल के व्यापार ओकनीए: के मुट्ठी में बाटे । ओकनी कुछियो कर सकेलन । उनकर बेधड़क कहल सुनके हम उनकरा बात में कौनो शंका करेके जगहे ना देखतानी । खुद आज आपने आँख से सरकारी कार्यालय में उनकरा भेंटल इज्जत देखले बानी । ऊ हमरा के 'हमार आदमी' कहला के भरमें काम खतम होखेके बातो बतइले रहलन । एही से ई नइखे, ना हो सकता कहेके पक्ष में सोचेके बात ना रह गइल । हम टकटकी लगाके उनकर बात सुन रहल बानी ।

ऊ कहते जा रहल बाड़न -"रउआ देखनी आज के हमार काम ? हमरा पहुँचते सब काम हो जाता । हमनीका कौनो काम में देरी भइल ना देखेके चाहतानी । हमनी सब हाकिम लोगन के आपन काम के विषय में फोन से कह देतानी । काम तुरन्ते सम्पन्न हो जाता ।"

ऊ कहते जा रहल बाड़न -"हमरा बुझाता, राउर काम ओ ऑफिस में बहुत दिन से लटकल बाटे । कौन काम बाटे, हमरा के कह सकतानी ?"

ऊ स्पष्ट होके सब बात बता रहल बाड़न तब हम आपन काम के छिपावल उचित ना देखनी आ कहनी - "काम त लमहर नइखे । हम एगो काम खातिर तीन सय पचीस रोपेया जमा कइले रहनी । नियम से ऊ काम ना भइल से हमरा जानकारी भेंटल रहे । काम ना भइला के बाद धरौटी राखल रोपेया फिर्ता पावेके नियम बाटे । इहे पइसा फिर्ता लेवे गइल रहनी ।"

"केतना बेर गइनी ?"

"बहुतो बेर गइनी ।"

"बहुतो बेर के मतलब चार-पाँच बेर ?"

"ना, ओहु से बहुत बेसी बेर ।"

"तब त, रउआ आसानी से ना पाएब । इयाद करीं, रउआ पावेवाला रोपेया में से दस पन्द्रह प्रतिशत ओकरा के देवेके मंजुर करतानी त तुरन्ते पा लेहम् ।"

"काहे, आपनो रोपेया लेवे में ओकरा के देवेके परी ?"

"का करेम ? राउर ऑफिस के नियमे ओइसने बाटे । देवेके मंजुर करीं भा सब छोड़ दीं ।"

"हम ओइसन बात कइसे कार्यालय में करेम ?"

"सोझे कहीं भा घुमाके कहीं । रउआ जब तक ले ना कहेम ऊ ना दी । ना लेके कामे ना करी । ऑफिस में अकेला भइला पर कहीं भा सड़क पर मिलके कहीं । ओतना कहला पर मन्तर फुकल लेखा काम हो जाई । हम त एतहीं बोलेवा लेतानी आपन काम खतिरा ।"

ऊ जौन व्यवहार कर रहल बाड़न से हम ना कर सकतानी । उनकरा जानकारीवाला बात हमरा मालूम नइखे । एही से त उनकरा में आ हमरा में बहुत अन्तर बाटे । ऊ जे प्रगति पांच बरीस में कइले बाड़न, हमरा जिनगीभर में ना होई । ऊ हमरे भलाई खातिर कहले बाड़न । बाँकिर उनकरा लेखा करेके हमार साहस नइखे । साथे आपन क्षमता से बाहर के बात हम कइओ ना सकतानी । यही सन्दर्भ में हम उनकरा के कहतानी - "का राउर कामे खतिरा बोलइला पर सरकारी कर्मचारी इहवें आ जाता ?"

ऊ हँसके कहलन -"अरे ! का कहतानी : आवही के परी ! ना अइला से ओकर कामे ना चली । केतना ऑफिस के आदमी के हमनी तलब देके

रखले बानी । हमरा कहेके मतलब सरकारी तलब ना, हमनी के काम करता ओकरा खातिर हमनी से मिलेवाला तलब । यदि हमनीका अलग से तलब ना देहम त हमनी के कामे देर से होई । देरी भइल कि काम बिगड़ गइल । व्यापार में जल्दी-जल्दी काम होखेके चाहीं । अच्छा, रउआ कहीं, हमनी के सम्पर्क के आदमी अभी बोला दीं ? हमनी के बोलइला पर सब काम छोड़के इहाँ आ जाई । ओह में त ओकरो फायदा बा । हमनी जेतना बेसी बोलाएम ओतने बेसी पइसा ऊ पाई । का बात करतानी रउआ ?"

टेलिफोन के घंटी से उनकर बात रुकजाता । ऊ टेलिफोन में बात करे लागताड़न -'हेलो .....केतना ..... दस लाख ..... ठीक ..... ठीक ..... एक लाख घाटा ..... का कुछियो भइल ..... हँ ..... ठीक ..... अच्छा !"

उनकर टेलिफोन के बातो ना खतम भइल रहे गरमे गरम कॉफी टेबुल पर आजाता । टेलिफोन रखते हमरा कॉफी लेवे खातिर हाँथ से ईशारा कइलन । कॉफी के कप हाँथ में लेके हम कहतानी -"महेशकुमारजी ! साँचों लेखा रउआ इहाँ कौनो सरकारी कर्मचारी के बोला सकतानी ?"

"रउआ हमरा पर अविश्वास कइनी ?"

"अविश्वास त नइखी करत मगर कार्यालय-समय में सरकारी कर्मचारी रउआ इहाँ कइसे आई, एह पर हमरा शंका जरूर बाटे ।"

"अइसन बा त कहीं कौना आँफिसवाला के बोलाईं ?"

उनकर बात से हम आउर आश्चर्यचकित हो गइनी । ऊ हमरा के कौन आँफिस कहके पुछ रहल बाड़न । एकर मतलब सब आँफिस से उनकर सम्पर्क बाटे । अब हम कौना आँफिस के कहीं, हमरे मुश्किल हो गइल । हम फेर उनकरा से पुछनी - "कौनो आँफिस के ? मतलब नेपाल में जेतना आँफिस बा सब आँफिस के ?"

"ओइसन नइखे ! रउआ कहेम युनिभरसिटी के मास्टर के बोलाई, से नइखे । हमनी के व्यापार से सम्बन्धित सब आँफिस से हमार मतलब बाटे ।"

तत्काल दिमाग में इहे कार्यालय के ख्याल आइल जौना कार्यालय में आज हम गइल रहनी । हम कहनी -"हमनी के जौना कार्यालय में भेंट भइल रहे तौने कार्यालय के आँफिसर के बोलाईं, फाँटवाला के ना !"

"कौना आँफिसर के ?"

फेर हम मुश्किल में पड़ गइनी । केकरा कहीं ! केहु के त चिन्हले नइखीं । हम विचार कइनी, फाँटवाला से उपर के व्यक्ति से परिचय भइला पर त आपन तीनसय पचीस रोपेया भी मिल जाइ, इहे सोचके हम कहनी - "फाँटवाला से उपर के कौनो आँफिसर के बोलाईं, जे रउआ कहला पर तुरन्ते आ जइहन ।"

ठीक बा ! राउर शंका दूर कइए देतानी कहके ऊ टेलिफोन मिलइलन । टेलिफोन में ऊ कहलन -"हेलो ..... के बोलतानी ..... आँफिसर साहेब लोगन में केहु बाड़न ? ..... होई ..... हम महेशकुमार, न्यूरोड से .....रउआ हमरा इहाँ अभी आ सकतानी ? ..... आईं, हम इहवें बानी ।"

टेलिफोन राखके ऊ कहलन -"दू-तीनजने आँफिसर मिटीङ में बाहर गइल बाड़न । एगो बाड़न, उनकरे के बोलइले बानी ।"

महेशकुमार हमरा से व्यापार के सम्बन्ध में बात उठइलन । जौना काम के विषय में ऊ हमरा से सलाह करेके चाहत रहलें, ओही विषय में ऊ बात शुरू कइलन । ऊ हमरा प्रति सहानुभूति राखके विदेश-व्यापार शुरू करेके सलाह देवे लगलन । ऊ ईहो कहलन - 'अभी के समय में हमनी से मिलके काम कइला से बहुत फायदा होई ।"

उनकरा अनुसार हमरा सरकारी नीति के विरुद्ध कुछियो करेके बात रहे, जे हम ना कर सकत रहनी । जब हम उनकर पूरा आशय बुझ गइनी, तब हम उनकरा के सोझे जबाब देनी -"ई हमरा से ना हो सकेला, ओह प्रकार से रोपेया कमाएके हमरा जरुरतो नइखे ।"

हमार जबाब से ऊ चूप ना रहलन । ऊ आउर जोश में आके रोपेया के महत्व के विषय में हमरा के हिन्दी भाषा में बहुत समझइलन ।

हमनी के बीच में बातचीत होते रहे तबे एकजने अपरिचित व्यक्ति कोठली में प्रवेश कइलन । महेशकुमार उनकर स्वागत करते कहलन -"आईं, आईं ! बहुत जल्दी आ गइनी, बइठीं !"

महेशकुमार परिचय करइलन । ऊ त ओही कार्यालय के शाखा अधिकृत शिवराम रहलन, जौना कार्यालय में हम बीसो दिन दौड़नी तबो

कौनो कर्मचारी के हमरा से एक मिनटतक बोलेके फुर्सत ना रहे । महेशकुमार हमार काम ना होखेके विषय में कहलन आ हो सके त ऊ काम कर देवेके सेहो कहलन ।

अधिकृत हमरा ओरी घुम के पुछलन -"केतना दिन भइल काम ना भइला ? केकरा फाँट में बाटे ?"

"करीब तीन महिना हो गइल हमरा रोपेया बुझइला आ हमरा के रोपेयाफिर्ता कर देहम कहला भी अढाई महिना हो गइल होई । बहुतो बेर कार्यालय में गइनी । फेर बिहने बोलइले बा । बिहान काम होता कि ?"

"बिहने रउआ कार्यालय में आएब त पहिले हमरा से भेंट क लेहब । कौनो फाँट में रहला पर हम काम सम्पन्न करवा देहब ।"

महेशकुमार हमरा के कहे लगलन -"रउआ निश्चिन्त हो जाईं, काम हो गइल । उनकर कहल लेखा आँफिस पहुँचते उनकरा से भेंट क लेहब, सब काम हो जाई ।"

अधिकृत महेशकुमार के बात के समर्थन करते कहलन -"हँ हँ, सब काम हो जाई । चिन्ता करेके बाते नइखे ।"

जे बात हम मन से ना चाहत रहीं, इहे हो गइल । हमरा नाहिओ चाहला पर ई वातावरण अनायासे सृजित हो गइल ।

अधिकृत आ महेशकुमार के बीच आपस में कुशलक्षेम भइल, अइसन बुझाइल जइसे दुनूमें खूब मित्रता बाटे । आज कार्यालय गइल रहनी मगर डाइरेक्टरसाहेब से भेंटे ना भइल बात भी महेशकुमार अधिकृत के कहलन । आउर कौनो काम के विषय में अधिकृत के पुछला पर महेशकुमार कहलन - "इनकरे काम खतिरा मात्र रउआ के दुःख देनी ह ।"

अधिकृत के चाहे कौनो कारण से बौलइले रहल होइहन मगर चालाक महेशकुमार एतने कहलन -"अइसन बात फोन से कहल ठीक नइखे एही से रउआके दुःख देनी ह ।"

प्रतिउत्तर में ऊ कहलन -"ठीक कइनी ! कौनो भी बात भेंटघाट में कइल निमन होला ।"

महेशकुमार उनकरा के चाय पीएके आग्रह कइलन, मगर ऊ चाय बिन पीले जाएके विचार व्यक्त कइलन । महेशकुमार के उनकरा से कौनो

काम ना रहे । ऊ त हमार शंका निवारण करे खातिर मात्र अधिकृत के बोलइले रहलन । संयोग से इहे कार्यालय पड़ गइला से हमार काम हो गइल । अन्यथा एकर कौनो जरूरते ना रहे ।

महेशकुमार अधिकृत के बिदा करते कहलन -"बिहान साँझ में हमरा घरे रउआ आईं, डाइरेक्टर साहेब खातिर कुछ सामान पेठावेके बाटे ।"

"बिहान साँझ में ? होई ।" कहके अधिकृत चल गइलन । कुछ देर के चूप्पी के बाद महेशकुमार कहलन -"देखनी नोट के तागद ?"

हमरा मुँह से एको शब्द नइखे निकलत । हम टकटकी लगाके खाली उनकरे के देख रहल बानी । ऊ जे कहलन से सत्य बाटे । हम मनेमन काल्ह के आ आज के महेशकुमार के विषय में सोचे लगनी । दुनू महेशकुमार हमार आँख के चारू ओरी घूम रहल बाटे । एगो विदेशी दोसरा के देश में आके जे हिम्मत आ साहस देखा रहल बा, ऊ अनुकरणीय बा कि नइखे ? हम निर्णय ना करेके स्थिति में बानी । हमार चूप्पी भंग करत ऊ कहलन -"रउआ कुछियो करीं । ना करेब त पाछे पछताएब । राउर बेटा-बेटी बाद में सरापी रउआ के ।"

हम धीरे से कहनी -"कुछ करेके इच्छा त हमरो बा मगर रउआ जे कहले बानी से करेके हमरा हिम्मत नइखे । बल्कि दोसर सरल आ उपयुक्त काम बताईं, हम करे खातिर तेयार बानी । रउआ साथे मिलके करेम भा अेकेले करेम, ऊ बाद में विचार करेम । व्यापार ना कके त हमरो घर चलल मुश्किल बा ।"

ऊ हमार बात काटके कहलन -"रउआ सीधासादा बानी, नोट ना बना सकेम । टेंढ़े अङुड़ी से कौनो चीज निकलता । हम जे कहतानी, रउआ मानी । ना मानेब त कुछे दिन में गाड़ी बिक जाई । कुछ बरीस में घर बिक जाई । बिहान बच्चाबच्ची के दुःख देवेके चाहतानी ? आज त रउआ पेट्रोल ना खरीदेके अवस्था के कारण गाड़ी चढ़े ना सकनी ह । अइसन अवस्था में बिहान गाड़ी मेन्टेन करे सकेम । ई हमरा विश्वास नइखे । ऐही से आँख मून के लाग जाईं ।"

उनकर बात पर हम प्रतिक्रिया जनइनी -"देखीं, महेशकुमारजी ! राउर कहल बात हम मानतानी जे पइसे से सबकुछ होला तइयो रउआ जे कहले बानी से हम करेके तेयार नइखीं । कारण, ई जन्मस्थल बाटे । इहवाँ

हमार इष्ट-मित्र, हित-कुटुम आ चिन्हल-जानल लोग सब बाड़न । रोपेया के कारण यदि हमरा इज्जत में दाग लाग गइल तब रानीपोखरी में जा के डुबेके अलावा आउर कौनो रास्ता ना रहजाई । आपन समाज में घृणा के पात्र होके हम जीएके नइखीं चाहत । ओसे हम साफ काम करेम, जे नइखे ओकरा पाछे ना लागेम । रउआ त आपन देश से बाहर बानी, आपन समाज से बाहर बानी । राउर एकेगो लक्ष्य रोपेया कमाएके बाटे । रउआ चौबीसो घंटा ओही में लागल बानी । मान लीं कुछियो खरावे हो गइल तइयो रउरा इज्जत में दाग ना लागी काहेकि रउआ के देखेवाला केहु नइखे ? रउआ धन के थइली लेके आपन घर में जाएम त राउर आउर इज्जत बढ़ जाई । एही से महेशकुमारजी ! रउआ जेतना निश्चिन्त होके काम कर सकतानी, हम नइखीं करे सकत । एकरा के हमार कमजोरी बुझीं भा नैतिक सिद्धान्त !"

हमार बातो ना समाप्त भइल रहे कि दू जने कोठली में प्रवेश कइलन । महेशकुमार के वर्ग के ऊ दुनू व्यक्ति टेबुल आगे के कुर्सी पर बइठके अपने भाषा में व्यापार के सम्बन्ध में बतिआए लगलन । हम चूप होके तीनू जनेके देखे लगनी । करीब पाँच मिनट के बातचीत के बाद ओकनी के ध्यान हमरा ओरी आकृष्ट भइल । एकजने महेशकुमार से 'ई के बाड़न ?' कहेके उनकरे भाषा में पुछलन । हम नाबुझल लेखा कइनी । महेशकुमार अपने भाषा में कहलन -"ई स्थानीय आदमी बाड़न इनका से बहुत काम लेल जा सकता । मुर्ख लेखा ना बुझ रहल बाड़न, समझा रहल बानी । यदि ई साथ दीहन तब हमनीका एह साल बहुत कमा सकतानी । जेकरा-सेकरा से बात कइला पर हमनीए के फँसादी । हम इनकरा मार्फत काम करेके सोचले बानी । इनकरा के हम बहुतो बरीस से चिन्हत बानी । रोपेया में धोखा ना होई ।"

दोसर कहलन -"देखला पर हमरो ओइसने लागता ।"

एतना बात कइला के बाद महेशकुमार हमरा दुनू जने से परिचय करइलन -"ई लोग अभी नेपाल के बड़का व्यापारी बाड़न -शान्तराम जेटिया आ किसुन केवडीवाला ।"

शान्ताराम कहलन -"बड़का व्यापारी त महेश बाड़न, हमनीका नइखी ! हमनी त छोट व्यापारी बानी सन ! अपना के बड़ा ना कहके हमनी के बड़ा कहेलन ।"

महेशकुमार दुनू जने का साथे बर्मी भाषा में बात करे लगलन । हम बुझ गईनी, ई तीनू एके मूल के बाड़न । शायद साथे काठमाण्डू आइल बाड़न । करीब पन्द्रह मिनट तक बात कइला के बादो हम कुछियो ना बुझे सकनी । उनका लोगनी के गोप्य बात समाप्त हो गइला के बाद अथवा हमरा निमन ना लागल होई सोचके महेशकुमार हिन्दी में बात करे लगलन ।

किसुन के पानीजहाज से आइल समान हेरा गइल बाटे । अन्डरइन्भ्वाइस में ले आइल माल हेरा गइला के कारण इन्स्यारेन्स में क्लेम कइला से दामो ना उठ सकेला । पचास लाख के माल के पाँच लाख के इन्भ्वाइस बना के मडइला पर इन्स्योरेन्स कम्पनी त पूरा जाँच कइला के बाद पाँचे लाख दी, एह से क्लेम कइले बेकार हो गइल बा ।

ओह लोग के बात सुनके हमार त होशे गुम हो गइल । सोझे पैंतालीस लाख घाटा हो गइल आ किसुन केवडीवाला कौनो चिन्ता ना कके हँसते-हँसते बतिआ रहल बाड़न । हमार त एको रोपेया हेरा गइला पर हम ओतना प्रसन्न ना रह सकेम जेतना प्रसन्न पचास लाख गुम हो गइला के बादो केवडीवाला बाड़न । उनकरा लोगन के अनुसार उहो पाँच लाख इन्स्योरेन्स कम्पनी से क्लेम ना करेके विचार बा । शान्तराम के केवल दस प्रतिशत गुम होगइल रहता । उहो काल्हे वीरगंज भन्सार में माल अइला पर मालूम भइल रहे । शान्तराम के भी सात लाख के नोकसान से कौनो फरक पड़ल लेखा नइखे बुझात ।

माल हेरइला के उल्लेख करते केवडीवाला कहलन -"हङकङ से चलल जहाज तीन महिना तक गायब रहल, तब हम रोपेया के मोह त्याग देले रहीं । कोरिया में अनलोड हो गइल भी हो सकता । मगर कइसे खोजी ? कोरिया के लोड क्लियर कइला के बादो चल देला पर उहवाँ कइसे माल मिली ? एही से ओकर मोह कइले बेकार बा ।"

नेपाल में एतना बडका व्यापारी बा, हमरा मालूमे ना रहे । ई काठमाण्डू के देखला पर मात्र छोट लागता, इहवाँ के व्यापारी के छाती त ओ से बहुत बड़ा बा ।"

उनकर चित्त बुझावेके बातो सुननी । केवडीवाला ओभरइन्भ्वाईस में जेतना कमइले रहलन ओकर दसो प्रतिशत नोक्सान नइखे भइल । शान्तराम के त चिट्ठे पर गइल बाटे पहलहु कमइलन आ अबो कमइलन ह । बात ना

चललो पर भी हम बुझ गइनी जे महेशकुमार के अवस्था भी शान्तकुमारे जइसन बा ।

एतने में फोन के घंटी बज गइल । महेशकुमार शान्तराम के फोन देत कहलन -"तु इहवाँ रहब से कहके आइल रहलऽ?"

फोन में बात करते शान्तराम बोललन -"हेलो .. का भइल शर्माजी ? ..... काम ना करी का ? ..... कहीं ना साले के दू लात खइहें ..... नइखे मानत ? साले के तीन लात से बेसी ना दीं ..... ओइसन बा त हम इहाँ महेश के आँफिस में बानी, चल आईं ..... राख दीं ?"

शान्तराम फोन रखते कहलन -"साले लोगन के मुँह बढ़ गइल बा ? पहिले हजार से होखेवाला काम अभी लाख से ना होता ?"

केवडीवाला कहलन -"तु ही त लाख के चाल खेलेके सिखइले रहलऽ त खेलऽ ? दस लाख कमाताड़ त एक लाख देताड़ ?"

शान्तराम कहलन -"नब्बे प्रतिशत खाहु में मुश्किल बा । तोहनी के मालूमे बा कि तीन महिना आगे सिमेन्ट के लाइसेन्स के सम्बन्ध में दस लाख में तय हो गइल बात पसर के सचिव, मन्त्री सब तरफ से दबाव पड़ला के बाद तीस लाख में निर्णय भइल रहे । अब मुनाफा के हिसाब कइला पर पचीस लाख से बेसी बचत ना होई जइसन हो गइल ।"

ओकर बात काटके महेशकुमार कहलन -"अइसन बा त पचीस लाख में हमही साकार लेतानी, देबऽ ?"

शान्तराम हँसते कहलन -"कइसे दे दीं ? महिनो से बैंक में एल.सी. खोले में लागल बैंक कमीशन, रोपेया के ब्याज, कामदार के मजदूरी, आ फुटकर खर्च के दे दी ? हमार मतलब सब काटके पचीस लाख में तोहरा के दे सकतानी । तू सकरबे करबऽ त तीस लाख जे गदहा लोगन के खिअइले रहनी, बैंक-कमीशन आ हिसाब से तीन महिना के ब्याज सहित दस लाख कामदार के मजदूरी छोड़ दीं, आउर फुटकर खर्च पाँच लाख, हमार मुनाफा पचीस लाख आ दस लाख उपर के सलामी सहित जम्मा सत्तर लाख देके सकार ल ! म देवेके तेयार बानी ।"

केवडीवाला महेशकुमार के उत्तेजित कके कहलन - "महेश ! सत्तर लाख में तू सकार लऽ ! तोरा शतप्रतिशत मुनाफा होई । ओह में तोरा चिन्ता करेके कौनो बात नइखे । तोहरा मालूम बा ? सिमेन्ट के भाव वर्ल्डमार्केट में बढ़ेवाला बा । बाहर सिमेन्ट के भाव बढ़ गइला पर इहाँ के सिमेन्ट कारखाना के भी भाव बढ़ावही के परी । से ना होई तब हमनीका भाव बढ़ावेके उपाय करेम । शान्तराम के सिमेन्ट पुरना भाव में आ गइल बाटे । सिमेन्ट के भाव पन्द्रह से बीस प्रतिशत तक बढ़ जाई । ओ समय में तोहरा खुद नाफा असी से नब्बे लाख हो जाई । ओह में चिन्ता लेवेके कौनो बाते नइखे । नेपाल के कूल आवश्यकता के तीसो प्रतिशत सिमेन्ट कारखाना नइखे पूरा करे सकल । सत्तर प्रतिशत त तोरे हाँथ में रही । भाव हमनी के जइसे भी तय कर लेहम । निर्धक्क होके साकार लऽ !"

महेशकुमार कहलन -"किसुन ! तू आधा हिस्सा लेवऽ ? यदि तू आधा लेवऽ त हम साकार लेतानी ।"

केवडीवाला तुरन्ते सकार लेलन । शान्तराम के तुरन्ते लाखो के फायदा हो गइल । बात सुनके हमार मनस्थिति बिगड़ गइल । हमरा ई व्यापार ना होके गप्प हाँकल लेखा लागल । शान्तराम लम्बा साँस लेत कहलन -"पइसा हम कब पाएम ?"

महेशकुमार आ केवडीवाला आँखे आँख में बात कइलन । ओतने में महेश चेकबुक निकालके शान्तराम के नाम में दस लाख के चेक अग्रिम पेश्की के रूप में दे देलन ।

ओही बीच में एक व्यक्ति कोठली में प्रवेश करता । हम उनकरा के देखते चिन्ह गइनी । ऊ तोयनाथ शर्मा बाड़न । करीब पैंतालीस-पचास बरीस के शर्माजी के हम आदरपूर्वक नमस्कार करतानी । ऊ हमरे लगे के कुर्सी पर बइठलन । शर्माजी कुछ बरीस पहिले सरकारी नोकरी में रहलन । ऊ उपसचिव, सहसचिव आ एक-दूगो कार्यालय के डाइरेक्टरो भी हो चुकल रहलन से हम जानतानी । जहाँ तक हम जानतानी, शर्माजी आपन समय में एगो ईमान्दार आ दक्ष प्रशासक के रूप में गनल जात रहलन । हम सोचनी, शायद शर्माजी अवकाश-जीवन व्यापार में बीता रहल बाड़न ।

शर्माजी आके बइठते ब्रीफकेस से कुछ कागजात निकालके शान्तराम के देलन । शान्तराम कागज देखे लगलन । शर्माजी हमरा ओरी घुमके कहलन -"भाई ! ठीक बा ? इहवाँ कइसे ?"

"ठीक बा, महेशकुमारजी लगे आइल बानी ।"

"कामो कर रहल बानी कि ?"

"ना, काम त कौनो नइखे करत ।"

"कुछ काम त करेके चाहीं नुँ !"

"देखीं, कहते मातर त ना होई ।"

शान्तराम बीचे में बोललन -"शर्माजी ! उनकरा के चिन्हतानी । हमनी के शर्माजी के ना चिन्हल आदमी काठमाण्डू में कौनो नइखे ।"

शान्तराम फेर शर्माजी से पुछलन -"तीन लाख से नइखे मानत का ?"

"हजूर ।"

"तब केतना माङता ?"

"दस ।"

"अरे, ओतने काम खातिर दस लाख ! ना करेम, छोड़ दीं । गोल्छे करिहन !" शान्तराम झन्झट मानके कहलन - "एकनी के सोचेले होइहन हमनी के काम नइखे, एही से हमनीका ओकनी के पीछे-पीछे दउर रहल बानी । हमरा काम के कमी नइखे ? दस लाख हम ना देहम ! दू बरीस पहिले केडिया एक लाख में मिलइले रहलन । पन्ह साल अढ़ाई लाख में गोल्छा मिलइले रहलन । एह साल तीन लाख दे रहल बानी । हमरा के ना दिहन त ना करेम शर्माजी ! ना करेम !"

शर्माजी धीरे से कहलन -"हमनी के एह साल केहु तरे लाइसेन्स निकालेके चारू ओरी से दाल जमा कईनी ह । लाइसेन्स दोसरा के हाँथ में होई तब त भावो उहे निर्धारण करिहन ! ओकरा भाव में दाल ना देके हमनी एक साल गोरिओके त ना राख सकतानी । फेर सिंगापुर के पार्टी से हमनी के दू लाख डॉलर एडभान्सो त ले लेले बानी । हमरा विचार से त एह साल के लाइसेन्स हमनी के ना छोड़ेके चाहीं ।"

शर्माजी के बात सुनके शान्तराम सोचे लगलन । ऊ आवेश में आके जे ना चाहीं कहले रहलन, ओ पर अड़ेके स्थिति में नइखन । कुछ सोचके ऊ कहलन -"दस लाख में नीचा से उपर तक सब खातिर मङले बा कि आउर कौनो फुटकरो खर्च लागी ?"

"आउर फुटकर खर्च शायद ना लागी ।"

"राउर ओइसने विचार बा त आठ लाख तक में तय कके आईं मगर निकासी लाईसेन्स तुरन्त दवेके परी ।"

शर्माजी कहलन -"ठीक बा, हम कोशिश करेम । ओतना तक में त हो जाएके चाहीं । अभी हम जातानी !"

शर्माजी हमनी से बिदा होके चल गइलन । शर्माजी के गइला के बाद हम शान्तराम - से पुछनी -"सेठजी ! शर्माजी का साथे राउर पार्टनरशिप बा ?"

ऊ हँसते जबाब देलन -"ऊ त हमार नोकर बाड़न ।"

आश्चर्यित होके पुछनी -"नोकर ?"

"हँ, हँ नोकर ! कामदार ! हमार कार्यालय से सम्बन्धित काम करेलन । पुराना साथी बाड़न । उनकर नोकरी छूट गइल । पेन्सन से खर्च नइखे चलत । आपन दुःख हमरा के बतइलन त हमरा उनकरा प्रति दया लाग गइल । हम बहुत रोपेयात लब देके काम में लगइले बानी ।"

"शर्माजी केतना तलब पावेलन ?"

"अठारह सय महिना के देले बानी । ओकरा अलावा घुमेफिरे खातिर एगो गाड़ी देले बानी । रोपेया सब उनकरे हाँथ से खर्च होता । बहुत ईमान्दार बाड़न ।"

हम मनेमने सोचनी, काहे शर्माजी के अइसन कुबुद्धि हो गइल ? अठारह सय महिना में खाके दोसरा के अठारह लाख कमाएके मौका दे रहल बाड़न ? एगो प्रभावशाली प्रशासक कइसे व्यापारी के नोकर बन गइलन ?

हम आपन मन के उत्सुकता शान्त करे खातिर शान्तराम के धीरे से पुछनी -"सेठजी ! रउआ इहाँ नागरिकता ना लेके कइसे विदेश-व्यापार करतानी ?"

हमार बात सुनके ऊ हमरा से एकदम खिसिआके कहलन -"रउआ मूर्ख बानी ! का बात करतानी हमरा साथे ? ई प्रश्न आज तक केहु पुछे ना सकल, रउआ पूछेवाला के बानी ?"

उनका हमरा साथे गलत ढंग से बोललो के बाद हम ओके कौनो वास्ता ना कके हँसते कहनी -"सेठजी ! रउआ मूर्ख समझीं भा अनजान, हमार प्रश्न ठीक ना लागल त हम कहल वापस ले तानी । एह में रउआ अन्यथा ना समझीं ।"

ऊ जोश में आके कहे लगलन -"इहाँ के नागरिक ? के अनागरिक ? नोट जेकरा साथ में बा ऊ नागरिक बाटे ? नोट जेकरा साथ में नइखे ऊ अनागरिक बाटे ? इहाँ के रुँगटा भा अग्रवाल, दुगड भा कुगड, कौनिहार भा रौनियाँर, टीबड़ेवाल भा केवडीवाला के इहाँ घर नइखे ! केवल एह लोग के इहाँ कारोबार बा । नोट बनावेवाला जगह बा ई । नोट बनावेलन, हँ बाद में चल जालन, इहवाँ एह लोग के जौन घर देखतानी, से त केवल किराया बँचावेके तरीका मात्र बा । जयपुर जाईं, गाँवे-गाँवे घुमीं, तब रउआ मालूम होई ओकनी के वास्तविक घर कहाँ बा ? एही से रउआ खातिर हमार ई सलाह बा कि केहु के ई नागरिक हउअन कि ना हउअन, ई पूछेके कोशिश ना करीं ।"

महेशकुमार समझावते कहलन -"शान्तराम ! शान्त हो जा । तोरा ब्लेडप्रेशर बा । बहुत बोलल ठीक नइखे । ई कौनो खराब भाव से ना पुछले बाड़न । ई तोरा के नाचिन्हले रहलन ह एही से उनकर पुछल ठीके बा ।"

शान्तराम शान्त ना होके आउर खिसिआके कहे लागता -"रउआ मालूम बा, राउर नेपाल में हमनीका आके फरेन ट्रेड केतना ऊँचा पहुँचा देनी ? एतना ऊँचा त एह से पहिले कबो ना रहे । जे पइसा आज मार्केट में देखले बानी, ऊ सब हमनी के कारण से भइल बा । राउर सरकारी रेकर्ड में जाके देखीं, दस बरीस एने केतना फरेन ट्रेड बढ़ गइल बाटे ! हमनी के इहवाँ के भोटिया लोगनी के ओह काम में शरीक करइले बानी । आज राउर काठमाण्डू के हडकङ बना देले बानी । हमरा से प्रश्न कर रहल बानी नागरिकता के सम्बन्ध में ?"

महेशकुमार ओकर बात बीचे में काटके कहलन - "शान्तराम ! तू बेसी ना बोलऽ । उनकरा के तू नइख चिन्हले । उनकर बात कौनो निगेटिभ नइखे । तू बुझेके प्रयास कर, बेसी ना बोल ।"

शान्तराम फेर मन के गुब्बार निकालते कहता - "हम अइसही बइठल बानी एह देश में ? हमरा अनुरोध कके राखल गइल बाटे । हम प्रति बरीस बीस लाख आयकर बुझावतानी । हमरे जइसन बुझावल आयकर मात्र के हिसाब कइला से करोड़ो से बेसी होता । हमनीका सरकारी खजाना भर देले बानी । ऋइसही नइखीं स बइठल ।"

महेशकुमार फेर ओकरा के रोकते कहलन -"हो गइल - हो गइल, बेसी बात ना कर ! तू बीस लाख आयकर बुझइले बाड़ त करोड़ो त कमाइलहु बाड़ । तू एह देश पर कौनो एहसान नइख कइले । तोरा पर बल्कि ई देश एहसान कइले बा । अब बेसी ना बोल । उनकरा के ई सब बात बतावेके जरूरत नइखे । चूप हो जा !"

शान्तराम महेशकुमार ओरी घुमके कहता -"का कहले बाड़ ? ई देश एहसान कइले बा हमनी उपर ? कौना आधार पर तू कहले बाड़ ? हमरा के बताव ।"

महेशकुमार बात समाप्त करेके चाहत बाड़न मगर शान्तराम महेशकुमारे उपर गुस्सा गइलन । शायद महेशकुमार के खराब लाग गइल होई शान्तराम के हमरा बेज्जत करत देखके । काहेकि आज हम महेशकुमार के अतिथि के रूप में उनकरा ऑफिस में बानी ।

शान्तराम के महेशकुमार काठमाण्डू के पुरना बितल दिन सब के विषय में समझावते कहलन -"आज पशुपतिनाथ के कृपा से एतना पइसा कमइले बाड़, घमण्ड करेके ! ई देश तोरा पर एहसान कइले बा, दोसर ढंग से ना सोचेके । बल्कि एतना कह कि जिनगी के सब से आराम के दिन काठमाण्डू में बितल बा । हम त पशुपतिनाथ से इहे प्रार्थना करतानी कि पूरा जीवन अइसने व्यापार में गुजरत रहो । इहाँ के जइसन नोट छपाई संसार के कौनो देश में नइखे ।"

शान्तराम कुछ देर तक कुछियो ना बोललन । महेशकुमार के बात के केवडीवाला भी दोहरावते आउर ओ में जोड़के कहलन -"इहाँ के आदमी में चेतना ना आवे तक ले हमनीका जमा कर लेवेके चाहीं । "

कुछ देर चूप रहला के बाद शान्तराम बोले लागता -"एह देश के आर्थिक स्तर उठावे खातिर इहाँ के बड़ा-बड़ा आदमी हमनी के आवश्यकता महशूस कइलन । एही कारण से हमनी इहाँ टिके सकल बानी । दुनू तरफ के फायदा कके हमनी आपन चालचलन अनुसार काम कर रहल बानी । ई रउआ ना समझीं कि हमनी आपने फायदा खातिर मात्र इहाँ बइठल बानी । एह देश के आर्थिक नीति के विषय में रउआ का बुझतानी ? बालु से बनावल घर बा, जे कौनो समय में ढह सकता । एही से ओ में सिमेन्ट लगावे खातिर हमनी के जरूरत बा । रउआ नागरिकता के प्रश्न कइले रहनी, ओ विषय में हम रउआ के स्पष्ट करतानी, सुनी । हमरा नागरिकता लेवे खातिर तीन-तीन बेर अफर आइल, तुरन्ते लेवेके विचार हम ना कइले रहनी । जब बोनस सिस्टम अन्त हो गइल तब हम पन्ह साल मात्र एह देश के नागरिकता स्वीकार कइनी । हम रउए लेखा एह देश के हकदार बानी । बस, एतना समझ लीं अभी हम एह देश के नागरिक बानी ।"

हम हँसते कहनी -"इहे त हम पुछले रहनी । व्यापार नेपाली नागरिक के ही हैसियत से करेके चाहीं । अनागरिक के हैसियत से रउआ व्यापार कइले बानी से हमार मतलब ना रहे । हमार मतलब रउआ ना बुझके ओइसे ही नाराज हो गइनी ।"

हमार जबाब सुनके केवडीवाला कहलन - "इनकर स्वभावे अइसने बा । फेर ब्लड़प्रेशरो बा । तुरन्ते नाराज हो जालन । ई नाराजो होके कहलन तइयो रउआ दुःख ना मानी । हमनीका व्यापारी हईं, केहु से नाराज भइला से कौनो फायदा नइखे ।"

टेलिफोन के घंटी बजता । महेशकुमार टेलिफोन उठाके शान्तराम के देवेलन । शान्तराम के ऑफिस में एगो भूतपूर्व मन्त्री भेंट करे आइल खबर सुनके महेशकुमार से छुट्टी लेके शान्तराम आ केवडीवाला बाहर निकल जालन ।

शान्तराम जाए का बेर में हमरा से कुछियो ना बोले सकलन । आँख से मात्र जाएके ईशारा कइलन । शान्तराम में हम धन के तेजी देखनी । यदि हम महेशकुमार के कार्यालय में ना रहती त हमार होशे खराब कर देतन । का करीं ? अइसने सहेके स्थिति बा ।

महेशकुमार कहलन -"बेकार में रउआ शान्तराम से प्रश्न कइला पर गर्मागर्मी सहेके स्थिति हो गइल बा ।"

हम उनकरा के कहनी -"ई प्रश्न हमार मन-मस्तिष्क में खुलदुली मचा रहल बा, जे हम रउआ से पहिले भी पुछले रहनी । रउआ जबावे ना देनी ।"

ऊ हँसते कहलन -"हँ, हँ, ई बात त रउआ हमरो से पुछले रहनी मगर हम जबाब ना देनी, काहेकि हम बतावेके जरूरी ना समझनी । जब तक ले हम ना बताएम रउआ मालूम ना होई । मालूम ना भइला पर हमार व्यापार गोप्य रही । कौनो व्यापारी के मुख्य बात गोपनीयता बाटे । सब जान जाई त कामे बिगड़ जाई ।"

"ओइसन बाटे त हमरा सुनहु के जरुरी नइखे ।"

"नाहिए सुनल रउआ खातिर ठीक बा । रउआ मालूमे बा हम भारतीय नागरिक बानी । अभी तक ले बानी आगे भी रहेम । हम शान्तराम लेखा गैरकानूनी नागरिकता नइखीं प्राप्त करेके चाहत । यदि हमरा जरूरी बुझाई तब ईमान्दारीपूर्वक आपन देश के नागरिकता छोड़के बइठ जाएम । हम दूगो नाव पर पैर ना राखेम ?"

"बहुत अच्छा विचार बा ।"

"हम त एतने जानतानी कि हमनी के इहवाँ बहुत स्वतन्त्र ढंग से व्यापार करेके मौका प्रदान कइल गइल बाटे । हमनीका जात के पुराना वासिन्दा लोगन भी हमनी के बहुत ज्यादा सहयोग कइले बाड़न । सब क्षेत्र से हमनी के सहयोग मिलता । हमनी एतना घुलमिल गइल बानी कि अब हमनी के केहु अड़ुड़ी ना देखावे सकिहन ।"

ऊ नयाँ काम के सम्बन्ध में जोर देके कहे लगलन -"बहुत अच्छा होई, रउआ हमरा से मिलके काम करीं । रउआ शान्तराम के फुर्ती देखिए लेलेवानी । ई सब नोट के करामात बा ।"

"महेशकुमारजी ! कौनो काम बिना सोचविचार के कइल ठीक नइखे । ओहु में सरकारी-नीति के विपरीत कइल काम त आउर खतरनाक होला, एही से हम आज 'ठीक बा' कहेके पक्ष में नइखीं ।"

"हमरा एतना जोर कइलो पर रउआ नइखीं मानत । रउआ ठन्ढा दिमाग से सोचके हमरा के एक-दू दिन में जबाब देहम् ।"

समय बहुत हो गइल रहे, ओह से महेशकुमार से -'अब हम जातानी' कहनी । ऊ तुरन्ते कहलन -'ठीक बा ! हमार योजना के विषय में विचार कके बिहने खबर दीं ना ।"

हम कुर्सी से उठते कहनी -"बहुत-बहुत धन्यवाद राउर काँफी खतिरा । रउआ अफिस में कुछे समय में बहुत विषय में जानकारी पइनी, ओहु खतिरा धन्यवाद !"

एतना कहके हम दुआरी ओरी चल देनी । हमरा दुआरी पर पहुँचे से पहिले ऊ कहलन -"शान्तराम के बात के माइन्ड ना करेम ! बिहने तक ले पक्का खबर जरूर दीं !"

"कुछियो नइखे, बातचीत के क्रम में अइसने त होला", कहके हम कोठली से निकल गइनी । बाहर के कोठली में तीन जने नेपाली के आपन-आपन टेबुल पर बइठके काम करत देखनी । ओकनी में निमन जान पहचान के एगो लड़की के देखनी । सुश्री शशि राणा के अर्थशास्त्र में एम. ए. कइला के बादो नोकरी ना मिलल रहे । हम ओकरा के देखनी त ओकरा टेबुल के पास जा के पुछनी -"बहिन ! तू इहाँ ?"

"भइया नमस्कार ! रउआ इहाँ कइसे ?"

"महेशकुमारजी से भेंट कके आ रहल बानी । तू इहाँ कब से बाडू ?"

"तीन महिना होखे लागल । एक बरीस से नोकरी खोजत रहनी, बहुत मुश्किल से इहाँ काम मिलल बाटे ।"

"अच्छा, हम जाईं त ?"

"ठीक बा ! भइया नमस्कार !

हम सड़क पर आ गइनी मगर हमार मन महेशकुमार के आँफिसे में बा । उनकरा आँफिस में भइल एक-एक बात हमरा मस्तिष्कमें धूम रहल बाटे । बहादुर नेपाली सब सेवा करेवाला महेशकुमार के ! शर्माजी जइसन अनुभवी नेपाली के सेवा पावेवाला शान्तराम । टेबुल से बातचीत कके लाभ्फर्नाख के कारोबार ! हम अबो रहस्य ना बुझे सकल बानी । हम ओकर वास्तविकते ना बुझे सकनी ।

हम आगे विशालबजार के बोर्ड देखतानी । ई बाजार जब से खुलल, हम ना गइल रहनी । अनायासे हम ओही तरफ बढ़ जातानी । हम बाजार के बीच में पहुँच के चारू ओरी देखतानी । शान्तराम के एके वाक्य हमरा कान में गुँजे लागता -"आज राउर काठमाण्डू के हङकङ बना देले बानी ।"

✠✠✠

बुध के दिन

"भइया ! भइया !!"

हमरा कान में गुँजता । हम अकचका के उठतानी । हमार आँख भाई के डेराइल चेहरा पर पड़ता । ऊ हमरा पुछता -"का भइल भइया ? का भइल ?"

हम कुछियो बुझे ना सकनी, काहे हमरा से पुछता ? का जबाब दीं ? हम घड़ी ओरी देखतानी । पौने छौ बजता । हम प्रायः छौ बजे उठत रहनी । समय से पन्द्रह मिनट मात्र पहिले उठ गइनी । हम सिरहनी उठाके भाई से पुछनी -"काहे ? का भइल ?"

"रउआ केकरा से बतिआत रहनी ह ?" उत्सुक होके भाई पुछलक - "हम इहवाँ कोठली में पइसनी तब रउआ 'नमस्ते हजुर । नमस्ते ! हमरा के ना चिन्हनी ? बिसर गइनी ?" कहके बोलत रहनी । केकरा साथे बतिआत रहनी ?"

भाई के बात सुनके आश्चर्य लाग गइल । हम कौनो बात कइले रहनी से इयाद नइखे । ओहु में बिनहिए बिछौना पर केहु से भेंटेके बातो ना भइल । पक्के सपना के क्रम में हम केहु के कुछियो कहले होखेम । कुछ देर

आँख बन्द कके इयाद करेके कोशिस कइनी तब सपना के घटना इयाद परे लागल । हम भाई के कहनी -"सपना देखले रहीं ।"

भाई हँसते पुछलक- "कइसन सपना देखनी 'नमस्ते हजुर ! नमस्ते ।' कहेवाला ? पक्के रउआ कौनो बड़ेआदमी के सपना सपना में देखले होएम ।"

"हँ, एगो आदमी से काल्ह हम रेस्टुरेण्ट में मिलले रहीं । ऊ अपना के भूतपूर्व मन्त्री कहले रहलन । ऊ बहुतो बेर मन्त्री हो चुकल बाड़न । इहे हमरा के फेर मन्त्री होखेम से विश्वास दिअइले रहलन । इहे भूतपूर्व मन्त्री फेर मन्त्री हो गइलन उहे सपना देखले रहनी ।"

हमार भाई हमरा बात में रुची राखके बिछौना पर बइठे लागल । हम पैर मोड़के ओकरा बइठे देनी । भाई हमरा से पुछलक- "काल्ह रउआ होटल गइल रहनी ?"

"हँ, न्यूरोड के एगो रेस्टुरेण्ट में ध्रुवनाथ काल्ह हमरा डिनर देले रहलन ।"

हमार भाई सँझिआ खुनी देरी से घर आवता । आजकाल परीक्षा के तेयारी में साथी का घरे जात रहेला । हमनी के भेंट भोरे होता । दिनभर के कार्यक्रम ओही बेरा तेयार हो जाता । चिन्हल-जानल व्यक्ति के नाम सुनते ऊ कहलक -"एः ! हमनी के ध्रुव भइया ?"

"हँ, ओकर प्रोमोशन भइला के उपलक्ष में हमरा होटल में खाए खातिर बोलइले रहे ।"

"तब रउआ लोगनी दुइए जने रहनी ?"

"दुइए जने त गइल रहनी !"

"तब कौन मंत्री के बात कईनी ह त ?"

भाई के काल्ह के घटना पूरे सुनावेके पड़ल । हमनी के चायो ना आइल रहे । हमनी चाय के प्रतीक्षा में रहनी । काल्ह के घटना हमरा मस्तिष्क में ताजा बाटे । ओकर उत्सुकता के पूरा करे खातिर भी हम काल्ह के घटना बतावे लगनी ।

"ध्रुवनाथ के प्रोमोशन भइला पर हमरा एगो निमन होटल में डिनर देवेके ऊ कबूल कइले रहे । अचानक काल्ह साँझ में पौने आठ बजे इहाँ आके कहे लागल -"चलीं, होटल चलीं, आज हमरा फुर्सत बा । बिहने से

पन्द्रह दिन तक ना मिली । फेर 'तू देरी कइले' कहके रउआ नाराज होखेम । आजे जाएके निश्चय कके हम आइल बानी !"

घर में खाना खाएके समय हो गइल रहे, हम दुविधा में पड़ गइनी । ओकर आग्रहो के टाड़े ना सकनी ।

हमनी के होटल में करीब नौ बजे पुगनी । रेस्टुरेन्ट विदेशी पर्यटक आ नेपाली लोगन से खचाखच भरल रहे । कौनो टेबुल खाली ना रहे । एक चक्कर लगा के काउण्टर में आके पुछनी -"कहीं खाली नइखे ?"

ऊ ख्याल कके एगो टेबुल देखइलक जौना पर एक जने मात्र बइठल रहलन । टेबुल के तीनगो सीट खाली रहे । हमनीका ओही टेबुल पर जाके भलादमी लेखा लउकेवाला ओह व्यक्ति से खाली कुर्सी पर बइठेके आज्ञा मङनी । ऊ हमनी के नीचा से उपर तक देखके रेस्टुरेण्ट के चारू ओरी देखला के बाद बइठेके कहलन ।

ओ टेबुल पर केवल तीनगो प्लेट रहे जौना में एगो उनकरा आगे आ दूगो हमनी का आगे पड़ गइल । हमनी ओरी दूगो खाली गिलासो बा । आधा शराब बाँकीवाला एगो गिलास हमनी के आगे के व्यक्ति दहिना हाँथे पकड़के रखले रहलन । किङसाइज के सिकरेट बायाँ हाँथ में दबले रहलन । उनकर ध्यान रेस्टुरेण्ट के बाँकी भाग पर बा । हमनी के ध्यान उनकरे ओरी रहे । ध्रुवनाथजी भी ओह बेरा उनकरे विषय में बहुत विचार करे लागल होइहन । हम त उनकरा विषय में बहुत कुछ सोचे लगनी । देखे में भलादमी लागेवाला ऊ व्यक्ति एतहिए के होइहन से निश्चय ना करे सकनी । बोली सुनला आ उनकर रूपरंग आ ढंग देखला पर ऊ नेपालीए बाड़न से निश्चित कइल मुश्किल रहे । समय-समय पर हमनीका एक-दोसरा के देखत रहीं । आगे बइठल व्यक्ति के विषय में सही बात पता लगावेके क्रम में हमनी विचारमग्न रहनी ।

तबे बैरा टेबुल पर आके खाली प्लेट उठावे खातिर उनकरा से आज्ञा मङलक । ऊ खाली दुनू गिलास लेजाएके ईशारा कके एक पेग लेआवेके ऑडर देलन ।

अब टेबुल पर एगो एस्ट्रे आ उनकरा मुट्ठी में एगो गिलास मात्र बा । सभ्य आ शान्त लउकेवाला ऊ व्यक्ति पहिलेवाला सिकरेट के एस्ट्रे में भुरकुसके नयाँ सिकरेट जरइलन । सिकरेट आ सिकरेट-लाइटर पर हमार

नजर पड़ गइल । सोचे लगनी । पाँचसयपचपन सिकरेट केतना समुद्र पार से इनकर आनन्द देवे आइल होई ? संगीतमय लाइटर कौना देश में बनल होई जे इनकरा के क्षणिक आनन्द प्रदान कर रहल बा ?

कुछ मिनट के बाद ऑडर लेवेवाला हमनी के आगे खड़ा होता । ध्रुवनाथजी आपन मनपसन्द शाकाहारी खाना मङावेलन । खाना तेयार होखे में कुछ समय लागी से बात ऑडर लेवेवाला के कहला पर तेयार टमाटर सूप एक-एक कप मङाके समय बितावेके निश्चय कइनी ।

हमनी के आगेके व्यक्ति हमनी के धीरे से ठिकिआवे लगलन । उनकर आँख लाल हो गइल रहे । हमनी ओरी देखके ऊ मुस्कइलन । प्रत्युत्तर में हमनीओका हँसके औपचारिकता पूरा कइनी । ऊ हमनी से कुछियो कहे ना सकलन । बोलेके चाहलो पर उनकर मुँह ना खुलल काहेकि हमनीका उनकरा से अपरिचित रहनी ।

हमनी के सूप के अनुपात में उनकर शराब के गिलास खाली होते चल जाता । ऊ एगो-एगो मङते जालन । हमनीका सूप समाप्तो ना भइल रहे कि खाना आ गइल । उहो चिकेन चिल्ली मङइलन ।

दोसर पेग मङला पर ऑडर लेवेवाला आके आदर से कहलक -"हजुर ! स्कॉच खतम हो गइल । कन्ट्रीलिकर ले आईं ?"

ऊ ऑडरलेवेवाला के नीचा से ऊपर तक देखके कहलन -"हम इहाँ के शराब नइखी पीअत से मालूम नइखे ? पिएवाला रहतीं त पहलही पिले रहतीं कि ना ? जइसे भी लेके आव । यदि तोहनी के इहाँ नइखे त बाहर से मङावऽ ।"

ऊ आदर के साथ अनुरोध कइलक -"हमनी इहाँ खतम हो गइल आ दस बज गइल बा । स्कॉच सब जगे नइखे मिलत । हमनी अइसन स्टार होटल में त खतम हो गइल तब आउर कहाँ मिली ?"

ऑडर लेवेवाला के अनुरोध के कौनो वास्ता ना कके ऊ आपन माग पर जोड देते कहलन -"हमरा स्कॉचे चाहीं ? कहीं से ले आव ओ से हमरा मतलब नइखे ? भात खाए से पहिलही एतने पेग स्कॉच बा कहेके चाहत रहे, जब खाए लगनी तब बीच में नइखे कहला से होई ? उपर होटल के स्टोरो खोल के ले आवऽ । हमरा स्कॉच चाहीं ?"

आँडर लेवेवाला घूम के चल जाता । हमनी आपन खाना में व्यस्त हो जातानी । एकाएक हमनी के सम्बोधन कके ऊ कहेलन -"नन्सेन्स ! खाते बानी त नइखे कहता ? कहीं से ले आके हमनी के खाएके देवेके परी । हमनी ग्राहक के त खाए से मतलब बा, कि नइखे ?"

हमनीका उनकर बात के जबाब देवेके कौनो औचित्य ना देखनी । अपरिचित व्यक्ति, ओहु में ऊ नशा में मस्त बाड़न । एही से मनो ना मानला पर मुस्काते सहमती जनइनी ।

ऊ कहते जालन -"हम कौनो समय काहे ना होखे, मनभर ना लेके जाते नइखीं । अइसन अधकचरा लेवेके हमार आदते नइखे ।"

काउण्टरवाला रेस्टुरेण्ट सुपरभाइजर आके उनकरा के अनुरोध करे लागता -"साढ़े दस बजे लाग गइल हजुर ! दुर्भाग्य से आज स्कॉच खतम हो गइल । कृपया ... आज खातिर माफ कर दीं !

हाँथ के गिलास टेबुल पर पटकते कहे लगलन -"नइखे कहबे ना करीं ! हमरा स्कॉच दीं ! रउआ पइसा से मतलब बा, हमरा स्कॉच से ! दस बाजल होखे कि बारह, हमरा समय से मतलब नइखे ?"

"का करीं हजुर ! उपायरहित बानी आजु !"

ऊ जोर-जोर से बोले लगलन -"हम कुछियो सुनेके नइखीं चाहत ! रउआ देहम कि ना, से कहीं ?"

सब ग्राहक लोगन के केन्द्रबिन्दू हमनी के टेबुल हो गइल ! सब हमनी के देखे लगलन त हमनिओ के लाज लागे लागल । दोसर टेबुल पर जाईं, खाना खत्तम नइखे भइल ! हमनी के खाना बेस्वाद हो गइल ।

एतने में बील लेके मनेजर आके उनकरा आगे खड़ा होके बील देते कहलन -"महाशय ! रउआ मात्र पैंतीस पेग स्कॉच खइले बानी ! कृपा कके एकरा देखीं । आज हमार स्टक नील हो गइल । माफ करीं ।"

मनेजर ओरी घूमके गरजते ऊ कहलन -"पैंतीस पेग स्कॉच हम मात्र खइले बानी, कहतानी, हमार आउर दूगो साथी भी त रहलन ?"

"जे भी होखे, राउर बील में पैंतीस पेग बा ।"

"हम जौले स्कॉच ना मिली, तौले ई बीले पेमेन्ट ना करेब" कहके मनेजर के हाँथ से बील ले लेलन । झगडा बढ़ गइल । हमनी आपन खाना

बीचे में छोड़ देनी । तब तक ले रेस्टुरेण्ट के तीन-चारगो स्टाफ हमनी के टेबुल के चारू ओरी बइठ गइल रहे । मनेजर उनकरा के कहलन -"पेमेण्ट ना कके एह रेस्टुरेण्ट से बाहरो ना जा सकतानी ? इहो त ख्याल करीं ?"

ऊ आपन हाँथ टेबुल पर बजारते कहलन -"हमरा चिन्हले बाड़ ! हम भूतपूर्व मंत्री बानी ! मंत्री मात्र नइखीं, कैबिनेट मंत्री ! हमरा धम्की देताड़ ? देखा दीं तोहरा के ?"

मनेजर नम्रतापूर्वक कहता -"मंत्रीजी । नइखे, हजुर नइखे ! ना बाटे त का करीं ? एगारह बाजे लागल ? केनहु मिल जाइत त हजुर के देबे करतीं !"

ऊ दाँत किटकिटावते कहलन -"हमार मुँह खोलवइलऽ ! हम चूपेचाप पीअत रहनी । अब हम आउर नइखीं जानत ! आपन इज्जत खातिर भी हम पिइएके जाएब । हमरा खातिर स्कॉच ले आव !"

मनेजर आ कर्मचारी खुसफुस करते काउन्टर ओरी चल जाता ।

सब विदेशी लोगन 'ही इज एन एक्स मिनिस्टर ऑफ दिस कन्ट्री' कहके गुनगुनाए लगलन, केतना त टेबुले छोड़के चल गइलन । खाना त बाँकिए रहे, बाँकिर हमनिओ निश्चय कइनी अब ना खाएके । दुर्भाग्य से हमनी ओह टेबुल पर कइसे आ गइनी ? अब हमनी बाहरे निकलेके फिराक में बानी ।

ऊ हमनी से कहलन -"भाई ! ई रेस्टुरेण्टवाला फुर्ती देखा रहल बा ! साले के काल्हे बन्द करा देहम । ब्लैक से स्कॉच लाके बेंचता, हमनी के मालूम नइखे का ? एक पेग स्कॉच के साढ़े छब्बीस रोपेया लेता । ओकरे कहल अनुसार के पैसो देला पर हमनी के पिए ना पाएम का ?"

हमनी एक-दोसरा के देखतानी, उनका बात के जबाब ना दे सकतानी । उनका हाँथ से बील टेबुल पर गिर जाता । बील के अन्तिम अंक तेरह सय पचास रोपेया पचीस पइसा पर हमार नजर पड़ता । कइसे एतना पइसा हो गइल होई मनमने हिसाब करतानी । छब्बीस रोपेया पचास पइसा के दर से स्कॉच के नौ सय सताईस रोपेया पचास पइसा होता । ओ पर पचीस रोपेये पैकेट पाँचसयपचपन सिकरेट, स्नैक्स, आ तीन जनेके खाना आ दस प्रतिशत सर्भिस चार्ज जोड़के ठीके लागल ।

हमार भाई बीचे में बात काटके कहलक- "एक आदमी एक साँझ में तेरे सय पचास रोपेया पचीस पइसा खर्च कइलन ?"

हमार भाई जे विद्यार्थी बाटे, ऊ घर से फरमाइसी खर्च साठ रोपेया पावेला । ओही साठ रोपेया से ओकरा बस खर्च, चाय खर्च आ सिनेमा समेत चलेआवेके पड़ता । ओकरा आश्चर्य लागल स्वाभाविक बा । ऊ ओतना बेसी रकम देखलहु त नइखे ! हम ओकरा के समझइनी -"आउर ऊ केतना खइतन ? होटलवाला यदि उनका के देले रहतन तब त रकम आउर बढ़ गइल रहित ।"

अर्थशास्त्र के विद्यार्थी के नाता से हमार भाई जिज्ञासापूर्वक हमारा से पुछता -"प्रति व्यक्ति वार्षिक आय हमनीका देश के केतना बा ?"

"करीब आठ सय पचास पहुँचेवाला बा ।"

"तब त एक साँझ के मनोरञ्जन में एक आदमी दोसर के अठार महिना के खाना खा लेलन ?"

ओकर प्रश्न के हमरा लगे उत्तर नइखे । हम ओकरा ऊ विषय में खुलके बताईओ ना सकतानी । ऊ फेर हमरा से पुछता -'अइसन भूतपूर्व मन्त्री नेपाल में केतना होइहन ?'

हम बिना हिसाब कइले कहनी -"होइहन करीब एक सय से बेसी । मगर ई ना सोचऽ कि सब अइसने बाड़न ।"

ऊ कहलख -"सब के हम अइसने कहहुके नइखीं चाहत । जे अपना आगे बा ओकर त हिसाब लगावल जा सकता ।"

"से त हो सकता ।"

"तब उनकरे बात करीं । ओइसन एक आदमी के बरीसभर के मनोरञ्जन त करीब दू सय नेपाली के पेट पर त बरीस भर खातिरं लात मारता । ई बात त रउआ मानतानी ?"

ओकर तर्कपूर्ण बात से हम असहमत नइखीं तइयो ओकरा बात के सही कहहुके पक्ष में नइखीं । हम चूप होके ओकर मुँहे देखल रहल बानी ।

ऊ कहता-"भइया ! रउआ मालूम बा एह देश में निरपेक्ष गरीबी के रेखा से नीचे केतना प्रतिशत लोग बा ? योजना आयोग से प्राप्त रिपोर्ट अनुसार हम कहनी -"चालीस प्रतिशत से बेशी" ऊ तुरन्ते फेर कहता - 'से

बेशी' कहेके अर्थ जेतना भी हो सकता । हम मुश्किल में पड़ गइनी, तइयो योजना आयोग के आधारे पर कहनी - "चालीस प्रतिशत से बेसी कहेके अर्थ लगभग चालीसे प्रतिशत मानेके पड़ी ।"

'ना' - ऊ हमार बात के काटते कहलक -"काठमाण्डू छोड़के तराई के कम उब्जा होखेवाला भाग आ पथले-पथल से भरल पहाड़ी भाग सब के समझ के भाग लगाईं । हम एगो अर्थशास्त्र के विद्यार्थी के नाता से कीटानी साथ कह सकतानी, निरपेक्ष गरीबी के रेखा से नीचे के प्रतिशत अस्सी बा ।"

"हो सकता । कौनो आयोग के निकालल हिसाबो में इहाँ विश्वस्त होखेके जगे नइखे । मगर जौना कार्य के जे जिम्मा लेले बा ओकरो हिसाब के त मानेके परी ।"

"आँख में धूरा झोंकेवाला हिसाब के कइसे ठीक मान लेहल जाई ?"

ऊ भूमि सुधार योजना के सम्बन्ध में संक्षेप में कहके इहे स्थिति रहला पर एह देशमें आवहुवाला सय बरीस में शोषणरहित समाज के श्रृजना ना होखेके तथ्य प्रस्तुत करता । हम ओकरा तर्क के काटे ना सकनी आ चूपेचाप ओकर विचार सुनते गइनी । तबे चाय आ गइल । बहस के क्रम रोकके हमनी चाय पिए लगनी । हमार काल्ह के बात समाप्त ना भइल रहे । ऊ हमरा के समझावते कहता -"हँ, तब ऊ भूतपूर्व मंत्री बाद में स्काँच खाए पईलन कि ना पइलन ?"

ए, कहाँ खाए पईलन ! ऊ मंत्री के पोज देके टेबुल ठोके लगलन । बेचारा रेस्टुरेण्ट के मनेजर के साथे कर्मचारिओ शायद स्काँच खोजे बाहर गइल कादोनि ? मगर ना लेआवे सकलन । रेस्टुरेण्ट खाली होखे लागल रहे । मंत्रीजी ना उठेके प्रयास कइलन ना हमनीए के उठे देलन । मंत्रीजी के स्काँच के प्रतीक्षा में रेस्टुरेण्ट में बइठेके रहे, एही से हमनीओ के बात में ओझरावे लगलन ।

ऊ कहत रहलें -'हमरा पइसा से मतलब नइखे । हम जे चाहतानी से हमरा मिलेके चाहीं । ए देश में चार बेर मंत्री भइनी । ई कम बा ? कहीं त ! हमरा विश्वास बा हम फेर मंत्री होखेम ।"

ध्रुवनाथजी मंत्री से परिचय कइल ठीक रही सोचके आपन परिचय देत पुछलन -"आपनेके कौन मन्त्रालय रहे ?" ऊ आपन आँख घुमावते

कहलन -"बहुतो मंत्रालय में काम कइनी ! कौना के नाम कहीं ? इयाद करेके परी ।"

"आपने कौन मंत्रालय के कैबिनेट मंत्री रहनी ?"

"ए ! ऊ त वन मन्त्रालय रहे ।"

जेतना समय बीतत रहे मंत्रीजी के स्थिति ओतने बिगड़त जात हम देखनी । हम मंत्रीजी के अनुरोध कइनी - "आपने के आरामो करेके समय हो गइल । अब त घरे गइला से अच्छा रही ।" हमरा मुँह पर नशा से मातल आँख से देखके कहलन -"बुझाता, स्कॉच ना लेआई ।" हम कहनी - "स्कॉच लिअइलो पर अब आपने के पीअल ठीक नइखे । आपने के घरे जाएके कौनो साधन बा कि ?"

मुड़ी उठाके हाँथ से दुआरी ओर देखाके धीरे से कहलन -"हमार गाड़ी बाहर बाटे ! रउआ लोगनी कहाँ जाएब ? रउआ लोगनी हमरा के चिन्हले रहनी ? ठीक बा, चिन्हापरचे नाहिओ रहे त अब होगइल ! मन्त्री भइला पर जरूर हमरा से भेंट करे आएब । हम रउओ लोगनी खातिर कुछियो करेब । अइसही भेंट भइल हमार बहुतो साथी सब के हम बना देले बानी ।"

वर्तमान मंत्री नइखे त का भइल भूतपूर्वे मंत्री साथी बन गइला से हम मनेमन खुशी भइनी । उनकरा कहब अनुसार चार बेर मंत्री हो गइल बाड़न । हमार भाग्य साथ दी त पँचवो बेर मन्त्री बनबे करिहन । हम कहनी - "अब मंत्री होखेम त कौन मंत्री होखेम ?"

"उद्योग-वाणिज्य में काम करेके इच्छा बा ।"

"उद्योग-वाणिज्य में हमनी के करे लायक कुछियो होई का ?"

"मूलधने ओही जगे बा !"

"कौन काम मिली त हमनी के ?"

"कोटा देहब, लाइसेन्स देहब ! कर सकेम त काम करेम ना सकेम त बेंच देहब ।"

ध्रुवनाथ खुशी होके मंत्रीजी के कहलन - "अब मंत्रीजी से हमनी के परिचय हो गइल । आपने बिसर त ना जाएब मंत्रीजी ?"

"कइसे बिसर जाएब ? बिसरिओ जाएब तब एकान्त जगे में ऊ होटल में भेंट भइल रहे कहके समझा देहम, हम समझ जाएब ।"

हम आपन शंका निवारण करे वास्ते कहनी -"अभी रउआ मंत्री नइखीं त हमनी के जहाँ भी, जइसे भी भेंट सकतानी । बिहने मंत्री भइला पर त रउआ से एतना आसानी से कइसे भेंट सकतानी ? घर आ आँफिस में आदमी के भींड़, मोटर में गार्ड आ ड्राईभर तब कौना बखत रउआ फुर्सत होई जे एकान्त में कहेम ?"

"बात मुनासिबे कहनी, मगर उपाय बा । हमनी रउए लोगनी जइसन जनता के प्रतिनिधि हईं । हमनी के कहीं कौनो प्रतिबन्ध नइखे भेंटे आ बात करे खातिर । खाली रउआ एतना कहब -'मंत्रीजी से हमार गोप्य बा' । समय निकाल के रउआ से भेंट लेहम ।"

उनकर मुँह से सुनल उपाय से हमार शंका निवारण हो जाता । सवा एगारे बज गइल । मंत्रीजी के स्कॉच ना आइल रहे । ऊ समय में हमनी मंत्रीजी के छोड़िओके जाएके पक्ष में नइखीं । करीब साढ़े एगारे बजे हमनी लगे रेस्टुरेण्ट के मनेजर आके मंत्रीजी से आदरपूर्वक कहता -"हजूर ! बहुत कोशिश कइनी । सब कर्मचारी के खोजे खातिर भेजनी, कहीं ना मिलल हजुर ! माफ कर दी !" एही बीच में हमहु बात जोड़ देनी -"मंत्रीजी के पुग गइल बा । अब पीअल ठीक नइखे । रातो बहुत बीत गइल ।"

ऊ हमार मुँह गौर से देखलन तब मुस्काते कहलन -"अब हमरे टेबुल के साथी ओइसने कहता त हो गइल । केतना भइल ? हिसाब ले आईं !" मनेजर झुँकके दुनू हाँथ जोड़के कहलन -"हम हिसाब पहलही देले रहनी, इहवें बील होई ।"

बील टेबुल पर नइखे । मंत्रीजी आपन जेबी में हँड़ोरके जेबी में रहल कागज आ नोट सब टेबुल पर राख देलन । बील ना मिलन । मनेजर काउण्टर से नकली बील ले आइल । मंत्रीजी बील के पइसा भुक्तानी करे खतिरा टेबुल पर छिटाइल रोपेया सब हमरा ओरी बढ़ा देलन । करीब बीस-पचीस हजार रोपेया रहे ओह में से एक हजार के एगो नोट आ सय के चारगो नोट निकालके बाँकी सब मंत्रीजी के दे देनी । मंत्रीजी ऊ नोट मनेजर के देवेके ईशारा कके कहलन -"ई भाई लोगन के भी ओही से काट लिह आ बाँकी बैरासब के बाँट दीह ।"

'होई ।' कहके मनेजर मंत्रीजी के सलाम कके काउन्टर ओरी चल गइलन । मंत्रीजी जे निर्णय कइले रहलन ओकरा विपरीत जाएके हमनी के साहस ना भइल । ध्रुवनाथजी हमार मुँहे देखे लगलन, कुछियो ना बोले संकलन । 'हमार बील हमनीएका चुक्ता करेम, मंत्रीजी काहे दुःख करतानी' तक भी हमनी के ना कहे सकनी । मंत्रीजी संगे के मित्रता में आउर हमार विश्वास बढ़ गइल । हम उनकरा के घरे जाएके आग्रह कइनी, मगर ऊ उठेके चाहलो पर कुर्सी से उठे ना सकलन कुर्सीए पर पसर गइलन् । हम सोचनी -'इनकरा शराब के नशा काफी चढ़ गइल बा । इनकरा के सहारा देके होटल से बाहर ले चलीं !'

हमरा ईशारा पर ध्रुवनाथजी उनकर दहिना बाँह पकड़लन आ हम बायाँ बाँह पकड़के टेबुल से उठाके धीरे से बाहर फुटपाथ में ले अइनी । सड़क प्रायः सुनसान हो गइल लेखा रहे । एक-दूगो गाड़ी मात्र चलत रहे । हम पुछनी -"आपने के गाड़ी कौन बाटे ?" पार्किंग कइल सब गाड़ी के देख लेला के बाद एगो किनारे जाके कहलन -"हमार गाड़ी इहे बा" ।

जेबी से चाभी टटोल के निकाललन आ चाभी हमरा देके कहलन - "हे ई लीं ! गाड़ी इहे बा कि नइखे, देखीं त ! गाड़ी खोलीं !"

उनकर दीहल चाभी ओही गाड़ी के रहे । गाड़ी खोल देनी आ उनकरा के कहनी - "ड्राईभर नइखे !"

'नइखे'

"के गाड़ी चलईहन त ?"

"हमहीं चलाएम ।"

ऊ गाड़ी चला सकीहन ओह में हमरा शंका लाग गइल । गाड़ी के चाभी तक ना छँटिआवे सकेवाला कइसे गाड़ी घर तक लेके जइहें ?

हम उनका के गाड़ी में बइठेके कहनी । ऊ गाड़ी में बइठे खातिर ध्रुवनाथजी के हटाके गाड़ीमें पइसेके खोजत रहलन मगर ऊ गाड़ी के दुआरीए पर ठक्कर खाके गिर पड़लन । हमनीका फेरु उनका के सहारा देके उठइनी आ गाड़ी में बइठेके कहनी । एमकी बेर ऊ गाड़ी के दुआरी के पकड़के दुआरी पर लटक गइलन । ओइसन अवस्था देखके उनका के उनकर गाड़ी में ना पेठावेके निश्चय कइनी । एही बीच में ध्रुवनाथजी मनेजर के

बोलाके कहलन -"ई गाड़ी बिहने मंत्रीजी के ड्राईभर लेवे आई । आज इहवें रही, रेखदेख कर देवेके पड़ल ।"

गाड़ी के पूरा रेखदेख होखेके बात कहके मनेजर हमनी के विश्वास दिअइलन ।

मंत्रीजी के आपन गाड़ी में बइठइनी । गाड़ी स्टार्ट करते पुछनी - "हजुर के कहाँ छोड़ दीं ?"

ऊ अलसा गइल रहलन, चौंक के कहलन -'हँ ! सिंहदरबार होके नयाँ रास्ता से थापाथली चलीं । गाड़ी आगे बढ़इनी । कुछे देर में ऊ हमरा के कहलन - 'उहाँ कैसेट प्लेयर बा, खोलीं त"

"हमरा गाड़ी में कैसेट प्लेयर नइखे ।"

"का ई राउर गाड़ी बा ? हमार गाड़ी का भइल त ?"

"हजुर के गाड़ी उहवें होटल के बाहर बा । मनेजर के रेखदेख करेके लगा आइल बानी । बिहने सबेरे ड्राइभर के पेठा देला से हो जाई । ठीक से देखिहऽ से मनेजर के कह देले बानी ।"

"ठीक से कह देली ह नु ? ठीक बा ।" कहके ऊ पुछलन - "कहवाँ आ गइनी ?"

ध्रुवनाथजी जबाब देलन - "हमनी तुरते न्यूरोड छोड़ले बानी हजुर !"

"भद्रकाली पुगला पर हमरा के कहेब, बुझनी !"

"होई !" ध्रुवनाथजी जबाब देलन ।

भद्रकाली पुगला पर गाड़ी के स्पीड कम कके कहनी -"मंत्रीजी । भद्रकाली आ गइनी ।"

भद्रकाली के उत्तर तरफ अइला पर 'एतहें रोक दीं' कहलन, गाड़ी रोक देनी । गाड़ी से हमनी दुनू जनेके उतार के ऊ सड़क पर उतरलन । हम कहनी -"काहे, इहाँ कौनो काम बा ?"

'ए ! रउआ लोगनी पेशाब ना करेब ?' कहके सड़क के किनार में गइलन । नाम सुनते हमनीओ के लाग गइल आ हमनी दुनू जने एक-एक ओरी काम समाप्त करे लगनी ।

हमनी के लौटके आ गइला के बादो जब ऊ ना अइलन त हमनीका दुनू जने ऊ जहाँ गइल रहलन, ओतहाँ गइनी । उनकर बेहालत देखके हमनी के हँसी लाग गइल । ऊ त पैन्टो ना खोले सकल रहलन आ बाहर पेशाबो ना करे सकत रहलन । उनकरा के दुनू जने खींच के मोटर के बगल में ले अइनी । एकदम रुकके कहे लगलन-"ई फ्लैगपोस्ट देखनी ?"

धुवनाथजी कहलन -"हजुर ! देखनी ।"

"हे, कुछ दिन पहिले हमार मोटर उहवें ठक्कर खइले रहे ।"

धुवनाथजी पुछलन -"तब का भइल त ?"

"काथी होई ? एक्सीडेण्ट ! बेकार में वर्कशॉप में पाँच हजार रोपेया बुझावेके परल रहे ।"

धुवनाथजी फेर पुछलन -"हजुर के त कुछियो ना भइल ?"

"हे देखीं ! भइला पर आज रउआ लोगनी भेंटतीं ?"

"से ना, हमार मतलब घाव-चोट से रहे ?"

"हमरा त कुछियो ना भइल । दोसरदिन घरे खुद के ठीके देखनी । कहनी नुँ, मोटर तनि बिगड़ल रहे ।"

"तब रात में हजुर कइसे घर पहुँचनी त ?"

"से मालूम नइखे ।"

आज के जइसन घटना उनकर दैनिक कार्यतालिका के भीतर के नियम हो गइल बाटे । उनकर बात सुनके हमनी के एक तरफ हँसी लागल त दोसर तरफ ओइसन ऊँच ओहदा सम्हारेवाला व्यक्ति अइसन हो गइला पर चिन्तो लाग गइल ।

रात बहुत हो गइल रहे । उनकर बात सुनेके हमनी के मन ना रहे । ऊ बोलेके आ बातचीत करेके बहुत चाहत रहलें । उनकरा चाहला के बादो हमनी रोकत रहनी । एही बीच में एगो गाड़ी एकाएक हमनी के आगे आके रुक गइल । तीन-चार व्यक्ति सड़क पर निकललन आ हमनी लगे आके पुछलन-"रउआ लोगनी का करे करतानी हँ ?"

ऊ त घुम्ती प्रहरी रहे ! उनकरा लोगनी के हम जबाब देनी - "हमनीका घरे जा रहल बानी, ओहु आदमी के घरे पहुँचावेके बा ।"

ओ प्रहरी में से एक जने कहलन -"के ? दरूपीअवा बा ?"

दोसर जने कहलन -"दरूपीअवा बा त हमनीका लगे छोड़ दीं !"

फेरु दोसर जने कहलन -"हमनी के डिउटीओ खतम हो रहल बा । होई, लेके चलीं ।"

धुवनाथ मंत्रीजी के पकड़ले रहलन । हम प्रहरी के पकड़के कहनी - "ना, ओइसन खराब दरूपीअवा त नइखन !"

तुरन्ते एकजने प्रहरी कहलन -"दरूपीअवो अच्छा भा खराब होता का ?"

दोसरे जने बोललक - "दरूपीअवा अच्छा-खराब छँटिआवेवाला ई के बा ?"

फेर दोसर जने ओही बात पर जोड़ देके कहलख -"एकरो के दरूपीअवे का साथे ले चेलीं ।"

दोसर हमार बाँह पकड़के कहलक -"हँ-हँ ! एकरो के ले चलीं ।"

हम कुछ बोलही के रहीं कि घींचके ओकनीका गाड़ी लगे ले गइल । मोटर के खिड़की से मुड़ी बाहर निकालके देखेवाला ऑफिसर के सलाम कके 'दरूपीअवा सब बा सर !' कहके कहलख । ऊ ऑफिसर पुछलन - 'ऊ मोटर केकर बा त ?' ओकनीका हमरा कहे से पहिलही कहलख -'एही दरूपीअवा लोगन के बा सर !'

एही मौका में हम कहनी -"मोटर हमार बा, हम दरूपीअवा नइखीं ।"

हमार आ प्रहरी के बीच के बात में भिन्नता भइला के कारण ऊ प्रहरी ऑफिसर हमरा नजदीक मोटर से उतर के अइलन आ पुछलख -"राउर मोटर बा ?"

"हँ ।"

"कहाँ जाके आ रहल बानी ?"

हम होटल में डिनर खाए गइल रहनी ओही होटल में एक जने बहुत नशा में होला के कारण उनकरा के घर पहुँचावे में सहयोग करेके भावना से आवेके बात सुनइनी । एही बीच में बाँकी तीन जने प्रहरी धुवनाथजी सहित दू जने के घिँसियाके हमनी जहाँ रहनी, उहवें ले आइल । ऊ मंत्रीजी तब

ओकनी के कहलन -'ए, तोहनीक हमरा के नइख चिन्हले ! तोहनी के हमरा चिन्हले ना बाड़ !!' ओकरवाद प्रहरी तनि सतर्क हो गइल ।

प्रहरी ऑफिसर ओ मंत्रीजी के चिन्हले रहलन । ऊ मन्त्रीजी के सम्बोधन कके कहलन -"ओहो ! हजुर बानी ? काहे एतना देर तक ले इहाँ बानी ?"

"देखीं ना, तनि खुशी मनाके आ रहल बानी । साथी सब का साथे घरे जा रहल बानी । आउर कुछ पुछेके बा ?"

"नइखे हजुर ! अपने जाईं ।"

'अच्छा, शुभरात्रि' कहके ध्रुवनाथजी का साथे मंत्रीजी के भी हमरा गाड़ी तक लेआ देलक ।

प्रहरीसब के मोटर में बइठेके आदेश देके ऑफिसर कहलन -"हमनी के माफ करीं ! रउआ लोगनी के सुरक्षा करेके हमार कर्तव्य बा । अच्छा त ! ठीक से उनकरा के ले जाईं ।" एतना कहके ऑफिसर गाड़ी में चढ़ गइलन । प्रहरी के गाड़ी आगे चल गइल । हम आपन गाड़ी में अइनी । हम कौनो बातचीत करेके पक्ष में ना रहनी । ध्रुवनाथजी उनकरा के गाड़ी में रखलन तब आपन गाड़ी में उहवाँ से चल देनी ।

मन्त्रीजी आपन घर देखाके हमरा के गाड़ी रोके खतिरा हाँथ से ईशारा कइलन । एगो भव्य भवन के सामने हम गाड़ी रोक देनी । मंत्रीजी उतरके कहलन - "इहे हमार कुटी बाटे ।"

हम कहनी -"मंत्रीजी ! ई भवन रउए नु बा ?"

ऊ फेर कहलन - "इहे त बाटे हमार कुटी ! कुटी कहीं ना कुटी, काथी के भवन !"

ध्रुवनाथजी कहलन -"मंत्रीजी ! फेर भेंट भइला पर हमनी के ना बिसर जाईं ?"

ऊ ध्रुवनाथजी के कहलन -"कइसे बिसरब रउआलोगनी के ! आज रउआलोगनी एतना सहयोग हमरा के कईनी ह ! कभी भी ना बिसरेके काम कईनी ह !"

"ओइसन ना कहीं अपने !" - ध्रुवनाथजी हाँथ जोड़के कहलन ।

"आजु रात हो गइल । रउआ लोगनी के आपन कुटी में एक कप चाहो तक पिआवे ना सकनी । बिहने सबेरे दुनू जने पक्के आएब, साथे चाह पीअब हमनीका ।"

हमनीका कुछ जबाब ना देवे सकनी । फेर इहे जोड देके कहलन - "जरूर अएबे करेम ! रउआ लोगनी जब तक ले ना आएब हम चाहे ना पीअब ।"

"आठ से दस बजे तक में जब भी आईं, स्वागत बा । मगर जरूरे आवेके पड़ी ।"

मंत्रीजी के आग्रह पर भी 'होई' कहहीके परल । मंत्रीजी के 'गुडनाइट' कहला के बाद हम आपन गाड़ी आगे बढ़इनी । ध्रुवनाथजी के घर पहुँचावेके रहे, उनका के घरे पहुँचाके हम घरे आ गइनी ।

भाई हमरा से पुछलख-"भइया के लौटेत बेरा बहुत रात हो गइल रहे । हमरा त पते ना चलल ।"

"रात त बहुत हो गइल रहे ।"

"तब सपना का देखनी हँ ?"

"का देखेम ? ऊहे काल्ह के मंत्रीजी फरफराते झण्डा में एगो विशाल भवन में प्रवेश कइलन । हमहु ओही विशाल भवन के दुआरी पर खड़ा बानी । मंत्रीजी हमरा से -'का, बा ? कहके पुछीहन आशा लेले बानी मगर मंत्रीजी जब अइलन त ना चिन्हलन । हम घंटो लाइन में लगले रहनी, तबो मौका ना आइल त जबरदस्ती मंत्रीजी के कोठली में प्रवेश कइनी । लचकदार कुर्सी पर मंत्रीजी सुत के बइठल रहलन । नमस्कार कइनी, जबाब ना देलन । तब बहुत प्रकार से समझौलो पर ऊ हमरा के चिन्हे से इन्कार कर देलेन । ओतने में तू आके जगा देल !"

हमार सुनावल काल्ह के घटना आ रात के सपना सुनला के बाद कुछ देर चूप रहके भाई कहलख -"रउआ साँचे सपना देखनी । वास्तविकता में भी रउआ इहे पईती जे सपना में पइनी ।"

"हँ, हमरो ओइसने लागल । ओइसे त उनकर काल के बात अनुसार हमनी के अन्तरंग मित्रता कायम रही मगर हम विश्वास करेके पक्ष में नइखीं ।"

भाई कहलख -"ओइसन अनैतिक से मित्रता कइलो पर कौनो फायदा नइखे ?" हम ओकरा के समझाके कहनी -"नैतिक आ अनैतिक के बात नइखे । तोहार अनैतिक समझल बात के ऊ नैतिको समझले हो सकेलन । कुछियो होखे, हमनी के उनकर व्यक्तिगत आदत से कौनो मतलब नइखे । ऊ केतना काम कर सकेलन ओ से मात्र हमनी के मतलब बा ।"

हमनी के बातो ना समाप्त भइल रहे कि ध्रुवनाथजी हमनी इहाँ अगुताइल लेखा पहुँच गइलन । कोठली में पइसते ऊ कहलन -"अरे ! अब तक ले बिछौने पर ? मंत्रीजी के इहाँ जाएके अबेर ना भइल ?"

हम हँसके उत्तर देनी -"काल्ह के घटना भाइ के सुनावत रहनी ।"

ऊ हमरा के इयाद करइलन -"काल्ह के बात इयाद बा ? ऊ हमनी के ना पहुँचला पर चाहो ना पीहन से कहले रहलन ।"

हम काल्ह के मंत्रीजी के निमन्त्रण के इयाद कइनी । ध्रुवनाथजी मंत्रीजी के इहाँ जाए खातिर तेयार होके आइल बाड़न । हम 'ना जाएम' कहे ना सकनी । ध्रुवनाथजी के कुछ देर बइठाके हम बाथरुम चल गइनी । उनकरा से हमार भाई काल्हेके घटना सम्बन्ध में आउर बेसी जानकारी लेवे लागता । हम बिनहिआ के काम से निवृत्त होके ध्रुवनाथजी का साथे मंत्रीजी इहाँ जाए खातिर निकल गइनी ।

हम दुनू जने मंत्रीजी के कैम्प के भीतर पहुँचनी । दुआरी पर पहरा देवेवाला अलसिसिएन कुत्ता के डर से घर ओरी बढ़ेके हिम्मत ना करे सकनी । हमार नजर कैम्प के चारू ओरी फइले लाग गइल । हम गैरेज में काल्ह के गाड़ी देखनी । ध्रुवनाथजी के देखाके कहनी -"काल्ह के गाड़ी आ गइल बा ।"

गाड़ी भोरे आ गइल रहे ओ से ध्रुवनाथजी के कौनो आश्चर्य ना लागल रहे से उनकर चेहरा बता रहल बा । उनकर नजर भवन के पहिलका आ दोसरका मंजिल पर केन्द्रित रहे । चारू ओरी केहु नइखे लउकत, केवल एगो कुत्ता बा । हमहुँ समय-समय से भवन के खिड़की पर नजर दउरा रहल बानी ।

बहुत देर के बाद एक जने ओही घर के कामदार जइसन लउकेवाला व्यक्ति दुनू हाँथ में झोरा लेले बाहर से कैम्प के भीतर प्रवेश करता । हमनी ओकरा ओरी जाके कहतानी -'भाई ! एह घर के आदमी बानी ?'

"हजुर, का कहेके बा ?"

"मंत्रीजी बानी ?"

"होइहन ।"

"होइहन त कह दीं कि बाहर आदमी भेंटे आइल बा ।"

'होई' कहके ऊ भवन के भीतर चल गइल । करीब पाँच मिनट के बाद फेर इहे व्यक्ति बाहर आइल त हमनी दुनू जने ओकरा लगे जाके उत्सुकता से पुछनी -"का कहलन ?"

'ए ! हम त कहही के भूल गइनी' कहके फेर भीतर गइल । करीब पाँच मिनट बाद आके 'मंत्रीजी त बाथरुम में बाड़न, तनी रुक जाई' कहके ऊ कैम्प के बाहर चल गइल ।

मंत्रीजी घरे में बाड़न । भेंट होई से हमनी के पूरा विश्वास हो गइल, देरी भा जल्दी मात्र के बात ह । हमनी प्रतीक्षा करे लगनी । आउर कौनो व्यक्ति नइखे लउकत । हमनी दुनू जने ओ भवन के विषय में आपन अनुमान करेके शुरू कइनी । हम ध्रुवनाथजी के धीरे से कहनी -"ई भवन कब बनल होई ?"

"हालसाले बनल बुझाता । देखीं ना, सब नयाँ बा ।"

"केतना स्क्वायर फीट में बनल होई, रउआ अनुमान करे सकतानी ?"

"करीब पाँच हजार स्क्वायरफीट में बनल होई ।"

"तीन मंजिल भइला से एकर स्पेस पनरे हजार स्क्वायरफीट भइल, ना ?"

"तब पन्द्रहे जनेके परिवार भइला पर भी प्रतिव्यक्ति एक हजार स्क्वायरफीट स्पेस पड़ गइल । रउआ अनुमान कर सकतानी ध्रुवनाथजी ! ई घर केतना रोपेया में बनल होई ?"

"कइसे कहीं ? भीतर के सजावट त ना देखे सकनी ह । ओइसे बाहर के रूप से विचार कइला पर दस से पनरे लाख के अनुमान कइल जा सकता ।"

हमनी के बात समाप्तो ना भइल रहे तबे ऊ पहिलेवाला व्यक्ति फेरु एगो हाँथ में झोरा लेके प्रवेश कइलक । हमनी लगे आके -'ए, ना भेंटले

बानी ? हम तुरन्त करावतानी' कहके हडबड़ा के घर के भीतर पइस गइल । करीब दू मिनट बाद ऊ फेरु बाहर आके हमनी के घर ओरी आवेके ईशारा कइलख । ओकर देखावल कोठली में प्रवेश कइनी । भव्य बइठक में केहु के ना देखनी । ऊ व्यक्ति आके कहलख -"रउआलोगनी कुछ देर बइठीं । मंत्रीजी आ रहल बाड़न । "

एगो लम्बा सोफा पर हमनी साथे बइठ गइनी । बइठक के दुआरी बन्द हो गइल । बइठक में हमनी दू जने मात्र रहीं । हमनी के उहाँ बातो करे में भय लागल । दुनू जने कुछियो ना बोलके चूप चाप बइठक के सजावट मात्र देखे में व्यस्त हो गइनी ।

करीब पनरे मिनट प्रतीक्षा कइला के बाद मंत्रीजी बइठक में प्रवेश कइलन । हमनी दुनू जने उठके अभिवादन कइनी । हमनीए के बगल के सिङ्गल सोफा पर आके ऊ बइठलन । प्रसन्न आ खुशी होके हमनी के कहलन -"रउआ लोगनी के कुछ देर प्रतीक्षा करइनीं, माफ करीं ! रउआ लोगनी ठीके बानी ?"

हमनीका एक-दोसरा के देखनी । ऊ हमनी के एकदमे ना चिन्हे सकलन । उनकर ठीक-बेठीक हमनी के पुछेके चाहत रहे मगर इहे हमनी के पुछलन । ऊ कुटनीतिक तरीका से हमनी का साथे त ठीके व्यवहार कइलन, मगर हमनी के ठीक से चिन्हे ना सकलन ।

कुछ देर में हम दुनू जने एके साथ कहनी -"ठीके बा ! हजुर के ?"

"का होई ? जीअते बानी, कहेके परी ।' फेर ऊ कहलन -"हमरा लायक कौनो सेवा बा ? कहीं !"

मंत्रीजी हमनी के चिन्हे ना सकलन, तइयो उनकर व्यवहार में कौनो कमी नइखे । अइसने व्यवहार से त ऊ एतना सफलता प्राप्त कइले बाड़न । ध्रुवनाथजी चिन्हिहन सोचके कहलन -"मंत्रीजी काल्ह हमनी के चाय पीए आवे खातिर कहले रहनी, इयाद बा नुँ ?"

'हँ, हँ ! इयाद बा ?" - ऊ शरम से आँख घुमा के कहलन -"एही से त रउआ लोगनी के प्रतीक्षा करत रहनी !"

ऊ आपन लगे के घंटी के बटन दबइलन - कामदार बइठक में प्रवेश कइलक त ओकरा के तीन कप कॉफी लेआवेके आदेश देला के बाद

कहे लगलन -"काल्ह रउआ लोगनी हमरा के बहुत मदत कइनी । ओकरा खातिर हम रउआ लोगनी के प्रति आभारी बानी । कहीं, हमरा लायक कौनो सेवा बाटे त हम रउओ लोगनी खातिर करेम ।"

मंत्रीजी से एतना सुनते हमनी के हृदय प्रफुल्लित हो जाता । तत्काल हमनी के उनकरा से कुछ लेवेके आशा त ना कइले रहनी, तइयो हमनी के कहनी-"ओइसन पड़ला पर हमनी आपने के दुःख देवे आ जाएम । हजुर के ना कहेम त केकरा के कहेम ?"

ऊ कहलन -"रउआ लोगनी बेहिचक कहेम । हमरा से जेतना होई, हम करेम ।"

एही मौका पर हम आज जौन सपना देखले रहीं, से सुना देनी । मंत्रीजी चिन्हे से इन्कार कर देले रहलन, उहो सुना देनी । हमार बात सुनतेही ऊ दिल खोलके हँसे लगलन । हँसते-हँसते कहलन-"हम ओइसने बानी त ? कहीं ! राउर सपना गलत त नइखे !"

उनकर प्रामाणिक बात हमरा मानेके पड़ल । एही सन्दर्भ में हम पुछनी -"हजुर कब मंत्री होखेम त ?"

"इहे समय कहके कइसे कहीं ? मगर होएम जरूरे । देखीं ना, आजकाल के मंत्री सब कइसन-कइसन बाड़न ? एकनी के कब तक ले चलावे सकिहन ? हमनीए के आवेके परी । एह में हम निश्चिन्त बानी ।"

आपन बात पर जोड़ देत ऊ कहलन -"अब देखीं ना ! हमरा जइसन व्यक्ति के चलावल जगह पर अभी एगो पुराना लकडी के व्यवसाय करेवाला के राखल गइल बा । कहीं, ऊ जौना चीज के स्वाद ले लेलेवाटे, ओकरा के भूल सकता ? पन्हो साल तक ले काठमाण्डू के काठ के व्यापारी लोगन ओकरा घरे टीकवुड खोजेके क्रम में लाइन लागल रहत रहे से हम खुदे आपन आँख से देखले बानी । हम सुनले रहनी, एक बेर त ऊ जिलाभर के टीकवुड के अपने खेत के उत्पादन कहके स्वीकृति लेके जिला से बाहर निर्यात कइले रहलन । ई साँच बा कि ना से जिला के भ्रमण में गइला पर बुझले रहनी । हम जे सुनले रहीं ऊ वास्तविकता रहे । केतना बात के कागजी प्रमाण नाहिओ भइला पर प्रत्येक व्यक्ति के हृदय पर छाप पड़ चुकल रहता, जेकरा के बन्द कइलो आ रोकलो जा ना सकेला । अब कहीं, ओइसन व्यापारी के अधिकार देला पर ऊ नेपाल के जंगल के बाँकी रहे दी ?"

हमनी के ना बुझेवाला बात ऊ करत रहलन । ऊ जे सुनावत रहलन ओ से हमनी अनभिज्ञ रहनी । तइयो हमनी विषयवस्तु बदल ना सकत रहनी । हमनी उनकर बात सुनत रहनी । ऊ कहते रहलन -"हम आपन समय में त सब व्यवस्था मिलाके नीति-नियम से बाहर ना जाके बहुत विचार पहुँचाके जंगल बचइले रहनी । अभी देखीं ! पलाॅट के पलाॅट विदेश जा रहल बा । कौना जगह के काठ नेपाल के गाँव आ शहर में नइखे पइसल ? एकनी के एही तरह से करत रही त कुछे बरीस में नेपाल के दैवी प्रकोप के मुकाबला करही के परी ।"

ऊ कहते गइलन -"काल्हे एगो आदमी आके हमरा के कहले रहे - 'हजुर ! रउआ अभी के मंत्रीजी के कहीं, धमाधम जरना निर्यांत करेके आदेश दे रहल बाड़न । हमरा बहुत ना चाहीं, दू सय ट्रक जरना निकासी के आदेश भइला से हो जाई । आदेश लेके गलगलिया स्टेशन पहुँचते प्रति ट्रक पाँच सय भा. रु. मिली । खुदे नाहिओ लगला पर एक लाख भा. रु. के बचत होई । रउआ कह दीं !' हम ई कहके लौटा देनी -'देखीं, हमरा हाँथ में कुछियो नइखे । हमार कहल मानबो ना करी । अभी हम कुछियो ना कर सकतानी ।' ओह से ई बुझल जा सकता कि ऊ मनपर्दी कर रहल बाटे ।'

ऊ कुछ देर चूप रहके फेर आवेश में आके कहलन -"केतना दिन ई टिकीहन ? एकनी के हमनी के लेआवही के परी ।"

मंत्रीजी के बात के क्रम में हम धीरे से कहनी -"अइसे मनपर्दी कइला पर कहीं कौनो कारवाही करेवाला अड्डा नइखे का ?"

"से काहे नइखे ? बा नुँ !"

"भइला पर देखेके ना चाहीं त ?"

"देखिए त रहल बा ! आँख नइखे मुनले ?"

बहुत नाटकीय ढंग से से ऊ कहलन । हमनी हँस देनी । एतने में काॅफी आ गइल । मंत्रीजी के घर के गरमागरम काॅफी के स्वाद हमनी नयाँ पइनी । विषयवस्तु काॅफी का ओर केन्द्रित हो गइल । ई काॅफी ऊ लन्डन से मङइले रहलन । उनकरा बहुतो आदत विदेशीऽ चीज के रहे से हमनीका अनुमान लगइनी ।

मंत्रीजी के कहला पर हम दुनूजने आपन पूरा परिचय उनकरा के देनी । खुदे जौन काम करत रहीं से आ आपन परिवार के विषय में भी जानकारी करा देनी । तब हमनी के मंत्रीजी के विषय में जानकारी लेवेके रास्ता खुल गइल । हम पुछनी - "मंत्रीजी के परिवार केतना बड़ा बा ?"

"ओइसे त श्रीमती बच्चा सहित आठ जने बानी । इहाँ नोकर लोगन के अतिरिक्त चार जने बानी स ।"

"आउर लोग कहाँ बाड़न त ?"

"गाँव में दू जने बा । दू जने बाहर पढ़े गइल बा ।"

"तब गाँव में दू जने बच्चा मात्रे बा कि ..... ?"

"ना, हमार श्रीमती बाड़ीं ।"

"ए ! तब मंत्राणीजी इहाँ ना रहेनी ?"

"गाँव में एक जने, इहाँ दू जने बाड़ी । अभी हमार तीनगो श्रीमती बाड़ी !"

आश्चर्य से हम -'ए !' कहनी । ऊ साधारण ढंग से जबाब देलन । फेर हम पुछनी -"दूगो बच्चा बाहर पढ़े गइल बाटे ?"

'हँ, एगो बेटा आ एगो बेटी । बड़की बेटी लन्डन में पढ़ेली, बड़का बेटा दार्जिलिङ पढ़ता' कहके ऊ गम्भीर मुद्रा में कहलन -"आगे साल बेटा के भी लन्डन पेठा रहल बानी !"

मन्त्रीजी आ हमनी के बीच में भइल बातचीत से हमनी पूर्ण सन्तुष्ट बानी, ऊ बहुतो बात में स्पष्ट लउकलन । उनकरा से बातचीत भइला पर हमनी के उनकरा के काल्हे मात्र चिन्हल लेखा ना महशूस भइल । हमनी के वर्षो के साथी बानी जइसन लागल ।

ऊ आपन समय के पुरना बात कहे लगलन - "हमरा समय में हम कौनो खराब काम ना कइनी । देश आ जनता खातिर मरमेट के काम कइनी । फेर हम जनता के बीच से आइल एगो जनप्रतिनिधिओ त बानी । जनता के एगो सेवको त बानी ! जेकरा हमेशा जनता के हित खातिर सोचेके चाहीं । ओही अनुसार हम काम कइनी । देखीं ! हमरा समय में एकोगो खराब काम भइल से उजूरी तक ना परल । कहीं, ई भाग्य के बात नइखे ? हम नीचा से ऊपर तक अनुपात मिलाके काम करत रहीं । नीति-नियम में वाधा ना परेके

ढंग से काम सम्पन्न करत रहीं । तनि-तनि बाधा पड़ला के स्थिति में भी सब मिला-बँचाके काम समाप्त करत रहीं । अब कहीं ! केहु कह सकता कि हम कौनो बदमाशी कइले रहनी ? केहु ना कह सकेला ! हमरा ई पूरा विश्वास बा ! एही से त हमरा ई हो विश्वास बा कि एह देश के फेरु हमार आवश्यकता बा !"

उनकर बातो ना समाप्त भइल रहे कि फेर कॉफी आ गइल । हमनी के कॉफी पिए लगनी । उनकर बात तबो समाप्त ना भइल रहे । बहुत समय हो गइल रहे आ कॉफी पीअला के बाद बिदा देवेके ऊ निश्चय कइले रहलन, एही से ऊ चूप हो गइलन । कॉफी समाप्त भइला पर हमनी बिदा मङनी, ऊ स्वीकृति देते कहलन -"आइल करी ! दोसर ना समझेम !"

सोफा से उठके ध्रुवनाथजी कहलन -"फेर हजुर से आके बात करेम । हजुर से सबेर में त सब दिन भेंट होइए जाई ?"

"हँ, सब दिन ! कौनो समय में आईं, स्वागत बा !

उनकर हरदी लेखा बोली हमरा के कुछ क्षण तकले त प्रभावित कइलक, मगर ओह मे जे बनावटीपन छिपल रहे से हमरा हृदय के झँकझोर देलक । एतने में हम दुनू जने नमस्कार कके बाहर निकल गइनी ।"

✠✠✠

बिहफे के दिन

सबेरे खाना खाए से पहिलही पुलचोक तक जाके मोटर देखाके आ जाईं सोचला के बादो भी हम बिना खाना खइले घर से ना निकल सकतानी । 'हमेशा ठंढा भात केतना खाएके मन बा ? एह घर के कचकच सुनेके मन ना कइलक । ओही से केतनो देर होखो, खाना खाइएके घर से निकलेके निश्चय कइनी । ओह दिन के 'गोरखापत्र' के विज्ञापन से हमार मोटर बिकाएके स्थिति में हो गइला से हम मनेमने प्रसन्न बानी । हमरा कब जाके मोटर देखा दीं जइसन हो रहल बा । घर-परिवार के सब जने के पानी ढोए में लगाके मोटर के साबुन पानी से धोके चमका देले बानी । केवल हमरा 'दोर्जेसदन' पहुँचेके देरी बा । टेलिफोन से हमरा बतावल अनुसार दोर्जेसदन पुलचोक दोराहा के अगल-बगल होखेके चाहीं ।

हम मनेमने विचार करे लगनी -'दोर्जेसदन में हमरा बोलइले बा मगर टेलिफोन में नाम 'छिरिङ' कहले बा । हो सकता 'छिरिङ दोर्जे' उनकर नाम होई आ आपन पछाड़ी के नाम से घर के नाम रखले होई । बिनहीए टेलिफोन करेके अर्थ छिरिङ दोर्जे के मोटर के बेसी आवश्यकता होगइल होई । तब हम निश्चय कइनी - एह बेर एक-दू हजार कमो मूल्य कहीहन तबो मोटर छोड़के चल आएब ।

हमरा पुलचोक पहुँचेके बहुत जल्दी रहे ओह से जल्दीए खाना खा लेनी । जल्दी-जल्दी कपड़ा लगाके पुलचोक प्रस्थान कइनी । रास्ताभर सोचे लगनी -'मोटर के मूल्य केतना कहल ठीक रही ? बेसी बतइला पर बाते ना कके भेज दी कि ? कमो बतइला से खुदे नोक्सान होई !' एह बेर हम मोटर के मूल्य ना बतावेके निश्चय कइनी । यदि ऊ मोटर के मूल्य सुनेके बहुत इच्छा करिहन तब एतना मात्र कहेम -'इहे कम्पनी के बनावल नयाँ मोटर के दाम रउआ मालूमे बा, ई त दस बरीस पुरान बाटे, रउः मूल्य निर्धारण करीं !' एतना कहला पर उनकरो त कुछ-न-कुछ मूल्य बतावही के होई । उनकर बतावल मूल्य में एक-दू हजार ना देखके आँख मूँन के फेक देहम ।

पुलचोक दोराहा पर मोटर रोकके पैंड़ा धके जात एक आदमी से पुछनी -"भइया ! दोर्जेसदन कहाँ बा ?"

ऊ चलते-चलते खड़ा हो गइलन आ सोचके कहलन -"दोर्जेसदन ? इहे पुलचोक में कहले रहे ?"

"हँ, पुलचोक दोराहा में तनि भीतर कहले रहे ।"

ऊ तुरन्ते कहलन -"ए ! स्मगलर दोर्जे ? हँ, पुलचोक में बा ! ओह रास्ता से जाईं, दहीना ओरी विशाल रङ्गीन घर देखेम । उहे बा ।"

उनकरा के धन्यवाद देके हम आपन मोटर ओरी गइनी । हम सोचले रहीं, मात्र छिरिङ दोर्जे । इहाँ एक व्यक्ति से सुननी स्मगलर दोर्जे ! दोर्जे मात्र से ना चिन्हेवाला ! बिनही फोन करेवाला व्यक्ति के हमरा हृदय में जौन रूप समझ में आइल रहे, 'स्मगलर' शब्द ओकरा नाम के आगे जुड़ल सुनते उनकरा प्रति के हमार पहिले के सोच बदल गइल । हमार दिमाग उनकर रूप के कल्पना ना करे सकल । बल्कि हमरा दिमाग में बहुतो प्रकार के प्रश्न उठे लागल -'ई दोर्जे कइसन होइहन ? रूप, देही-नेही उनकर कइसन होई ? उनकर विचार कइसन होई ? ऊ हमरा से कइसन व्यवहार करिहन ?'

एतने में हम ठीक जगे पहुँच जातानी । बहरे दुआरी पर 'दोर्जेसदन' लिखल बा । दुआरी के बगल में 'पत्रमञ्जुषा' आ 'कुत्ता से सावधान' लिखल बा । मोटर के स्टार्ट बन्द कके हौर्न बजावे लगनी । एक आदमी दुआरी से बाहर निकल के कहता -"केकरा के खोजतानी ?"

"छिरिङ दोर्जे के ।"

"छिरिङ साहेब के कि दोर्जेसाहेब के ?"

ओकर बात सुनके हम दुविधा में पड़ गइनी । हम सोचले रहनी, छिरिङ दोर्जे एके होई । हमरा सबेरे टेलिफोन त छिरिङ कइले रहे । इहे सोचके हम कहनी -"छिरिङ के ।"

'होई, हम छिरिङसाहेब से पुछके आवतानी । बोलइहन तब भेंटब' कहके ऊ हमरा से पुछलक - "रउआ कहाँ से अइनी ह ?"

'सबेरे टेलिफोन कइलहा व्यक्ति कह दीं ।'

'ठीक बा' कहके ऊ भीतर चल जाता । हम दोर्जे के ना भेंट सकेम, ओ व्यक्ति के कहे अनुसार छिरिङ के मात्र भेंट सकतानी । पुलचोक दोराहा पर भेंट भइल व्यक्ति के एक शब्द के प्रयोग हमरा के दोर्जे से भेंट करेके इच्छा बढ़ा देता ।

बाहर के दुआरी खोल के पहिलेवाला व्यक्ति हमार स्वागत करता । हम आपन मोटर लेके भीतर कैम्प में प्रवेश करतानी । ऊ व्यक्ति हमरा बाहर के खुला बइठक में बइठेके कहता । हम बाहरवाला बइठक में रहल एगो गद्दीवाला कुर्सी पर बइठ जा तानी । तीन ओरी से फूल आ लत्तीसब पूरे बइठक के ढकले बा । मानलीं ई 'बइठक-बगैचा' बा ।

एगो युवक बइठक में प्रवेश करते कहता - "रउआ के सबेरे हमहीं फोन कइले रहनी ।"

"ए, रउआ छिरिङ बानी ?"

'हजुर' कहके हमरा से हाँथ मिलइला के बाद नजदीक के कुर्सी पर बइठके ऊ कहता -'इहे गाड़ी बा ?'

"हजुर, इहे बा ।"

"ई त बहुत बेकार बा ।"

"बेकार नइखे, पुराना पक्के बा ।"

"केतना मोल रखले बानी ?"

"का मोल राखेम पुराना गाड़ी के । चला के देख लीं ! इन्जिन सब बनइले बानी । टायर सब नयाँ बा । मोटर देखके खुद मोल लगाईं ।"

ऊ मोटर के चाभी माडते कहता -"चलीं ना स्टार्ट कके देख लीं ।"

हम दुनू जने मोटर ओरी जातानी । ऊ ड्राइभरसीट पर बइठके स्टार्ट करे लागता । हमार नजर कम्पाउण्ड के चारू ओरी दउरे लागता । एकाएक हमार आँख मोटर गैरेज पर पड़ता । एक से एक चम्कीला आ नयाँ मोडल के चारगो कार देखतानी । ऊ मोटर सब के देखला पर हमार मोटर के त मोटरे ना कहल जा सकेला । हमरा लाज हो गइल । घर में चार-चारगो मोटर भइला के बादो काहे मोटर किनेके खोजले बाटे ? एह से हमरा आश्चर्य लागल । मोटर के देख लेला के बाद छिरिङ आ हम फेर बइठक में आ गइनी । हमार सिर लाज से निहुर गइल । हम कुछियो पुछेके स्थिति में ना रह गइनी । 'खुदे मोटर देखनी' कहके देखे देवेवाला छिरिङ से 'कइसन बा त ?' तक ना पुछे सकनी । उहे पुछलन -"मोल केतना रखले बानी ?"

हम उनकर बात काटके धीरे से कहनी -"ऊ गैरज में राखल मोटर राउरे बा नुँ ?"

"गाड़ी त हमनीए के बा । ई सब दोर्जेसाहेब के पसन्द के गाड़ी बाटे । प्रायः इहे मात्र चढ़ेलन । नयाँ गाड़ी उनकर मनेजर खातिर लेवे लगनी ह ।" उत्सुक होके हम पुछनी -"ई दोर्जेसाहेब के बाड़न ? हम त राउरे नाम छिरिङ दोर्जे होई सोचले रहनी । टेलिफोन में छिरिङ कहले रहनी आ घर 'दोर्जेसदन' कहले रहनी ।"

"दोर्जेसाहेब हमार बौस बाड़न । हम उनकर सेक्रेटरी बानी ।"

"ए, दोर्जेसाहेब इहवें रहेलन ?"

"हँ, काठमाण्डू में रहला पर इहवें बइठेलन ।"

"मतलब ऊ आउर जगे भी बइठेलन ?"

"उनकर न्यूयोर्क आ हैमवर्गमें भी घर बा ।"

"ए, एकर मतलब बेसी समय ओन्हीए रहेलन ?"

"वर्षेभर कहीं न ! इहाँ त बरीस में आठ-नौ बेर मात्र आवेलन । हप्ता-पनरे दिन मात्र बइठेलन ।"

"अभी ऊ कहाँ बाड़न ?"

"अभी त एतही बाड़न ।"

दोर्जे के विषय में हम जेतना बात सुननी, ओ से उनकरा से हमरा भेंटेके इच्छा आउर बढ़ते चल गइल । हम कइसे भेंटेके इच्छा व्यक्त करीं ? सोझे छिरिङ के कहला से भेंटे सकेम कि ना ? तइयो छिरिङ से धीरे से कहनी -"का दोर्जेसाहेब के हम भेंट सकतानी ?"

ऊ हमार प्रश्ने ना बुझके सोझे जबाब देलक -"ई एगो गाड़ी त हमही खरीद सकतानी । ऊ अइसन छोटमोट काम करेके फुलपावर हमरे के देदेले बाड़न । दोर्जेसाहेब से बात करेके जरूरत नइखे ।"

हम उनकर सब बात बुझ गइनी मगर हमार बात के आशय ऊ ना बुझे सकलन । हम आपन विचार बदलके उनकरा के कहनी -"ई बहुत पुरान मोटर बा । फेर दोर्जेसाहेब जइसन व्यक्ति त आपन मनेजर के नीमने गाड़ी खरीदके दीहन । बल्कि केतना तक के गाड़ी रउआ चाहतानी, से जनला से हम आपन साथी सब से विचार करेम ।"

"से त गाड़ी देखले पर कहे सकेम । निमन गाड़ी होई त एक लाख तक दे सकतानी ।" हम मनेमने कहनी - "एतना रकम से त हमार गाड़ी लेखा पाँच - छौ गो गाड़ी खरीद सकेलन । जे समझ के हम घर से निकलल रहीं, ओ में असफल हो गइनी ।"

इहाँ आ गइला के बाद ऊ महापुरुष, जेकर अमेरीका आ जर्मनी में भी घर बा, से भेंटेके अभिलाषा मन में जाग गइल बा । हम इहे योजना बनावे में व्यस्त बानी । हम सोचते गइनी - बेसी समय यूरोप आ अमेरीका में रहेवाला दोर्जे के घर के बगीचा आ ओह महल के बाहर के आकृति पूरे यूरोपीय शैली के देख रहल बानी, घर के भीतर के सजावट कइसन होई ? जेकर हम कल्पनो तक ना कर सकतानी ।

छिरिङ से भइल बात से हमार मोटर उनकरा खातिर अयोग्य साबित हो गइल बाटे । अब हम मोटर बेंचे के पक्ष में नइखीं । हमार उद्देश्य में परिवर्तन हो गइल । हम ओह घर के वातावरण के सम्बन्ध में जानकारी लेवेके पक्ष में बानी । हम छिरिङ से पुछनी -"राउर बात से रउआ दार्जिलिङ के बानी जइसन लगता, हमार अनुमान ठीक बा ?"

"हजुर, ओइसने बा, कालिम्पोङ ।"

"काठमाण्डू में कब से रह रहल बानी ?"

"दू बरीस होखे लागल ।"

"तबे से दोर्जेसाहेब के इहाँ बानी ?"

"ना, इहवाँ डेढ़ बरीस भइल । ओ से पहिले एगो बोर्डिङ स्कूल में पढ़ावत रहनी । छौ महिना स्कूल में शिक्षक होके काम कइनी ।"

हम काठमाण्डू के स्थिति के बारे में उनकरा के कहनी -"हँ, शिक्षण पेशा से काठमाण्डूमें जीअल मुश्किल बा । रउओ अनुभव कइनी । कैसन लागल रउआ ?"

"इहे कारण से त हम शिक्षण पेशा छोड़ देनी । ओइसे त जौना बोर्डिङ स्कूल में हम पढ़ावत रहनी, ऊ बोर्डिङ स्कूल हमरा के अच्छा तलब देले रहे । लेकिन महिना के छौ सय पचास रोपेया से हमरा असगरहु ना पहुँचत रहे । काठमाण्डू के स्टैण्डर इहे बा । का करीं, जीएके पड़ल !"

"दोर्जेसाहेब के इहाँ त रउआ नीमने होई नुँ ?"

"एकदम निमन ! इहें रहतानी । खाना भी फ्री बा ! मोटर के सुविधा बा । तलब भी हैण्डसम बा ! काम भी ओतना कठिन नइखे ।"

ऊ साधारण ढंग से आपन स्थिति हमरा आगे रखलन तइयो हमरा खातिर दोर्जे साहेब के महत्व आउर बढ़ते गइल । दोर्जेसाहेब से भेंटेके उपाय सोचके हम छिरिङ के कहनी -"दोर्जेसाहेब से भेंटेके हमरा बहुत इच्छा बा । उनकर नाम से परिचित रहनी । आज संयोग से एतहें आ गइनी । जान पहचान भइला पर हमहु उनकर कौनो सेवा कर सकतानी कि ?"

ऊ कुछ देरतक कौनो जबाब ना देलक । कुछ देर के बाद ऊ कहलक -"ओइसे त परिचय भइल बहुत अच्छा बात बा । राउर गाड़ी त ना भइल, मगर हमनी के परिचय त गाड़ीए के माध्यम से भइल । रउआ जे दोर्जेसाहेब से भेंटेके कहनी, से हम अभी ना कह सकतानी ।"

विनम्रतापूर्वक छिरिङ के आपन आशय बतइनी -"रउआ साथे परिचय भइल । अब एक-दोसरा के पड़ल समस्या प्रति सकभर सहयोगो निश्चिते प्राप्त होई । एही से जान पहचान बड़का बात बा । उनकर नाम के कारण हमरा बहुत पहिले से उनकरा से जान-पहचान करेके इच्छा रहे । आ साँचे कही त खाली मोटरे देखावे खातिर ना होके हम उनकरा से भेंटो करेके

ख्याल से आइल बानी । छिरिङजी ! कृपा कके रउआ यदि मदत कर देहम त हमार वर्षो से बाँकी रहल इच्छा पूरा हो जाई ।"

ऊ हमार बात सुनके गुम हो गइल । कुछियो ना कहे सकल । शायद ऊ सोचले होई -"ई के बा ? काहे भेंट करेके चाहता ?" उनकर मन के शंका दूर करे खातिर हम कहनी - "छिरिङजी ! रउआ दोर्जेसाहेब के एतना कह दीं 'एक जने अपरिचित स्थानीय व्यक्ति भेंट करे आइल बा । रउआ के सहयोग करेम से इच्छा व्यक्त करता । भेंटाईं कि ना भेंटाईं ?' अइसन कहला पर ऊ भेंटेके इच्छा व्यक्त ना करिहन त ना भेंटेम । रउआ एतना कष्ट कर दीं हमरा खातिर ।"

'ठीक बा, राउर इहे इच्छा बा त हम एक बेर कह देखतानी, कुछ देर बइठीं' कहके बइठक से बगीचा ओरी गइल ।

दस मिनट के बाद ऊ आके हमरा से हमरा विषय में पुछे लागल - राउर नाम का बा ? कहाँ रहतानी ? काहे भेंट करेके चाहतानी ? कौन काम करतानी ? हम छिरिङ के एक-एक प्रश्न के उत्तर देनी । आपन काम के विषय में 'काम अभी कुछियो नइखीं करत' बतइनी । इहो कहनी कि अच्छा काम के खोजी में बानी । ऊ फेर हमरा ओतहें अकेले छोड़के चल गइलन ।

पाँच मिनट बाद छिरिङ प्रसन्न मुद्रा में हमरा आगे आके कहलन - "चलीं, मगर उनकरा बेसी समय नइखे ।"

हम दुनू जने खुला बइठक से बगैचा ओरी लाग गइनी । हम मनेमने छिरिङ के धन्यवाद देनी । ऊ हमरा कहला से भी बेसी बढ़ाचढ़ा के जरूर दोर्जे साहेब के कहले होई । उनकर काम में सम्मिलित होखेके बात छिरिङ जरूरे उनकरा के बतइले होई । हमरा त खाली दोर्जेसाहेब कइसन बाड़न ? उनकर रहन-सहन कइसन बा ? पुलचोक में जौन व्यक्ति भेंटल रहे ओकर कहल शब्द आ वास्तविकता केतना मिलता ? मालूम करेके बा ।"

हमनी एगो बड़ा हॉल में प्रवेश कइनी । ऊ मुख्य बइठक रहे । उहाँ कुछ देर बइठाके छिरिङ ओ से भीतर के कोठली का ओर गइलन । बइठक के चारू ओरी निमन सोफा सब लगावल गइल रहे । बीच में आग जरावेवाला बनावल स्थान आ चारू ओरी नेपाली शैली के मूर्ति तथा हस्तकला के सामान सब से बइठक कोठली के देवाल सब सजावल रहे । बइठक के पूरे भाग में ऊन के गलैचा बिछावल रहे ।

कुछे देर में छिरिङ बाहर आके हमरा के भीतर के कोठली में आवेके ईशारा कइलन । हम भीतर के कोठली में प्रवेश कइनी । हम ओतहाँ कौनो दोर्जेसाहेब के ना देखनी । सिङ्गल सोफा पर एगो आदमी के बइठल मात्र देखनी, जेकरा के हम अच्छा से चिन्हतानी । हम सोचनी - उहो दोर्जेसाहेब से भेंटे आइल होइहन । दोर्जेसाहेब के प्रतीक्षा में ऊहो हम रेलेखा बाड़न । हम ओने ध्यान ना देके छिरिङ ओरी देखके कहनी -"दोर्जेसाहेब आउर एतहों से भीतर बाड़न ?"

हमार प्रश्न सुनके छिरिङ ठकमका गइल । कुछ देर कुछियो ना बोले सकलन । फेर ऊ कहलन -"इहे त दोर्जेसाहेब बाड़न ।"

हमार विश्वास के विपरीत ऊ कहलन तब कुछ देर हमहुँ ठकमका गइनी । हम दोर्जेसाहेब कइसन होइहें सोचले रहनी मगर ऊ त एगो साधारण आदमी रहलन ! ओहु में पहिलही से हमार चिन्हल !

दोर्जेसाहेब कहावेवाला व्यक्ति के हम आज से आठ बरीस पहिले से चिन्हले बानी । तिब्बती शरणार्थी के रूप में नेपाल प्रवेश करेवाला ई व्यक्ति नेपाली ना जानत रहलें तब हम इनकरा के मदत कइले रहनी । क्षेत्रपाटी में दू सय रोपेया प्रति महिना में डेरा खोज के हमहीं रहेके व्यवस्था कर देले रहनी । इनकर आ हमार ओ समय में दू बरीस तक रस्तेपैंड़े बराबर भेंट होत रहे । पाँच-छौ बरीस से इनकरा के हम ना देखले रहनी । आज देखतानी दोर्जेसाहेब के रूप में ?

हम उनकरा ओरी बढ़ के कहनी -"रउआ बानी दोर्जेसाहेब । हमरा चिन्हनी ?"

शान्त स्वभाव से ऊ कहलन -"काहे न चिन्हेम ? बइठीं !"

ऊ हमरा के चिन्ह लेलन सुनके खुशी लागल । दुआरी लगे खड़ा छिरिङ के दोर्जे बाहर जाएके ईशारा कइलन तब छिरिङ बाहर चल गइल । कोठली में हम आ दोर्जे मात्र बानी ।

हम दोर्जे के पहिलेके बात इयाद करावते पुछनी -"एः ! राउर नाम दुक्पा नइखे का ?"

"बा ।"

"कइसे दोर्जे हो गइनी त ?"

"दुक्पा लामा काठमाण्डू के गल्लीमें मर गइल । ई त दोर्जे बाँचल बा ।"

ओइसे त उनकरा आ हमरा बीच कौनो घनिष्टता ना रहे । ऊ जब तिब्बत से भारत होके नेपाल प्रवेश कइले रहलन, ओह बेरा ऊ नेपाली भाषा बिल्कुले बोलेके ना जानत रहलें । एकजने साथी के इहाँ उनकर आ हमार परिचय भइल रहे । ओह समय में ऊ प्रायः अंग्रेजीए बोलत रहलें । हिन्दी बुझत रहलें, बोले ना सकत रहलें । उनका साथे जीएभर के कुछे पइसा रहल होई । ऊ क्षेत्रपाटी के डेरा में जब रहत रहलन तब काठमाण्डू के सड़क-गल्ली में प्रायः भेंट होत रहे । ऊ कौन काम करत रहलें, हम उनका से कभी ना पुछनी । हम एतने जानत रहीं कि ऊ काठमाण्डू में तिब्बती शरणार्थी के रूप में रहेलन । आज एकाएक ओह अवस्था में देखला पर हमार उनकरा के दोर्जेसाहेब कहके तुरुन्त स्वीकार ना कइल स्वाभाविक बा ।

हम उनका के धीरे से पुछनी -"दोर्जेजी ! एतना प्रगति कइसे कइनी ?"

हमरा प्रश्न के रोकके ऊ कहलन -"छोड़ दीं ई बात ! काथी पिएब ? बियर भा स्कॉच ?"

हम उनका के कहनी -"धन्यवाद ! हम नइखीं पिअत । हो सकता त एक कप कॉफी ।"

'बस, कॉफी मात्र ?' कहके इन्टरकम सेट से दू कप कॉफी के आदेश देके हमरा से कहताड़न -"रउआ का कर रहलबानी ?"

"काम त कौनो विशेष नइखे ।"

"कौनो काम ना कके काठमाण्डू में कइसे जीअल जा सकता ?"

"खेतीपाती से जे आवता ओही से कइसहु पहुँचाके ।"

"पहुँचीं कइसे ? अमेरीका आ यूरोप से काठमाण्ठू में खाना महँगा बा ।"

"कइसनो होखे करही के पड़ता । खाए खातिर हमनी जीअत रहतीं तब त खाना में बहुत खर्च होइत । हमनी त जीए खातिर खातानी । हमनी के कमो भइला से हो जाता ।"

हमार विचार उनकरा ठीके लागल रहे, ऊ खुशी होके कहलन - "ठीक कहनी । ओइसन दिन हमहुँ त बितइले बानी । हमार मतलब काठमाण्डू में खाएवाला साधारणो चीज दोसर जगह के तुलना में महँगे बा ।"

एही बीच में फोन के घंटी बाजता । ऊ फोन में बात करे लगलन -"हेलो, दोर्जे स्पीकीङ्ग ..... गुडमर्निङ्ग एस.पी.साहेब ! कहीं .... कथी पकड़ाइल बा ? कहाँ ? हमनी के एयरपोर्ट में ? ..... बैङ्कक एयरपोर्ट में त ना होखेके चाहीं ..... का एयरपोर्ट में सुटकेस जमा ना कके सिटी गइल बा ? ..... आज सिङ्गापुर से टेलेक्स आई ओकरे प्रतीक्षा में बइठल बानी ..... खराब समाचार ..... धन्यवाद, ओ.के. बाई !"

टेलिफोन राखके हमरा ओरी घुमके कहे लगलन -"अनाड़ी आदमी के काम में लगइला पर धोखा हो जाता ।"

वास्तविकता से अनभिज्ञ भइला के बादो टेलिफोन पर भइल वार्तालाप से कुछ अनुमान कके हम दोर्जे के कहनी -"कइसन मूर्ख रहे ?"

हमार प्रश्न के उत्तर उनका देवहीके पड़ल । ऊ हमरा नीचा से ऊपर तक देखके कहलन -"इहे त कहतानी ! अनाड़ी आदमी, बैङ्कक के रमझम, साँझ बीतावे खातिर हड़बड़ा के निकल गइल होई । पकड़ा गइल । ओहो आजे इन्टरपोल खबर देले रहे । जानकारी त तुरन्ते मिल गइल । अभी हम का कर सकतानी ?"

उनकर नोक्सानीप्रति सहानुभूति प्रकट कके कहनी -"बहुत जादा रहे का ?"

ऊ आपनपैर कॉफी टेबुल पर पसार के दुनू हाँथ मुँह के नजदीक लेजाके विचार करते कहे लगलन -"ना, बहुत त नइखे, सिङ्गापुर पहुँच गइला पर पाँच लाख यू. एस. डॉलर के रहे । अब ना पहुँचे सकल त पाँच लाख रोपेया के माल खरीद आ आठ लाख रोपेया विविध खर्च कइला पर तेरह लाख के नोक्सान हो गइल ।"

हम धीरे से पुछनी - "माल काथी रहे ?"

ऊ हमरा बात पर ध्याने ना देके विचारमग्न होके सोफा पर सुतल बाड़न । कुछे देर में इन्टरकमसेट से छिरिङ के बोला के कहेलन -"अभी सिङ्गापुर कन्टैक्ट कके माल ना पहुँचेके बात पार्टी के बता द, साथे जुम्ला आ

दाङ में भी खबर पेठा द । सात दिन के भीतर ओतने माल तेयार होखेके चाहीं ।"

"माल सिङ्गापुर ना पहुँची ? गुरुङ कहाँ चल गइल ?"

"बैङ्कक एयरपोर्ट पर पकड़ा गइल । इन्टरपोल इहाँ खबर कइले बा । हम तुरुन्ते खबर पइनी ह । खबर त तुरन्ते पइनी, मगर का कर सकतानी ! ओही से माल तुरन्ते पेठावेके परल ।"

छिरिङ दोर्जे के समझावते कहलन -"सोनाम सँगे भी दस लाख के माल बा कहके परसवें खबर कइले रहे । इहे बुक कर दीं ?"

"होई । उहो खरीद कर ले आ जुम्ला आ दाङ में भी ऑडर कर दे ।"

छिरिङ बाहर जाता । दोर्जे अपने काम के विषय में सोचे लागता । एतने में कलकत्ता से ट्रङ्कल आवता । ऊ टेलिफोन से बात करे लागता - "हेलो दोर्जे स्पीकीङ हियर ..... एस..... काठमाण्डू ..... ओ.के. ..... हँ, दोर्जे बोलतानी ..... चल चुकल ? ..... डाइरेक्ट जर्मनवाला जहाज नइखे ? ..... ठीक बा त, अच्छा ..... तोरा आजे काठमाण्डू अइला से होई .... ओ. के. !"

ऊ लम्बा साँस लेके कहता-"एगो बड़का मुड़बथी ओरा गइल ।"

उनका मन के बात हम ना बुझे सकनी । ऊ हमरा से स्पष्ट बात ना करेके चाहलन । जेतना एकतर्फी बात सुननी ओह से कुछ अन्दाज लगइलो पर हम ओ विषय में उनकरा से बात ना कर सकतानी । हमार एक-दूगो प्रश्न के उत्तरो देवे में ऊ हिचकिचा रहल बाड़न । ऊ विषय में हम पूरा जानकारी ना लेवेके निश्चय कके दोसर विषय में पुछातानी - "दोर्जेजी ! न्यूयोर्क आ जर्मनी में भी राउर कारोबार के बारे में सुनले रहनी । उहाँ के कारोबार कइसन चलता ?"

"कइसे मालूम भइल ?"

"दोर्जेजी ! राउर नाम त बहुत बड़का व्यापारी में गनल जाता । राउर रूप से परिचित ना रहलो पर बहुतो आदमी राउर नाम सुनले बा । एतना बात काहे ना मालूम होई ?"

ऊ हमार बात सुनते अचरज करत कहलन -"का हम अइसन प्रचार में आ गइल बानी ? तब त मुश्किल हो गइल !"

"काथी के मुश्किल ! नाम चलल त अच्छे नु बा !"

"प्रचार में अइला पर हम ओतना पइसा ना कमा सकतानी जेतना प्रचार में ना अइला पर कमा सकतानी । हम सोचले रहीं जे हम केवल तारे होटल आ प्रहरी से मात्र परिचित बानी । एकर मतलब रउओ प्रचार भइले के कारण से हमरा से भेंटे आइल बानी का ?"

उनकर शंका निवारण करे खातिर हम खुदे आवेके कारण बतइनी । हमार मोटर छिरिङ पसन्द कइले रहलन आ पुरान होखेके कारण काम ना लागेवाला कहला से खरीद-विक्री ना होखे सकल, तब सोचनी जे घर के मालिको से भेंट कर लीं आ तबे रउआ से भेंट कईनी ह से विस्तारपूर्वक बता देनी ।

विस्तृत रूप में भेंटेके कारण बतइला पर ऊ हमरा से कहलन -"हँ, हैम्बर्ग आ न्यूयोर्क में कारोबार बा । इहे हमार नेपाली हस्तकला के सामान आ तिब्बती आ नेपाली गलइचा के विक्रीकक्ष खोलले बानी । सगरे दुःखे देखेके पड़ता । बरीस में बेशीसमय ओनही रहतानी । छोट-छोट फ्लैटो बा । बेटोबेटी सब ओन्हिए रहता ।"

हम उनका से पुछनी -"तब त रउआ उहवें के नागरिक बन गइनी का ?"

"ना, एतहें के नागरिक बानी । ऊहाँ के नागरिक होखे खातिर स्टेट के औपचारीकता सब पूरा करेके पड़ता । बहुत कठिन बा । इहाँ जइसन नइखे ।"

"ए, इहाँ के नागरिकता ले लेले बानी ?"

"अरे का कहतानी ? ना लेला पर एतना बड़ा व्यापार हम कइसे करतीं ? ले लेनी । ओही से त हम एतना बड़ा व्यापार करेके मौका पइले बानी !"

ऊ विषयवस्तु बदलके हमरा के कहलन -"का रउआ हमरा साथे काम करेके चाहतानी ? रउआ हमार पुरान परिचय के आदमी बानी । रउआ हमार पहिले के सब बात मालूम बाटे । हम केतनो धनीक होके दोर्जेसाहेब हो जाईं रउआ नजरमें दुक्पे लामा त बानी । रउआ हमरा के साथी समझ के हमरा साथे काम करेम त रउआ बहुत फायदा होई ।"

हम काम खातिर दोर्जे से भेंट करे नइखी आइल । हमरा त केवल दोर्जे के काम कइसन बा, से बुझेके रहे । स्थिति ठीक आवत देखके हम उनकरा के कहनी -"देखीं दोर्जेजी । काम करेब मात्र कह देला से ना होई । ओकरा साथे समयो अनुकूल होखेके चाहीं । फेर हमरा लगे पइसा नइखे । एतना बड़ा काम, हम रउआ साथे मिलके कइसे कर सकतानी ? हमरा साथे रउआ उपहास कइल जइसन लागल । ना हम कर सकेम ना रउआ कराएम ।"

दोर्जे हमरा समझावते कहलन -"खाली रउआ करेके इच्छा मात्र बताईं, बाँकी सब बन्दोबस्त हम मिलाएब । रउआ लेखा स्थानीय व्यक्ति के हमरा बहुत आवश्यकता बा । ओहु में रउआ हमार पुरान परिचित व्यक्ति बानी । रउआ के सहयोग ना करेके कौनो कारण नइखे, एह लाइन के काम पइसा भइला से मात्र ना होला । ई त बुद्धि आ चालाकी से केहु के सहयोग पाके करेवाला काम ह । एह लाइन में प्रवेश करेखातिर करेजा मजबूत कके अपना के एह में समर्पित करेके पड़ेला, तब जादू कइल जइसे दिन दुगुन्ना आ रात चउगुन्ना प्रगति होत जाला । आ एह देश में ई काम कइल बहुत आसान बा । अइसन मौका सभतर बराबर ना रहेला ।"

ऊ कहते जालन -"देखीं रउआ मालूमे बा काठमाण्डू आवत समय हमार कइसन स्थिति रहे ? रउआ लोगनी के मदत पावेवाला हमार स्थिति रहे । आज हम .... करते गइनी आ अभी के हैसियत में पहुँच गइनी । एही से ..... करे खातिर एगो निश्चय कके करते जाएके पड़ता । समय खुद श्रृजित होके हमनी के आगे खड़ा हो जाला । समय हमनी के नइखे बनावत, हमनीके समय बनावेके पड़ता ।"

दोर्जे के मनसाय हम बुझ गइनी । हमरा माध्यम से कौनो काम करेके चाहता । उनकरा अबो रोपेया नइखे पहुँचल । रोपेया कमाएवाला आदमी के निसा कबो ना समाप्त होखेवाला क्षितिज लेखा होला । इनकरा एतना धन-दौलत भइला के बादो ई काम नइखन छोड़ले ।

हम उनकर विचार के प्रतिकूल ना जाएके चाहतानी । उनकर विचार के बढ़ावा देते कहनी -"दोर्जेजी ! राउर विचार शतप्रतिशत ठीक बा । समय हमनी के बनावेके चाहीं । समय हमनी के चलाई त हमनी कुछियो ना करे सकतानी ।"

ऊ हमरा प्रति आकृष्ट हो रहल बाड़न । पहिले कुछियो ना बतावे चाहेवाला दोर्जे अब आपन रहस्य धीरेधीरे खोलते जा रहल बाड़न ।

एही बीच में एगो युवती दुनू हाँथ से ट्रे में कॉफी-पॉट ला के हमनी के आगे राखतारी आ दोर्जे के आदेश अनुसार दुनू कप में कॉफी बनावतारी । हमनी दुनू जने कॉफी पिए लागतानी । युवती कोठली से बाहर चल जाताड़ी ।

कॉफी पीतेपीते दोर्जे कहताड़न -"देखीं ! एह व्यापार के बारे में रउआ के हम छोट नमूना पेश करतानी, जे हमार जीवन से सम्बन्धित बा । रउओ हमार प्रगति के विषय में पुछनी । एही से रउआ से कौनो बात ना लुका के कहतानी काहेकि रउआ हमार पहिलको दिन देखले बानी । हमरा जीवन में घटल घटना सुनावतानी, सुनी । जब हम काठमाण्डू के गल्ली में घूमघूम के साँझ में एगो रेस्टुरेण्ट में शान्ति खातिर दारु पिए लागत रहीं, ओही बेरा हम बुहतो विदेशी साथी बनावते गइनी । एकाएक एक दिन हमार टेबुल के बगल में एगो जर्मन के बइठके नक्सा बनावत देखनी । उनका आ हमरा बीच बात होखे लागल । घंटो तक बात भइला के बाद हमनी में दोस्ती हो गइल । उनकर बनावल नक्सा के विषय में उनकर होटल के कोठली में जा के समझावेके इच्छा व्यक्त कइला के कारण हम ओतहें से उनकर होटल के कोठली में गइनी । ऊ हमरा देवता के मूर्ति देखाके कहलन -'ई इहाँ बा, मन्दिर में एतना दुआरी बा, दुआरी एह ढंग से लागता, एतना समय से एतना समय तक आदमी रहता ।' सब वैज्ञानिक तरिका से विश्लेषण कके देके कहलन - यदि ई मूर्ति काठमाण्डू में हैण्डओभर होई तब पचास हजार देहम, जर्मनी पहुँचा देला पर तीन लाख देहम । पचास रोपेया जेबी में ना रहल व्यक्ति हम ओ मन्दिर में घूमे लगनी । बहुत दिन के प्रयास के बाद एक स्थानीय व्यक्ति के सहयोग से ऊ मूर्ति हमरा डेरा में पहुँच गइल । जे सहयोग कइले रहे, ओकरा एक हजार देनी, सम्झौता अनुसार जर्मन जेतना पइसा देले रहे, ओह से आपन बिजनेस जमावे लगनी । बाद में हम बिजनेस के क्रम में जर्मनी पहुँचल रहीं । जर्मनी में एगो साथी के ड्राँइड रुम के आकर्षण के केन्द्र बनल ओ मूर्ति के देखनी । हम उनकरा से मूर्ति के विषय में पुछनी, एगो फ्रेन्च एक लाख मार्क में बेंचले रहे । हम ओही मूर्ति के न्यूयोर्क जा के पाँच लाख डॉलर में तय कके अइनी । बाद में जर्मनी से ऊ मूर्ति न्यूयोर्क पहुँचा के पाँच लाख डॉलर में बेंचनीं, अब कहीं ऊ बिजनेस के

कौनो सीमा बा ? हो सकता ऊ मूर्ति आउर केतना में बिकाई ? जौना मूर्ति के सब से पहिले एक हजार मूल्य निर्धारण भइल रहे, इहे मूर्ति हम दू बेर बेंचनी । हर खेप स्थिति अनुसार अधिकतम मुनाफा कमइनी । साँच कहीं त हमार जीवने ऊ मूर्ति बना देलक ।"

ऊ कहते जालन - रउआ के का कहीं ? एह काम में हमरा चारु ओर से सहयोग मिलता । एकरा अलावे काठमाण्डू के जेतना भी बड़ा कहावेवाला लोग बा प्रायः सब अइसनके अबैध कहेवाला काम कर रहल बाड़न । काहेकि एही में रोपेया बा आ रोपेये में इज्जत बा । इयाद करीं, काठमाण्डू में चम्केवाला कार में घूमेवाला व्यक्ति के आँख में देखी, रउआ स्पष्ट रूप से अबैध व्यापार के चमक देख सकतानी । छोटा अबैध ! बड़ा अबैध ! एतने फरक बा ।

उनकर बातो ना समाप्त भइल रहे कि इन्टरकमसेट के घंटी बज गइल । ऊ सेट में बात करे लगलन - "हैलो ..... राजासाहेब ..... भीतर भेज द ।"

दोर्जे रिसिभरो ना रखले रहलन कि एगो व्यक्ति कोठली में प्रवेश कइलन

"आईं ! राजासाहेब आईं !" - दोर्जे ओ व्यक्ति के स्वागत कके कहलन-"बहुत दिनवाद दर्शन भइल हजूर के !"

हम जौना सोफा पर बइठल रहनी ठीक ओकरे अगाड़ी के सोफा पर बइठके ऊ हमरा ठीकिआवे लगलन । हमरा विश्वास बा ऊ हमरा के ना चिन्हिहन मगर हम उनकरा के चिन्हतानी काहेकि ऊ नेपाल के एगो नामी समाजसेवी बाड़न । 'ठूलो बाबुसाहेब' कहला से पश्चिमाञ्चल के बच्चा तक ले उनकरा के चिन्हता । काठमाण्डूओ में उनकरा के बहुतो लोग चिन्हता । कौन अइसन सामाजिक संस्था नेपाल में नइखे, जौना में ऊ योगदान नइखन देले ? हम उनकरा के आदर के दृष्टि से देखले रहीं, मगर एकाएक इहाँ देखके हम हारान हो गइनी । हमार परिचय देके दोर्जे बाबुसाहेब के कहलन - "ई हमार पुरान साथी बाड़न ! इहो हमरा साथे काम करिहन ।"

बाबुसाहेब के परिचय देत दोर्जे कहलन -"राजासाहेब के हमनी के संरक्षक कहला से होई । उनकरे सहयोग से हमनीका काम कर रहल बानी । रउआ के ईहो कह दीं कि रजेसाहेब के सहयोग से हम नागरिकता ले पइनी ।"

दोर्जे के स्पष्ट बात से बाबुसाहेब के परेशानी हो गइल । ऊ आपन लजाइल चेहरा पर प्रसन्नता देखावत कहलन -"का बात करतानी दोर्जेसाहेब ? रउआ मनाङ में जन्मल व्यक्ति के नागरिकता दिआवे में काथी के मदत करेके पड़ता ? ऊ त राउर जन्मसिद्ध अधिकार बा !"

बाबुसाहेब हमरा आगे कौनो बात ना करे चाहलन । एही से ऊ दोर्जे से दोसर कोठली में जा के गोप्य बात करेके आशय व्यक्त कइलन । दोर्जे हमरा के तनि बइठीं कहके दुनू जने दोसर कोठली ओरी चल गइलन । करीब पन्द्रह मिनट के बाद दोर्जे हमरा लगे आके कहलन -"राजासाहेब चल गइलन । इनकरा लोगनी के बैलेन्स में राखल बहुत मुश्किल बा । काम करेलन छेरुआ ताल से आ खाएके खोजेलन शेर के जइसन ।"

हम उनकरा कहेके अर्थ ना बुझे सकनी ? खोध के पुछेके बातो ना भइल । बाबु साहेब के विषय में बात कइल ठीक ना समझ के हम चूपे रहनी । दोर्जे आपन स्थान पर आके बइठलन आ कहलन -"हम काठमाण्डू में एक हप्ता यदि बइठेम त तीन-चार लाख बाँटहीके परी मगर जे भी होखे, खइला अनुसार आज तक ठीके कइले बाड़न ।"

हम उनकर बात के शह देत कहनी -"अइसन देवेवाला आपना लगे क्षमता भइल ठीके बा । फेर राउर नून खइला पर रउआ प्रति वफादारो त बाड़न !"

हमार बातो ना खतम भइल रहे कि ऊ सहमति जनावते कहलन - "ठीके कहनी । इहाँ के आदमी त बहुत सीधा बा । एके साँझ खाएके भेंटलो पर दिनभर सलाम करते रहता । देवेके आ खिआवेके चाहीं, तब ई लोगन बाप-माई बराबर मान्यता देता आ एतना ईमान्दार बा जेतना एगो मालिक के प्रति कुत्ता रहता ।"

दोर्जे के ई वाक्य हमार चेतनशील मस्तिष्क स्वीकार ना करे सकल । हमरा काहे ना काहे बहुत खराब ढंग से बेधे लागल ? ओ शब्द के विरोध में हम कड़ा प्रतिक्रिया देवेके चाहतानी मगर खाली दोर्जे आ हमही बन्द रहल ओ कोठली में अब पागल साबित हो सकतानी । हम अपना के सम्हार के शिष्ट भाषा में दोर्जे के कहनी - "दोर्जेजी ! रउआ इहवें रहके एतहें के नागरिक के रूप में संसार में चिन्हा रहल बानी तइयो इहाँ के आदमी लोगन के रउआ काहे एतना नीच बुझतानी ?"

जबाब में ऊ कहलन -"हम त इहाँ के आदमी के इमान्दारी के उदाहरण देनी ह । हमरा कहेके अर्थ इहाँ के आदमी में ईमान्दारी काफी बा । ई बात छोड़ दीं ! काम के विषय में बात करीं ।"

दोर्जे हमार मन के भावना बुझके विषयवस्तु के बेवास्ता कके दोसर विषय में बोले लगलन ।

हम सोचनी - इनकरासाथे मात्र ओह विषय में बहस कइल ठीक नइखे । जे उनकर अनुभव रहे, से व्यक्त कइलन । अनुत्तरदायी नागरिकवाला एह समाज में एक दोसर के प्रतिनिधित्व ना कइल जा सकता । आपन-आपन डम्फ से चाह के होई भा ना चाह के सब के नचा रहल बा । दोर्जे के बदलल विषयवस्तु में हमार रुची नाहिओ रहला पर ऊ बोलते जा रहल बाड़न -"बुझीं आ विचार करीं रउआ ! हमनी के ई काम चीखेवाजनोक लेखा लेखा देश के खतम करेवाला काम नइखे । हमनी कृत्रिम अभाव श्रृजना कके मूल्य में उतार-चढ़ाव ना करतानी । पाँच प्रतिशत के खर्च में लाइसेन्स निकालके शतप्रतिशत जनता से नइखीं निकालत । राजश्व में चोट नइखीं पहुँचावत । हमनी के व्यापार त स्पष्ट बा । जंगल में सड़-गल जाएवाला सामान के उपयोग में लावतानी । अनुत्पादित मूल्यहीन वस्तु के मूल्यनिर्धारण करतानी, जेकरा से केहु के बेफायदा नइखे । जे ई काम करता, ओकरा त फयदे-फायदा बा ।"

दोर्जे आपन काम के दोसरा के काम से तुलना कके कहते जाता - "दखीं ! हमनी ओइसन कामे नइखीं करत, जौना से एह देश के नोक्सान होई । आपन दायित्व आ अधिकार के विसर के धन के लोभ में आँख मुनके सहीछाप कके देश के धोखा नइखीं देत । जनप्रतिनिधि कहावेवाला लेखा 'मुँहँ में रामराम बगल में छुड़ी' हमनी नइखीं स राखत । हमनी के काम त स्ट्रेट फॉरवार्ड़ बा । ओही से एह में काम करे खातिर हिचकिचाएके कौनो कारण नइखे ?"

दोर्जे के दृष्टिकोण हमरा आगे स्पष्ट हो गइल । निर्भीक होके ऊ आपन विचार व्यक्त कइलन । आपन काम से ऊ पूर्ण सन्तुष्ट बाड़न । दोसरा के काम से उनकर काम स्वच्छ आ निर्मल बा कहके ऊ घमण्ड करताड़न । उनका कहे अनुसार हम उनकरा से प्रश्न करेके कौनो जगे नइखीं देखत । हम चूपचाप उनकर बात सुनते जा रहल बानी ।

ऊ कहते जालन -"इहाँ के आदमी में हिम्मत नइखे । ई बुझीं जे बुद्धि नइखे । ओइसे त हम इहे कारण से दुक्पा से दोर्जे हो गइनी, कुछे बरीस में हमार अइसन हैसियत हो गइल । हमार व्यक्तिगत लाभ के दृष्टिकोण से त अइसन भइल अच्छा बा, तइयो हम चाहतानी सब हमरेलेखा हैसियतवाला होखे । कुछ इहाँ के इज्जतदार सब त ऐ काम में शरीक बा ? एही से हम रउआ के जोड देके कहतानी कि रउआ एह काम में आँख मून के प्रवेश करीं ।"

हम टकटकी लगा के उनकर बात सुन रहल बानी । हम उनकर बात में असहमति ना जना सकतानी । उनकर आग्रहो के स्वीकार ना कर सकतानी । उनकर कहल केतनो स्पष्ट होखे हमरा नजर में उनकर काम अबैध बा । इहे आपन विचार के स्पष्ट करेके इच्छा से हम धीरे से कहतानी -"दोर्जेजी । रउआ जौना काम के विषय में बतइनी ह, ई ऐन नियम विपरीत काम हम कइसे करीं ? फेर कानूनी बन्धन से हमेशा बाँचलो त ना जा सकेला ?"

हम आपन विचार पूरा करहु ना सकल रहीं कि ऊ कहे लगलन - "रउआ हमरा बता सकतानी कि अइसन काम करेवाला व्यक्ति कभी आ कहीं कानून के नजर में पड़ल बा ?"

"समाचारपत्र में कभी-कभी पढ़ले बानी ।"

"का ऊ समाचारपत्र में छापल खबर अनुसार पकड़ाइल आदमी हमनी जइसने रहे ?"

"से त ना कह सकतानी ?"

"त, सुन लीं ! ओकनी के त साधारण कामदार रहता जेकरा के हमनी एक भा दू हप्ता में कानून से मुक्त कराके छोड़ावतानी । कभी-कभी त हमनी कर रहल बानी से देखावेखातिर हमनीए से पुछके प्रहरी पकड़ाउर करता । ई त केवल दोसर लेखा साधारण व्यक्ति के आँख में खाली धूरा झोंके खातिर कइल जाता । ओ से कानून के नजर एहू पर बा सेही साबित करावल जाता । केहु एही विषय के आधार पर सजाय पाके बइठल बा त ओकनी के जालझेल रचके फँसावल गइल बाटे । जे वास्तविक रूप में ई काम करता, से कभी फँसिए ना सकेला । हम ई दावा के साथ कह सकतानी, विश्वास करीं ! हमनी के गैंग में नीचा से ऊपर तक सेटीङ मिलइले बानी । अभी के अवस्था में हमनी हरेक क्षेत्र से संरक्षित बानी । हमनी के केहु कुछियो ना करे

सकता, रउआ मालूम बा ? कुछ महिना अगाड़ी पाँच लाख के अबैध सामान के क्रम में पकडाइल व्यक्ति अभी आराम से घूम रहल बा ? ओकरा के कानून कभी ना रोके सकल । कहीं, अब ऊ काम के सरकार नियन्त्रण करे सकी ? बन्द करावे सकी ? रउआ के हम विश्वास दिआवेके चाहतानी आ स्पष्ट कहतानी कि ओकनी के हमनी तक पहुँचिए ना सकेला । रउआ जेकरा के अबैध कहतानी ऊ बैध बा काहेकि कानून के नजर में हमनी हमेशा साफ बानी । अच्छा बानी ! असल बानी !"

दोर्जे के विचार के प्रतिकूल हम विवाद नइखीं खड़ा करेके चाहत काहेकि ऊ वर्तमान स्थिति के पूरा बुझके तर्क प्रस्तुत कइले बाड़न । उनकर कहब केतना ठीक बा ओकरा के हम वर्तमान से तुलना करे लागतानी । उनकर कहब हमनी के समाज के वर्तमान स्थिति से शतप्रतिशत मिलता ।

हमरा दोर्जे के इहाँ बइठल बहुत देर हो गइल रहे । जौन उत्सुकता लेके दोर्जे से भेंटेके चाहले रहीं, पूरा हो गइल रहे । हम उनकरा के नजदीक से बुझेके मौका पइनी । नाम मात्र सुनला पर हमरा मन में जे कौतुहल पैदा भइल रहे, भेंटघाट में हमरा साधारण लागल । वास्तविक जीवन से परिचय भइला पर कौनो विचित्रता ना होला ।

हम दोर्जे से बिदा माङते कहनी -"दोर्जेजी ! बहुत समय राउर लेनी ! परिचय भइल । फेर आवत रहेम, अभी आज्ञा दीं ।"

उनकर बात में हम सहमति ना जनइले रहनी ओह से ऊ ओ बात के फेर दोहरावे लगलन । उनकरा साथे मिलके काम करेके आपन आग्रह ऊ बारम्बार दोहरावे लगलन । हम उनकरा के एतने कहनी - "दोर्जेजी ! अब परिचय हो गइल, अइबे करब । रउआ साथे मिलके काम करेके बारे में कुछ दिन हम विचार करेम । कुछ दिन के बाद हम फेर आएम ।"

ओकर बाद ऊ हमरा के ना रोके सकलन । अन्त में ऊ एतने कहलन -"जरूर आई ! सदैव राउर स्वागत बा !"

दोर्जे से बिदा लेके हम कोठली से बाहर निकल गइनी । बाहर बइठक में चार-पाँच जनेके बइठल देखनी । एकाएक हम ओकनी के चेहरा ठिकिआवे लगनी । हमार कहिओ ना देखल चेहरा सब हमरा ओरी आकर्षित हो गइल । हमार आँख छिरिङ के चारू ओरी खोजे लागल मगर हम ना देखतानी ।

बाहर बगीचा में दोसर एगो व्यक्ति से छिरिङ बतिआत रहे, हमरा के देखते ही बहुत उत्सुक होके हमरा ओरी बढ़के कहलक -"ए ! रउआ त बहुत समय पइनी । इहाँ दोर्जेसाहेब से भेंट करे बहुत आदमी आ गइल बाड़न । बातचीत कइसन रहल ? फ्रुटफुल ?"

"हँ, कहेके परल ।"

"तब त आवते रहेम ।"

"देखीं !"

"का देखीं ! जरूर आईं ! हमनी के साहेब एतना लम्बा समय तक कभी ना बतिआत रहलें । बहुत करत रहलें त पाँच से दस मिनट तक । आज के रउआ लोगनी के बइठकी देखके त हम आसानी से अनुमान कर सकतानी कि रउआ लोगनी एगो विशेष योजना तेयार कइले होखेम ।"

"ना, कौनो योजना नइखे बनल ।"

"कुछियो होखे, रउआ आवत रहीं ।"

"होई ! - हम हँसके औपचारिकता पूरा कइनी ।"

हम दोर्जेसदन से आपन घर का ओर चल देनी । रास्ताभर हमरा दोर्जे के ओही अर्द्धरोशनी में बन्द कोठली के भीतर बइठले लेखा अनुभव भइल । हमार मन भीतर उत्तररहित प्रश्न सब आवे लागल - ईमान्दारी ? नैतिकता ?? सत्यता ???

✠✠✠

सुक के दिन

विक्रम के प्रतीक्षा में आज के हमार पूरे सुक के दिन के बिनहिआ बीत गइल आ तबो ऊ आइल नइखे । कहीं बाहर निकलीं सेहू कइसे कहीं आ जाई कि आशा से कहीं निकलहु ना सकल बानी । खाना खाएके समय हो गइल । हम निश्चय कइनी । खाना खाए तक ले भी विक्रम ना अइलन तब कहीं बाहर निकल जाएम ।

विक्रम काठमाण्डू में पलल-बढ़ल लड़िका बा । छोटे उमीर से आपन काम कके अपने पैर पर खड़ा भइल लड़िका बा । उमीर में हमरा से छोट भइलो पर परिपक्व आ ठोस विचार के विक्रम दिल खोल के बात करता । वास्तव में कहीं त हम ओकरा से बात करे में प्रसन्नता महशूस करतानी । ओकरा से भेंट भइला पर हम खूब आनन्दित भइल बानी । ओइसे त ओकरा आ हमरा बीच में कौनो लेनदेन के व्यवहार नइखे, केवल मित्रता मात्र बा । एकरा अतिरिक्त ऊ हमार भाई के साथी भइला से हमरा के 'दादा' कहता । हम ओकरा के भाई कहलो पर मित्र के रूप में स्वीकार कइले बानी ।

विक्रम के व्यवसाय निर्माण सेवा बा । ऊ करीब बारह बरीस से निर्माण कार्य के ठेक्का लेवेके काम करत आइल बाड़न । विकासोन्मुख देश में निर्माण कार्य बेसी भइला के कारण विस्तृत दृष्टिकोण राखके ऊ ई व्यवसाय आपनइले बाड़न । छोट-छोट घर के निर्माण साथे मन्दिर सब के जीर्णोद्धार के

काम से आपन कार्य शुरू कइले बाड़न । ऊ क्रमशः आपन कार्यक्षमता के विकास कके रास्ता-पैंड़ा, कलभर्ट-पुल आ विशाल भवनसब भी बना चुकल बाड़न । उनकर कहब अनुसार ऊ देश में सब से अच्छा व्यवसाय निर्माण सेवा बा । साधारणतः ऊ ईमान्दार आ नैतिक में से बाड़न मगर ऊ व्यवसाय में आपन ईमान्दारी आ नैतिकता ना बँचा सकेवाला बात भी समय-समय पर कहले करेलन ।

विक्रम सङे हमार भेंट बराबर होत रहता । उनकर आ हमार भेंट भइला पर एक-दू घंटा बितल साधारण बा । स्पष्ट वक्ता विक्रम बातचीत करे खान पूरा शरीर घुमा के वातावरण के आनन्दित बना देवेलन । एही से उनकरा से बातचीत कइल हमरा बहुत अच्छा लागेला ।

हम खाना खाके कपड़ा लगा रहल बानी । एकाएक ड्रॉइङरुम में गुँजल हँसी हमरा कान में पड़ता । झटपट कपड़ा लगाके हम ड्रॉइङरुम में पहुचतानी ।

"दादा नमस्कार !" -विक्रम सोफा से उठके हमरा के अभिवादन करता । ओकरा साथे बइठल एगो अपरिचित व्यक्ति का ओर संकेत कके हम विक्रम से पुछतानी -"इनकरा के हम ना चिन्हे सकनी !"

'ई हमार साईट के ईन्जिनियर साहेब बाड़न, दादा से परिचय करावे खातिर लिआइल बानी' कहके विक्रम हमार परिचय करावता ।

तीर्थरत्न हमार नाम मात्र सुनले रहलन । बहुत दिन से हमरा से भेंटेके इच्छा व्यक्त कइले रहलन, ओही से विक्रम तीर्थरत्न के लेके आइल रहलन । ओइसे त तीर्थरत्न एगो ईन्जिनियर, उनकर आ हमार विषय अलग-अलग रहलो पर विक्रम के हमरा प्रति के श्रद्धा आ विश्वास तीर्थरत्न के हमरा से भेंटेके उत्कण्ठा जगा देले रहे, जे हम पहिले बातचीत के क्रम से समुझ गइनी ।

विक्रम तीर्थरत्न के विषय में बहुत सुनइलन । ऊ एक भलादमी आ ईमान्दार ईन्जिनियर बाड़न । भारत के रुड़की से सिभिल ईन्जिनियरिङ के डिग्री प्राप्त करेवाला तीर्थजी दस बरीस से श्री ५ के सरकार के सेवा में कार्यरत बाड़न । उनका के एकेगो दुःख सतइले बा । ऊ बा प्रमोशन । उनकर साथी सब में ऊ मात्र असिस्टेन्ट ईन्जिनियरे पद पर बाड़न । तीन जने त सुपरीन्टेन्डिङ ईन्जिनियर हो गइल बाड़न । डिभिजन ईन्जिनियर बनेके

प्रबल इच्छा राखेवाला तीर्थजी आपन आदमी उपर ना भइला के कारण प्रमोशन ना होखेके बात बतइलन ।

तीर्थजी के विषय में आउर जानकारी लेवेके आशा से हम पुछनी -"तीर्थजी ! रउआ ई दस बरीस के अवधि में कौन-कौन कार्यालय में काम कइनी ?"

ऊ गम्भीर होके जबाब देलन -"भारत से अइला के बादे हम खानेपानी में खटावल गइनी । तीन बरीस उहाँ काम कइला पर खानेपानी के सम्बन्ध में कुछ जानकारी प्राप्त कर चुकल रहीं तब सिंचाई मन्त्रालय अन्तर्गत के विभिन्न योजना में बदली कर दीहल गइल । खानेपानी में काम करेवाला के सिंचाई में खटा देला पर हम कइसे काम देखइतीं ? कम-से-कम एक-दू बरीस त नयाँ काम बुझही में लागता । हम सिंचाई में कुछियो काम देखावे ना सकनी । फेर दुइयो बरीस पहुँचल ना रहे कि विद्युत विभाग अन्तर्गत जलविद्युत आयोजना में काम करे खातिर खटा दीहल गइल । एही तरहे सड़क विभाग आ स्थानीय विकास विभाग होते अभी भवन विभाग में बानी । जहाँ गइनी, हम उहाँ नयाँ रह गइनी । कुछियो जाने आ बुझे लागेके बाद हमरा के आउर जगे खटा देल जात रहे ठीक ओइसही जइसे एगो नव सिखुवा खेलाड़ी के पैर से गेन उछिट के निकल जाला ।"

ऊ कहते जाताड़न -"देखीं ना, ई उपर के स्तर में रहेवाला सब इहे सोचेला जे ईन्जिनियर होके आइल व्यक्ति सब कुछ जनले बा । बाँकिर कौनो जगे काम कइला के बादे उहाँ के विषय में जानकारी हो सकता आ जानकारी भइले पर काम कइल जा सकता । ऊ बात ना बुझके, जान-बुझ के हम काम नइखीं कइले जइसन आरोप लगावे में मात्र हुनरबाज बा लोग । हमार आदमी उपर रहला पर हम आज चीफ ईन्जिनियर हो गइल रहतीं । काहेकि एके विभाग में काम करेके मौका मिलला से ओ काम के सम्बन्ध में हम विशेष ज्ञान प्राप्त कर सकत रहीं । अनुभवी आ पुराना के आधार पर प्रमोशन देवेवाला खातिर भी आसान हो सकत रहे । कौनो कार्यालय में हम नयाँ आ हमरा खातिर कार्यालय नयाँ होत गइल ।"

हम आपन विचार व्यक्त करते उनकरा के कहनी -"एह तरहे सब अड्डा घुमला पर सब क्षेत्र के अनुभवो त होला कि ना ?"

उपहासपूर्ण मुद्रा में हमरा विचार के काटते कहलन-"हँ, बहुत अनुभव होता ? इहे अनुभव करावे खातिर त लोकसेवा भेंटेनरी डॉक्टर के स्वास्थ्य सेवा में खटइले रहे आ हर्टीकल्चर पढ़के आइल व्यक्ति के डिपार्टमेण्ट अफ कल्चर में खटइले रहे नुँ ?"

तीर्थजी लम्बा साँस लेके जेबी में सिकरेट खोजे लगलन । एतने में विक्रम आपन जेबी से सिकरेट निकाल के उनकरा के देता । सिकरेट के धुँआ कोठली भर फइलावत ऊ कहते जालन -"रउआ इहाँ के विषय में कइसन बुझले बानी से त हमरा मालूम नइखे मगर जइसे हम बुझले बानी ओकरा आधार पर इहे कहल जा सकता कि इहाँ कौनो ठोस प्रशासनिक नीतिए नइखे । कृपा के भर पर जीएके पड़ता । के का कर सकता ? का नइखे करे सकत ? एकर खोजी करेवाला केहु नइखे ? केहु केकरो के कुछियो कर सकेला ? सुनवाई होखेवाला कौनो जगहे नइखे । साँच कहीं त हमरा इहाँ नोकरी करेके मने नइखे ।"

तीर्थजइसन एगो देश के योग्य व्यक्तिद्वारा एह प्रकार से असन्तुष्टि व्यक्त भइला पर हमरा ठीक ना लागल स्वाभाविके बा । ओह से पहिले उनकरा से हम भेंटलहु ना रहीं । पहिलके भेंट में ऊ आपन मन के पीड़ा व्यक्त कइलन । ओइसे त उनकर मन के दुःख के त हम कौनो प्रकार से ना हटा सकतानी काहेकि सुनके सहानुभूति मात्र जनावेके अतिरिक्त हमरा लगे आउर कौनो उपाय नइखे । ई सब बात बुझला के बादो ऊ कहते जालन - "हमार पिताजी हमरा के कहले रहलन - 'ए ! नेपाल में बाँचे खातिर टेंढ़ गाछी के सोझ कहेके परी आ करिआ के उज्जर कहेके परी, मगर तू ओइसे ना कहिहे ।' ऊ इहो कहले रहलन -'अनुचित फायदा लेवेके काम ना करिहे, ओ से राष्ट्र के बहुत नोक्सान होई ।' इहे उनकर आज्ञा के पालन कके हम आज तक कौनो अनुचित फायदा उठावेके काम ना कइनी, जेकर फलस्वरूप आपन ग्रुप में हम हरेक पक्ष से नीचा बानी ।"

बीचे में विक्रम बोललन -"अरे ! एह ईन्जिनियर साहेब के का बात करीं ? हमरो ठेक्कापट्टा के काम करत दसो बरीस होखे लागल । सयो ईन्जिनियर आ ओभरसियर के सङ्गत कइनी, मगर ईनकरा लेखा केहु के ना देखनी । दादा के मालूमे बा हम धनकुटा के अस्पताल भवन के ठेक्का लेले रहीं ? जम्मा छौ लाख के ठेक्का में दू लाख पचास हजार त ईन्जिनियर मात्र

लेलेलख ? हम ठेकेदार बानी, हमरा खुदे ऊ भवन बनावे में मन नइखे मानत ? का करीं, खुद कहल लेखा ना होला ? उनकरा लोगनी के सिखइला जइसन ना कइला पर भवन पासे ना होला ! एहू ईन्जिनियरसाहेब के ई सुनइनी । ई हमरा के कहलन, हमरा से अइसन ना होई । ठीक बा ! ऊ जे कहीहन से हमनी के करहीके पड़ता ।"

विक्रम के बात के सिलसिला में तीर्थजी हमरा के कहे लगलन - "हम भवन अन्तर्गत आजकाल विक्रमजी के बनावेवाला भवन में खटल बानी । ओ भवन के नेव में कंक्रिटिङ ना कके चार फीट के नेव में तीन फीट मात्र के नेव राखीं, करीब चालीस हजार बचत होई, बीस हजार रउआ लीं कहलो पर हम ना माननी । कारण ओइसन काम करेके विचार हम आपन मन में रखलही नइखीं आ आजतक कइलहु नइखीं । इहे हमार कमजोरी होखेके कारण त कौनो योजना के भाग हम उपर ना पहुँचावे सकल बानी । हमरा से उनकरा लोगनी के कुछियो प्राप्त ना भइल । एही कारण से हम अयोग्य हो गइनी ? कुछियो ना जानेवाला हो गइनी ?"

हम उनकरा के समझावते कहनी -"तीर्थजी ! ई त आपन-आपन प्रकृति आ सिद्धान्त के बात बा । आजु जे अनुचित तरीका से धन संकलन कइले बा, तत्काल ऊ अपना के खूब बुद्धिमान आ चलाक समझले होई मगर उहो दिन आई, जहिआ ओकरा शिर निहुराके मरे परी । रउआ आपन पिताजी के आज्ञानुसार जे सिद्धान्त प्रतिपादन कइले बानी, ओ में रउआ आत्मगौरब होखेके चाहीं । सत्यनिष्ठा सदा खातिर होला आ झूठ थोड़े देर खातिर मात्र होला । एही से रउआ जौन सत्य के आपनइले बानी, इहे राउर विजय बा, हार नइखे । ठीक बा, रउआ कुछ दिन दुःख दे रहल बा लोग, प्रमोशन ना भइल, एगो स्थिर आ स्थायी काम ना भइल ! तबो धैर्य ना छोड़ीं । ऊ दिन जरूरे आई ! ओइसन अत्याचारी के प्रत्येक व्यक्ति थुकके समाज से वहिष्कार करी । ओइसन के मुँह आ छाती पर खाली पैर से कवाज खेलल जाई आ ओइसन के प्रत्येक खून के ठोप से इहाँ के माटी बदला ली । ओ समय में रउआ जइसन इमान्दार व्यक्ति के कदर होई ।"

हमार विचार के समर्थन करत विक्रम कहलन -"हँ, ठीक बा । हरेक बात के सीमा होला । सीमा पार कइला के बाद केहु ना बर्दास्त करी । एतना भ्रष्टाचार एह देश में हो रहल बा कि बतावले सम्भव नइखे । काम करेवाला

तनि खात बा खाएके खोजी, ई बात साधारण बा मगर इहवाँ त जरे से उखाड़के जरतक के भी खाएके शुरू कर देले बा लोग ? केहु के डर नइखे ? होखो त कइसे ? सब खाही में व्यस्त बा, शुद्ध केहु नइखे ।"

ठेकेदारी करेके अवधि में विक्रम विभिन्न मनोभावनावाला व्यक्ति सब से भेंटले होइहन । उनकरा के इहाँ के वर्तमान स्थिति के पूरा ज्ञान बा । कइसे ना होई ? कामदार आ श्रमिक लोगन के बीच में रहके चौबीस घंटा काम करेके पड़ता, ठेक्का के काम पूरा करे खातिर कर्मचारी के चाकरी करेके पड़ता । फेर ऊ भ्रष्टाचार के मूल भी त ठेकेदारीए बा ? छोट ठेक्का हजार के होला त बड़ ठेक्का करोड़ के होला । एही से विक्रम के ओह सम्बन्ध में पूरा ज्ञान बा ।

हम विक्रम के कहतानी -"भाई ! ओइसन कौन ठेक्का में तू बेसी फायदा उठइलऽ ?"

"कौन कहीं ? बड़ा-छोटा कके बीसगो जेतना योजना के काम कइनी । बहुतो में त फयदो ना भइल कहला से होई । तीन-चारगो योजना में त सोचलो से बेसी फायदा भइल । एही से सन्तुलन तक मिलल बा, कहेके चाहीं । जहाँ तक बेसी फायदा के बात बा, उहाँ नैतिकता आ ईमान्दारी - के छोड़ेके पड़ता, तब फयदे-फायदा बा । इहे योजना कहेके बात नइखे । आज तक हम जेतना योजना में काम कइनी उहवाँ तीर्थ ईन्जिनियरसाहेब के अलावे केहु के ईमान्दार ना देखनी । इनकरा के 'ईन्जिनियर अपवाद' कहला से भी होई । आउर जेतना भी ईन्जिनियर आ ओभरसियर के देखनी, केहु में खाएके दाव छोड़के काम के बात त रहले ना रहे । हमनी के कम-से-कम खाए देवेलन आ खुद बेशी-से-बेशी खालन । एही से काम के जिम्मेवारी के दृष्टि से विचार कइला पर एही योजना में बेसी फायदा भइल, से ना कहल जा सकेला । नगद के दृष्टि से कहला पर सब योजना में फयदे बा ।"

विक्रम के बात के बीचे में काटके तीर्थजी कहलन -"काहे ना कमाई ? जहाँकहीं त कमाइए कमाई बा । ठेकेदार होखे, ईन्जिनियर एवं ओभरसियर होखे भा योजना से सम्बन्धित आउर अधिकारी भा लेखापाल होखे, सब के सब त कमाही के फेर में बा । योजना के लक्ष्य एक ओरी होता त ओकरा पूरा करेके जिम्मेवारी लेले लोग के स्वार्थ दोसर ओरी होता । परिणाम योजना चउपट्ट हो जाता । देखीं, हम दावा के साथ कहतानी, अभी दस-पनरे बरीस

एने अधिराज्यभर में जेतना भी भवन बनल बा, ओ भवन सब के कौनो 'गारन्टी' नइखे । कौनोसमय फाट सकता, बिगड़ सकता आ तुरन्ते भवनो ढहके गिर सकता । रउआ हालसाले में खबरपत्रिका में छपल समाचार पढ़ले होखेम अथवा सुनले होखेम, काठमाण्डू के एगो भवन में रहल मन्त्रालय आ ओकरा अन्तर्गत के कार्यालय सब रातेरात ऊ भवन छोड़के दोसर भवन में चल गइल । ओह भवन के कौनोसमयमें ढहके गिर जाएके लक्षणसब देखल शुरू हो गइल रहे । कहीं, केकर कइल काम में के जिम्मेवार बा ?"

विक्रम के ओ सम्बन्ध में जानकारी रहे । ऊ तीर्थजी के बात से सहमति जनावते कहलन -"हँ, ओह भवनका विषय में हमरो मालूम बा । करीब दस बरीस पहिले मात्र सरकारी अमानत में ऊ भवन निर्माण भइल रहे । ओ समय के खर्च आ निर्माण भइल भवन के देखला पर सयो बरीस कुछियो ना होखेके चाहत रहे । एही से आसानी से अनुमान कइल जा सकता कि ओह भवन में निर्धारित लागत के पैंतीसो प्रतिशत खर्च ना कइल गइल रहे । बाहर के रूप मात्र के सिङारके चमकावल गइल रहे । हम पूरा अनुमान कर चुकनी, भवन के कौन-कौन भाग के काम ना कके व्यक्तिगत स्वार्थपूर्ति कइल गइल रहे ।"

ठेकेदार विक्रम के मालूम ना होखेके बात ना रहे । सही ढंग से ठेकेदारी कके कौनो हालत में पइसा कमाइल ना जा सकेला । ऊ बारम्बार हमरा के कहत रहे -"का करीं दादा ! ई काम छोड़के दोसर काम करेके पड़ल ! ई चोरी लुचई के काम केतना दिन करीं ? टेण्डर दीं, सब से घटी ना भइला से टेण्डरे पास ना होई । काम ना रहल झोंक में घटिओ दर राखके काम लेवही के पड़ी । नक्सा-इस्टीमेट अनुसार काम करीं त आपन घर के पइसा लाग जाई । तब का करीं, मन नाहिओ मानला पर भी देश के धोखा देवहीके पड़ता ।"

समय-समय में विक्रम जे बातसब बतइले रहे ऊ हमरा इयाद बा । एगो ठेक्का में ऊ ईन्जिनियर के मिलावे ना सकल रहे, ओह से पचास प्रतिशत आपन घरघराना से नोकसान भइल बातो हमरा के बतइले रहे । विक्रम के ठेकेदारी लाइन के पूरा अनुभव बा । एगो योजना से सम्बन्धित अधिकारी केतना लेता ? लेखापाल केतना लेता ? आ ठेकेदार केतना बँचावता ?

कुछ देर के चुप्पी के बाद हम तीर्थजी से पुछनी -"तीर्थजी ! रउआ बहुतो कार्यालय में काम कइले बानी । राउर अनुभव से कौन कार्यालय रउरा अनुकूल रहे सकल रहे ?"

हमार प्रश्न से उनकरा कठिनाई लेखा हो गइल । ऊ निहुर के सोचे लगलन । फेर हमहीं कहनी -"तीर्थजी ! हमार प्रश्न केवल ... ?"

हमार बात समाप्तो ना भइल रहे कि ऊ कहलन -"से नइखे ! रउआ के हम कहे लागल रहनी ! देखीं, साँचे कहीं त हमार अनुकूल के कौनो कार्यालय भा योजना हम ना पइनी । हम अनुचित काम करतीं त सब हमरा से मिल सकत रहे आ सब खातिर हम अच्छो रहतीं । हम रउआ के स्पष्ट कहतानी, एह देश में आपन अनुकूल के कार्यालय हम ना देखनी आ ओइसन कार्यालयो नइखे कहला से होई । एही से त कभी कभी हमरा अइसन लागता कि विदेश में जाके काम करीं ।"

ऊ कहते जालन -"हमनी के देश में जइसन लूट त संसार के कौनो भी मुलुक में नइखे । केहू केतनो लूटे, छूटे बा ?"

हम उनकरा के समझावते कहनी -"ई चरम सीमा तक पहुँच गइल ? एकरा के केहु ना सह रहल बाटे । एकरा खातिर विशेष व्यवस्था के खोजी में सब लाग रहल बा । एकर अन्त होखेके समय आ गइल बा । रउआ जइसन व्यक्ति सब असन्तोष व्यक्त करे लाग गइल बा । एकर आयु लमहर नइखे ।"

हमार बात पर प्रतिक्रिया जनावते विक्रम कहलक -"दादा ! जे रउआ कहतानी, से ना हो सकेला एह देश में । इहाँ के जनता के देखीं, इहाँ के सम्पन्न व्यक्ति के मनोवृत्ति देखीं आ जिम्मेवार अधिकारी के चित्तवृत्ति देखीं-समझीं ! कौनो हालत में इहाँ एकर अन्त ना होई । इहाँ त आउर होड़बाजी चली- के बेसी कमाता से देखावे खातिर ! रउआ कौना वर्ग के बेसी नियन्त्रण करे सकतानी आ कौना पक्ष पर बेसी निगरानी राखे सकतानी ? असम्भव ! रउआ, हमनी के समाज के जाने-बुझेवला व्यक्तिसब के अन्तस्करण के अभिप्राय का बा, मालूम बा ? हमार बेटा पढ़-लिख के डॉक्टर होखे भा ईन्जिनियर होखे ? यदि प्राविधिक ना बने सकल बा त प्रशासक बनके बेसी पइसा कमाएवाला अड्डा में जाए, अइसन मनोवृत्ति बा ! एही अनुसार जे कइले बा ऊ देश में सम्पन्न के रूप में भी गिना रहल बा ? अब ऊ लोग आपन बेटाबेटी के भी ओही रास्ता पर दउरा रहल बा । ई क्रमबद्ध

रूप में चल रहल बा । देखीं दादा ! कौनो भी समाज में धनवला के बेसी बोलबाला रहता । आजु के समय धन के समय बा । रउआ लगे धन बा त सर्वशक्ति रउआ आगे झुँकजाई । हम राउर बात से सहमत नइखीं ?"

हमार साधारण विश्लेषण से जे हम देखनी, इहे कहनी । विक्रम के तर्कपूर्ण बात से हम असहमत नइखीं, तबो हमरा आपन विश्लेषणो के प्रति पूरा विश्वास बा । आज हमरा घर में तीर्थजी आके जौन अवस्था हमरा आगे रखलन, निश्चित रूप से सहे योग्य नइखे । वर्तमान अवस्था वास्तव में निन्दनीय स्थिति में पहुँच गइल बा । सम्पूर्ण समाज ओह अवस्था के बर्दास्त ना कर रहल बा ।

तीर्थजी आपन राय व्यक्त कइलन -"बहुत समय तक ले इहे स्थिति रहबे करी एह में त हमहुँ विश्वास नइखीं करत । ई वर्षात भइल बा । वर्षाते तक पानी गन्दा रही । जब जाडा आई, खुदे निर्मल आ साफ हो जाई ।"

हम तीर्थ के राय से सहमत होके कहनी -"ठीक कहनी तीर्थजी ! जब चारू ओरी पानी के अभाव आ हाहाकार होई, श्रोतसब बन्द हो जाई, छोट नदी आ पइन सब सुख जाई, तबे पानी निर्मल आ शुद्ध होई ।"

एही बीच में तीर्थजी आ विक्रम खातिर चाय आ जाता । चाय के साथे तीर्थजी सिकरेट जरावेलन । कुछ देर खातिर हमार ड्राँइडरुम शान्त बा । केवल चाय के चुश्की के मधुर ध्वनि मात्र गुँजता । तीर्थजी चायो पिएके समय में कुछियो सोच रहल बाड़न । हम उनकर चेहरा देखके आसानी से अनुमान कर सकतानी कि ऊ हमरा से बहुतो आपन व्यथा व्यक्त करेके चाहेलन ।

चाय के कप टेबुल पर राखके विक्रम कहेलन -"एही विषय में एगो बहुत सुन्दर घटना सुनावतानी । कइसे सब धुरफनई मिलजाता, सुनी ! करीब चार बरीस पहिले के बात बा । कर्णाली अंचल के एगो जिला में एगो झुलुवा पुल बनावेके रहे । काठमाण्डू से ओ पुल के निर्माण के ठेक्का बन्दोबस्त भइल । करीब दस लाख में हमार साथी नजरमान ऊ ठेक्का सकारलन । ओ योजना खातिर एगो ओभरसियरो खटावल गइल । दुर्गम क्षेत्र भइला के कारण ठेकेदार के कुछ पेशिकओ मिलल । बाँकी रकम ओभरसियर आ दू जने प्रतिनिधि के जिम्मा देके विभाग योजना शुरू कइलक । ठेकेदार के काठमाण्डू से बाहर ना जाएके पड़ल । ओभरसियर बिदा मनावे खातिर आपन तराई के घर तरफ जा

के तीन महिना बइठके आ गइल । जनप्रतिनिधि प्लेन चढ़के दू-तीन बेर जिला घूम अइलन । पुल बनके आदमी के सुविधो भइल बात रेडियो जिला समाचार में प्रसारित कइलक । फेर पुल के झर्ना बहा ले गइल बात राजधानी से प्रकाशित होखेवाला एगो समाचारपत्र छपलक । नजरमान सहित चारु जने बराबर हिस्सा बँटलन । पुल नइखे बनल कहके केहुके प्रमाणित करेके बाते ना रहल । पुल ठेक्का देवेके समय से लेके पुल के झर्ना बहा देलक तक के प्रमाण दुरुस्त बनइला के बाद के का कर सकता ? अइसे प्रमाण पहुँचा के काम कइला पर कइसे भ्रष्टाचार भइल ठहरी ?"

विक्रम के बात से तीर्थजी के कठहँसी लाग गइल । विक्रम से ओ विषय में आउर जानकारी लेवे खातिर तीर्थजी पुछलन -"का, ठेकेदार आ ओभरसियर योजनास्थल में बिना पहुँचले पइसा पचा गइल ?"

"हँ, काहे पहुँची योजनास्थल पर जब घरे में बइठके सब प्रमाण बन जाता तब ? जनप्रतिनिधि साविक के काठ के सामान झर्ना में बहाके, सामान झर्ना बहाके ले गइल सरजमीन मुचुल्का तेयार कइलन । झूठो त कहाँ कइलन ? छोट काठ के भी पुलेके सामान बा, बड़ा लोहा के समान भी समाने बा ! पुल के सामान झर्ना बहा देले बा इहो पक्का बा !"

हम जाने चाहनी -"एकर मतलब रेडियो-प्रसारण आ समाचार के छपाई आधिकारीक समाचार ना रहे ?"

"ठीक !"

"कइसे प्रसारण हो गइल त ?"

"जइसे पहिले से होते आ रहल बा ।"

तीर्थजी हमरा के समझावते कहलन -"हँ ! अइसन प्रमाण त हम पहिलहु पइले रहीं । छोड़ दीं ऊ बात के । हम रउआ-लोगनी के दोसर सुन्दर बात सुनावतानी ।

एगो विभाग कौनो ठेकेदार से एगो निश्चित ठेक्का पूरा करेके सम्झौता कइले रहे । काम शुरूओ हो गइल । ठेकेदार विदेशी रहे । ऊ सोचलक, मौका के फायदा काहे ना उठाईं ? एकनी के साथे पइसा बा, बुद्धि नइखे । एही बीच में मन्त्रालय में आवेदन देके सचिवजी से साँठगाँठ मिलइलक । देवेवाला के आपन घर के सम्पत्ति देवेके नइखे । एक करोड़

रोपेया दोसर विदेशी कम्पनी से ऋण लेके ठेकेदार के मशीन-औजार किनदेलक । सम्झौता-शर्त अनुसार ठेकेदार के ऊ मशीन-औजार चलइला पर निर्धारित शर्त अनुसार किराया बुझावेके रहे । नयाँ मशीन-औजार चलाके ठेकेदार काम पूरा कइलक । 'तोहार जुत्ता तोहरे कपार पर' कहल लेखा ना किराया देलक ना कुछियो, बेकम्मा लोहा के माल छोड़के ठेकेदार टाप कस देलक ।"

तीर्थजी कहते जा रहल बाड़न -"केतना कहीं अइसन बात ? केतनो कहेम समाप्त ना होई । जेने देखीं, अइसने बा । हम खानेपानी में जब रहनी, ओइसने भइल । पानी के पाइप राखेके चाहीं हेभी, राखता लाइट । मतलब कम मूल्य के । 'काहे अईसे कइल ह ?' पुछला पर 'ई जमीन के नीचा नुँ रहेवाला बा, कइसनो राखीं कुछ बरीस में बदलही के परी' कहके जबाब देला पर का करेम ? हम इहे देखनी । केहु में नैतिकता नइखे ? ई केवल फटाहा, लुच्चा मात्र रहेवाला जगह बा ? हम त अब विदेश में जा के काम करेम ।"

विक्रम बीचे में बोलेलन -"हमनी के ईन्जिनियर साहेब बराबर इहे कहेलन । आखिर केनहु गइला पर काम ना कके त खाएके नाहिए मिली । रउआ लेखा ईन्जिनियरो एह देश में कमे बा । राउर इहवाँ जेतना इज्जत होई, आन जगह पर ना होई । रउआ इहाँ के हवा में नइखीं मिलल । मिल जाएम त छोड़हू ना सकेम ।"

"देखीं विक्रम जी ! हम आपन नैतिकता बेंचेवाला रहतीं त पहिलही बेंच देले रहतीं । आज तक अपना के बँचाके रखल बानी । हम असगरे पड़ गइला के कारण विदेश जाएके चाहतानी, सुनले आ देखले ना रहतीं तब त आरामे से रहतीं ।"

हम तीर्थजी के सान्तवना देते कहनी -"रउआ जे सोच रहल बानी, ऊ राउर कमजोरी बा । रउआ एही देश में रहेके चाहीं, ई राउर जीत बा ! समय के प्रतीक्षा करीं, ऊ मौका जरूर आई !"

ऊ धीरे से कहलन -"अपने ठीक कहले बानी ! मगर का करीं ? दस बरीस से बिना धागा के तिलङी होके घूम रहल बानी ।"

एही बीच में विक्रम सोफा से एकाएक उठके घड़ी ओरी देखके धड़फड़ाते कहता -"अरे ! आजु दोसर मंजिल के ढलान खातिर सीमेण्ट आ छड़ लेआवेके रहे ।"

हम उनकरा के कहनी -"आज दिनभर फुर्सत नइख लेके आइल का ? अभी त एके बजता, कौना चीज के जल्दी बा ?"

"एक घण्टा तक मात्र लागी कहके आइल रहनी, तीन घंटा हो गइल । हम रोपेया नइखी छोड़के आइल । आउर इन्जिनियर रहतन त हमरा साथे के तीने सय बोरा सिमेन्ट से काम चला लेतीं । का करीं, तीर्थ ईन्जिनियरसाहेब ना मनिहन । फेर हमरा लप्पन-छप्पन करेके मनो नइखे करत ।"

उनकर बात पर जोड़ देत हम कहनी -"से त बा ! कम सिमेन्ट प्रयोग कके ढलान कइला से आगाते ढलान झरजाई तब त दोसरे मोसिबत हो जाई !"

ऊ हँसते कहलन-"ए, ओइसन त ना होई । पचहत्तर प्रतिशत तक सिमेन्ट कटइलो पर ढलान त रहबे करी, मगर जेतना टिकाऊ होखेके चाहीं ओतना ना होई । रउआ के साधारण नमूना बता रहल बानी । कोठली भा घर के प्लास्टर करे में एक-चार के हिसाब से सिमेन्ट देवेके पड़ता मगर रउआ एक-आठ के हिसाब से लगाईं, ओतना फरक ना परी । ओह तरहे पचास प्रतिशत सिमेन्ट बँच जाता । ई हिसाब ठेकेदारी के बा । आपन घर में अइसे ना प्रयोग करेके चाहीं ।"

विक्रम हड़बड़ाए: लगलन । हम तीर्थजी से आउर कुछ बात करेके पक्ष में बानी आ तीर्थजी भी हमरा से बात करे खातिर उत्सुक लउकताड़न । विक्रम के रोके खातिर हम चाय के घेरा राख देनी ।

"ठीक बा, मगर जल्दी करीं ।" - विक्रम फेर सोफा पर बइठते कहता - "रउआ लोगनी के आज बात समाप्त ना भइल होखे त दोसर दिन भेंटघाट करेके निश्चिन्त से करेम, ना होई ?"

हम तीर्थजी के सम्बोधन कके कहनी -"सब से बेसी खर्च करेवाला कार्यालय सब कौन कौन बा, रउआ मालूम बा कि ?"

ऊ तुरुते जबाब देलन -"सड़क विभाग त बा नुँ ! एही साल करीब पौने एक अरब रोपेया खर्च करेके निश्चय कइल गइल रहे ।"

"कइसन प्रगति भइल बा ?"

"कइसन प्रगति कहीं ! ठगे खातिर खइले-पतिअइले बा ।"

"मतलब ना बुझनी हम ?"

"बात सीधा बा । ठोस काम भइल कौनो नइखे लउकत ? योजना के रकम पचासो प्रतिशत योजना में सदुपयोग नइखे होत, का कहीं ?"

ऊ फेर कहते जालन -"एही विभाग अन्तर्गत चल रहल एगो ठेक्का के सम्बन्ध में रउआ के कहतानी । महेन्द्र राजमार्ग के एगो छोट खण्ड के रास्ता के बढ़ाके पीच करे खातिर एगो विदेशी कम्पनी के नौ करोड़ के ठेक्का देल गइल । काम लेला के एक बरीस में समाप्त कके भुक्तानी लेके ठेकेदार के गइला के बादे बनावल पूरे रास्ता फुटे-बिगड़े लागल । अइसने बा । जहाँकहीं के बतइला पर भी, ओइसने बा । इयाद कइला पर आउर खुदे दुःख होता । देखला के बाद कहेके मन करता । कहला से दुश्मन बनेके पड़ता । एही कारण से त हमरा इहाँ रहेके मन नइखे करत ।"

तीर्थजी साँस लेके जेबी से सिकरेट निकालके सुनगावेलन । सिकरेट के धुआँ में आपन आँख के ओझुरा के बइठेलन । शायद हड़बड़ाके अइसन करत बाड़न । विक्रम चाय जल्दी कहे खातिर ड्राँइङरुम से बाहर निकललन ।

कुछे देर में विक्रम संगे तीन कप चाय आ जाता । हम आ विक्रम चाय के कप हाँथ में ले लेनी । तीर्थजी के हाँथ में सिकरेट के टुकडी सुनगिए रहल बा । तीर्थजी के आकर्षित करते कहनी -"तीर्थजी ! चाय लीं । आज विक्रम के अबेर हो गइल । दू-चार दिन के बाद बेसी समय तक बइठेके हिसाब से आईं, फेर बइठके बात कइल जाई ।"

एह देश में अपना के मिला ना सकेवाला तीर्थजी विदेश जाएके फिराक में बाड़न । उनकर प्रत्येक बात में निराशा आ असन्तोष भरल बा । काहे ना होखो ? तीर्थजी जइसन ईमान्दार व्यक्ति के आवश्यकता ई देश अभी बुझले नइखे ? साथे तीर्थजी भी देश में आपन मूल्य नइखन बुझले । फेर हम कहनी -"तीर्थजी । दू-चार दिन के बाद जरूर आईं ।"

दुनू जने नमस्कार कके बिदा होके चल गइलन । तीर्थजी के उड़ावल ड्राँइङरुमभर फइलल सिकरेट के धुँआ में हम अकेले कुछ देर हेरा गइनी ।

✠✠✠

सनिचर के दिन

हम आज पशुपतिनाथजी के दर्शन खातिर भोरे घर से निकलेके फिराक में बानी । हमरा पशुपति मन्दिर में ना गइला महिनो हो गइल । दू बरीस पहिले तक हम प्रत्येक हप्ता कम-से-कम एक बेर जात रहीं आ ऊ क्रम अटुट रूप से दस बरीस तक चलल रहे । पशुपति ना गइल हप्ता हमरा खुदे फिँका लागत रहे । पशुपति गइला के बाद एक-दू घण्टा मन्दिर के अगल बगल बितावेके नियमे लेखा बन गइल रहे । मगर दू बरीस एने हम पशुपति मन्दिरे नइखीं गइल कहलो से होई । ऊ अवधि भीतर में हम मुश्किल से पाँच बेर मात्र ओतहाँ पहुँचल होखेम । आजकाल काहे न काहे हमरा ओ मन्दिर में जाएके फुर्सते नइखे आ जाएके इच्छो मेटा गइल बा । साँच कही त पशुपतिनाथजी के हमरा इयादो आइल छुट गइल बा ।

बिहने के आपन नित्य काम समाप्त कके हम पशुपतिनाथजी के मन्दिर में जाएके तेयार बानी । बाहर निकले खान दैनिक आवश्यकता के सामान सब खरीदके लेआवे खातिर आपन मेहरारू से प्रायः एगो छोट टिपोट आ झोरा लेत आइल बानी । ओकरे प्रतीक्षा में हम दुआरी लगे खड़ा बानी । हमार मेहरारू आके कहताड़ी -"आजु माई से भेंट कइएके बाहर जाईं ।"

मेहरारू के हाँथ में झोरा ना देखके हम मनेमने खुशी भईनी, आज कुछियो खरीदके ना लेआवेके बा समझ के । हमरा खरीदके लेआवे में बहुत झंझट लागता । समान खरीद के टिपोट ना लेके घर से निकलेके अवस्था में हमरा विशेष आनन्द के अनुभव होता । मेहरारू के हम ई ना समझावे चाहतानी कि ऊ झोरा आ टिपोट कागज देवेके बिसर गइल बाड़ी । हम चूपेचाप कुछियो ना बोलके माई के कोठली ओरी जातानी ।

माई हमरा के देखते कहतारी -"ई का ह ? बाप दादा के सम्पत्ति पर दोसर मौज करे ? तोहनी सब के एको मिनटतक के फुर्सत नइखे ? साथी बड़का वकिल बन गइल बा से सुनले रहनी । उनकरो से जा के त सलाह कइला से होई । का कके तोहनीका खइबऽ ? का कहीं ?"

माई ओह विषय में हमरा बहुतो बेर कह चुकल रहनी । हमरा फुर्सत ना रहे आ हम जाहु ना सकल रहनी । हमरा ओ घड़ारी के मोह नइखे, अइसनो बात नइखे । भक्तपुर नगरक्षेत्र भीतर के ऊ घड़ारी अभी बीसो हजार रोपेया में ना मिल सकता । खाली रोपेये के बात नइखे, आपन बाप-दादा के सम्पत्ति हम संरक्षण ना करेब त आपन सन्तान कइसे पाई ? हमरा सबकुछियो मालूम रहला के बादो ओह घड़ारी के रक्षा करे खातिर हम कौनो प्रयास नइखीं कइले ?

लँटकुमार कहावेवाला रत्नकुमार आपन 'घर पताल' कहके ओही घड़ारी पर घर बनावेखातिर नक्सा पास करा लेले बा । एक दिन खुदे जाके घर बनावे तक पर रोक लगाके आइल रहनी । हमरा लगे ओ घड़ारी के कौनो प्रमाण-कागज नइखे । लँटकुमार लगे घर बनावेके नक्सा पास करावल प्रमाण-कागज बा । पड़ोसी आ अगलबगलवाला सब हमार जमीन नइखे से ना कहे सकल बा । एकरे आधार पर मात्र हमार जमीन हमरा हाँथ से ना छूट सकता, ओह बात पर हम विश्वस्त बानी ।

हम माई के समझाके कहतानी -"कुछ दिन पहिले जाके घर बनावेके रोक देनी । आजकाल फुर्सते बा । आज वकिल के इहाँ जाके कानूनी सलाह कके ओही अनुसार से आपन जमीन मिला नु लेहम । काहे बेसी चिन्ता कइले बानी !"

'देखते देखते आपन पुर्खा के सम्पत्ति दोसर समाप्त करे लाग गइल ! तब चिन्ता ना कके का करीं ?'

सबेरे भइला के कारण रास्ता-पैंड़ा में ओतना बेसी आदमी ना रहे । सोचनी, पशुपतिनाथ के मन्दिर में आज फइली से दर्शन करेके मिली । आज ढेर दिन बाद हम मन्दिर जा रहल बानी । पशुपतिनाथ के प्रति अगाध श्रद्धा आ विश्वास बा हमरा हृदय में । हम उनकर अनन्य भक्तसब में से एक बानी । तइयो एह दिन में हम उनकर सेवा ना करे सकनी हँ । हमार मन मर गइल बा, हृदय में श्रद्धा भइला के बादो । काहेकि एक दिन उनकर पुजारी हमरा साथे अप्रिय व्यवहार कइले रहे । एही कारण ओही दिन से उनकर आ हमार सम्बन्ध में कमी आ गइल रहे । हम आज भित्री हृदय से प्रसन्न बानी काहेकि महिनोबाद हमरा मन में पशुपतिनाथजी के दर्शन करेके इच्छा भइल बा ।

बत्तीसपुतली के लम्बा रास्ता के अन्तिम किनारातक हम देख रहल बानी । एकओरी लमहर-लमहर आकाश छुए लगल जइसन गाछ सब देखतानी आ दोसर ओरी झापा आ मोरङ के जङ्गल फड़ाँनी कइल जइसन उघार आ छोट-छोट ठुठाखूँट सब मात्र देखतानी । हमरा एकदम इयाद बा, करीब तेरे बरीस पहिले मात्र रास्ता के दुनू ओरी एकेबेर वृक्षारोपण कइल गइल रहे । दुनू ओरी के गाछ के एके प्रकार से बढ़ला पर ई रास्ता केतना सुन्दर हो गइल रहित अइसन विचार करते-करते हमार आँख विद्युत प्रसारण लाइन पर पड़ जाता । हम अनुमान कइनी, बिजुली के तार उपर से गइला के कारण नीचा परेवाला गाछी के काट दीहल गइल होई । हमरा दिमाग में एगो बात के यकिन करे खातिर अनेक प्रश्न उठे लागता - का वृक्षारोपण करत बेरा ई बिजुली के खम्हनी सब ना रहे ? बिजुली के खम्हनी गाड़ले रहे त वृक्षारोपण करे खान छोट-छोट गाछी सब बड़ा आ ऊँचा होई से मालूम ना रहे ? विद्युत प्रसारण लाइन आ वृक्षारोपण लाइन कइसे एके रेखा में पड़ गइल ? हमार मस्तिष्क प्रश्न के उत्तर ना खोज सकता । निर्दिष्ट स्थान में पहुँचेके उद्देश्य से ओही रास्ता पर हम तेजी से चले लागतानी ।

एकाएक हमरा आगे एगो साइकिल रुकता । साइकिल चालक 'नमस्ते' कहके हमरा आगे खड़ा भइला पर हम उनकरा के चिन्हतानी । उनकरा के देखते हमरा माई के अन्हावल काम के इयाद आजाता । नमस्ते हमहुँ कहके पुछतानी -"विष्णुकान्तजी से अभी नौ बजेके औनपौन में कहाँ भेंट हो सकता ?"

सोमनाथ उत्तर देलन -"अपने फर्म में ।"

"हमरा आज उनकरा से भेंटेके बा । हम नौ बजे के औनपौन में आ जाएम से कह देहम्, होई नु !"

"होई ! कहाँ चलनी ह, दूरे का ?"

"ना, पशुपति तक मात्र !"

सोमनाथ चल गइलन । हम आपन गन्तव्यस्थान तरफ लगनी । सोमनाथ विष्णुकान्त के सहायक होके काम करेलन । विष्णुकान्त नेपाल के नामी वकिल में से एक बाड़न । वकालत पेशा कइला के पनरे बरीस के भीतर में विष्णुकान्त आपन इज्जत के बहुत उपर उठा लेले बाड़न । नइसन तइसन मुद्दा ऊ ना लेवेलन । जे लेवेलन ओकरा के सफले कके छोड़ेलन । एही कारण से ऊ उच्च कोटि के वकिल के रूप में चिन्हल जालन ।""

पशुपतिमन्दिर के चौक में आदमी के भींड़ बा । पश्चिम के दुआरि मात्र खोलला के कारण दर्शन ना पा के दोधार में रहल सब ओही ओरी लाइन में लागल बा । हमहुँ एक चक्कर लगाके अवसर लेवेके फेर में ओनहीए आ गइनी । आज छुट्टी के दिन होखेके कारण अइसन भींड़ भइल होई । बहुत मुश्किल से आपन उद्देश्य पूरा कके उहाँ से चल देनी ।

बतावल गइल समय से कुछ मिनट आगही हम विष्णुकान्त के घरे पहुँच गइनी, उहवें उनकर आपन निजी आँफिसो बा । हम उनकर आँफिस कोठली में प्रवेश कके उनकर टेबुल के बगल में जाके तुरन्ते बइठलही रहनी कि ओही बीच में -"बत्तीस के बत्तीस इनकर दाँत झारदेहम ! ई अपना के का बुझले बाड़न ?" कहते विष्णुकान्त एकाएक हमरा उपर बिगड़ गइलन ।

विष्णुकान्त हमरा उपर गुस्साइल आँख से देखे लागल । हमरा से नाराज होखेके कौनो कारणे नइखे ? ओह तरे गुस्साएके रहस्ये हम ना बुझे सकनी ! उनकरा से हमार मित्रता भइल पन्द्रहो बरीस हो गइल रहे । उनकर ठट्टा करेके आदत से हम अनभिज्ञ नइखीं । मगर ए तरहे नाराज भइल हम कबो ना देखले रहीं । आजु ऊ विष्णुकान्त के का हो गइल ? हम बुझे ना सकनी ?

हमरा कुछियो कहे से पहिलही फेर ऊ आपन सहायक के कहलन - "ए, सोमनाथजी ! का देखतानी, लेआईं ना सँड़सी । निकाल दीं इनकर दाँत !

खुबे मोती के दानालेखा बा कहके धाख लगावत रहलें । मोती के दाना बा कि मकै के दाना बा, देखादेतानी !"

हम विष्णुकान्त के सम्बोधन कके विनम्रतापूर्वक पुछनी -"काहे विष्णु ! का कहताड़ तोहनीका ? केकर दाँत के बात करताड़ ?"

हमरा ओरी तेजी से घुमके हमरा के खा जइहन जइसन कके कहलन -"तोहार दाँत ! तोहार !"

उनकर झपटेके तरीका देखके हमहुँ उत्तेजित हो गइनी आ उनकरा पर आक्रमण करते कहनी -"का कहतार तू ? तू पागल त ना हो गइल बाड़ ? का दाँत के बात कर रहल बाड़ ?"

'हँ, हम पागल बानी ! आउर कुछियो कहेके बा ?' कहके ऊ सोमनाथ ओरी घुम के कहलन -"का देख रहल बानी ? ले आई न सँड़सी ! रउआ कान से नइखे सुनात का ?"

विष्णुकान्त के आदेश अनुसार सोमनाथ सँड़सी लेआके टेबुल पर राख देवेलन । विष्णुकान्त सँड़सी दहिना हाँथ से पकड़के कहेलन -"तोहार आगे ऊपरवला चार गो दाँत निकालेब । एक, दू, तीन, चार गनके चारगो दाँत एह टेबुल पर राखेम । तू हमरा के का कर सकताड़ ?"

"तोहार काम अब कौनो ना भइल ओह से बेकार के बात करे लागल बाड़े ?"

"कौनो काम ना भइला से त तोहार दाँत निकालेके खोजले बानी हम ?" कहके बाँया हाँथ से हमार दुनू ठोर पकड़े आ गइलन ।

विष्णुकान्त के ई ढंग देखते हमरो तुरन्ते खीस लहर गइल । हम झट्ट से कुर्सी से उठके खुदे तेयार होके कहनी -"तु का चाहताड़, झगड़ा करेके ?"

ऊ आपन जोश से भरल मुहँ पर तनि नरमी ला के धीरे से कहलन- "ना, झगडा करेके ना चाहतानी । केवल तोहार दाँत निकालेके चाहतानी । जबरदस्ती अभी हम तोहार दाँत निकालेम । तोहार दाँत निकालला खातिर जे लागी से दण्डजुर्माना तिरेम । ई दू सय चालीस रोपेया ठीक कके रखले बानी ।"

टेबुल पर दू सय चालीस रोपेया आ सँड़सी साथेसाथ बा । हमार आगे के चारगो दाँत, जे सम्पूर्ण जीवन के सुन्दरता बा आ जेकर मोले नइखे, ओह चीज के दू सय चालीस मूल्य-निर्धारण कके विष्णुकान्त निकालेके फिराक में बा !" "

ई वास्तविकता बा कि नाटक बा, हम बुझे ना सकनी ह । विष्णुकान्त पर हमरा खीस आ जाता । हम आवेश में आके ओकरा के कहतानी -"तोहार दू सय चालीस तूही राख ले । हमरा आपन सुन्दरता नइखे गवाँवेके ।"

हमरा के खिसिआइल देखके विष्णुकान्त के चेहरा गम्भीर हो गइल । हम आपन क्रोध के रोके ना सकनी आ ओकरा के कहनी -"तोहार दाँत हम निकालेम आ तू जेतना दे रहल बाड़े ओ से दस गुना बेसी देहम । काहे एगो दाँत के बात करताड़ ? हम तोहरा के छौ सय रोपेया देहम ! बेमतलब के दाँत के बात करताड़ ? हम कौन काम से आइल रहनी ? कइसन काम में आइल रहनी ? एतना जिम्मेवार आदमी होके अनावश्यक बात करताड़ ?"

ऊ गम्भीर आ शान्त होके एगो फाइल उल्टावे लागल । कुछ देरतक हमहुँ चूपे रहनी । ऊ धीरे से हँसके कहे लगलन-"ई फाइल एही मुद्दा से सम्बन्धित बा । रउआ आएम से जानकारी सोमनाथ देले रहे । तोरा से कुछियो उपाय मिल जाई इहे सोचके वातावरण मात्र श्रृजना कइले रहनी । दु:ख ना मानेम । हम त ठट्टा कइले रहीं ।"

ऊ आपन सफाईओ पेश ना करे सकल रहलन कि ओतने में एगो अधेड उमीर के जनानी धरफड़ाते कोठली में प्रवेश करताड़ी । 'हम त मर गइनी वकिलजी !' कहके हमरा लगेके कुर्सी पर आके बइठ गइली । हमनी के ध्यान ओकरे पर केन्द्रित हो जाता । ऊ आपन माथा पकड़के कहे लगली - "फेरु मुद्दा हार गइनी ! हम का करीं ? अब त मरिओ गइला से होई ! अठारे बरीस तक मुद्दा लड़नी । जौन आशा बँचइले रहे, उहो ना रहल !"

विष्णुकान्त उनकर बात सुनके आश्चर्यचकित होते कहलन -"कौन मुद्दा हार गइनी ? कइसे हरा देलक त ?"

ऊ जनानी धीरे से कहे लगली -"हम आ हमार बेटा अंश ना पाईं कादोनि । शुरू में अदालत अंश मिली ठहरइले रहे तइयो 'अंश पावेके बात

बदर कायम होता' कहके फैसला कर देलक । अब का उपाय बा वकिलजी ! कहीं ?"

विष्णुकान्त ओ जनानी के समझावते कहलन -'ई क्षेत्रीय के हरइला से मुद्दे बिगड़ गइल से ना कहल जा सकेला । अभी भी दू-तीन तह बाँकिए बा । मगर कानून बमोजिम राउर मरद के चल सम्पत्ति अंशवण्डा खातिर दावी कइला से ना पावे सकेम । ई बात हम रउआ के पहिलहुओ कहलही रहीं ।'

हम विष्णुकान्त के बात के बीचे में काटके कहनी -'का मेहरारू मरद के चलसम्पत्ति में अंश ना पाई ?'

"हँ, घरवाला के चलसम्पत्ति में मेहरारू के अड्डा से अंश दिआवल गइल आजतक के कौनो रेकर्ड नइखे ।"

प्रश्न करते जनानी पुछताड़ी -"का त सर्वोच्च के हमरा के उनकर मेहरारू आ हमार बच्चा के उनकर बच्चा कायम कके बच्चा के जन्मोत्सवो के खर्च देवेके कइल फैसला बदर हो गइल त ? बेटा आ मेहरारू प्रमाणित करावे में जौन तेरह बरीस लागल रहे सब बेकार हो गइल त ?"

ओ जनानी के बात हम धीरे-धीरे बुझे लगनी । करीब चालीस बरीस के ऊ जनानी शायद आपन जिनगी के आधा दिन अदालते के चक्कर में बितइले होई । ऊ आपन मरद द्वारा 'हमार मेहरारू नइखी' कहके निकाल देला के बाद समाज में आपन आवरु आ हक के संरक्षण खातिर भी अदालत के शरण में गइल रहली । अठारहो बरीस तक में उनकर हक के संरक्षण ना भइला से स्वयं जीते जी मर गइल लेखा अनुभव कइले बाड़ी । बात के बीच-बीच में ऊ कहते गइली -"अब हम का करीं ? मर जाईं ?" ओकर प्रश्न के समाधान नइखे । उनकर प्रश्न प्रश्ने बनके रह गइल बा ।

विष्णुकान्त आज हमरा से बात करेके निश्चय कइले रहलन ओह से ओ जनानी के बिहने आवेके समय देते कहलन -"दीदी ! बेसी दुःखी ना होईं ! होखेवाला चीज त होइएजाला । हम रउआ के वचन देले बानी कि राउर मुद्दा समाप्त ना होखे तक ले हम निःशुल्क मदत करेम । मन छोट ना करीं ! आज हम विचार करतानी, बिहने सबेरे एही समय में रउआ से सलाह करेम ।"

"ठीक बा ! रउरे भरोसे बानी हजुर !" कहके विष्णुकान्त के नमस्कार कके कोठली से ऊ बाहर चल गइली ।

सोमनाथ विष्णुकान्त के फाइल देके कहलन -"ई बिहान दर्ता करेवाला मुद्दा के बा, आजे एकर वादी लिख देवे के बा ।"

"कौन मुद्दा ?"

"चावहिल के मेघराज के पैर टुटलवाला मुद्दा !"

"हँ, ले आईं ।"

विष्णुकान्त हमरा ओरी देखके कहेलन -"कइसन-कइसन मुद्दा बा ? कइसन-कइसन कानून बा ? हम त बुझही लायक ना रह गइनी । आदमी के पैर टुट गइला पर ऊ अस्पताल में बा । समय के भीतर में मुद्दो दायर ना कइला से ना होई । फेर कानून बमोजिम मुद्दा के फैसला भइलो पर भी वादी के ओकर पैर के तुलना में कुछियो फायदा ना होई । अइसन मुद्दा त हमरा देखही के मन ना करेला । आपन पक्ष के फायदा ना होवेवाला मुद्दा का देखीं ?"

ऊ फेर हमरा से कहता -"देख ! कथंकदाचित कौनो मूर्ख यदि अंगभंग कर देलख तब अपाङ्ग होखेके अतिरिक्त कौनो उपाय नइखे ।"

हम कानून के पेंच ना बुझे सकतानी तबभी विष्णुकान्त के कहल चूपेचाप सुने ना सकनी आ जिज्ञासा कइनी -"का अंगभंग भइला पर कानून सुरक्षा ना करेला ?"

ऊ तुरन्ते उत्तर देलन -"सुरक्षा त काहे नइखे करत ? सुरक्षा त जरूरे करता, मगर जेतना तोहार क्षति भइल रही ओकरा बराबर ना पहुँची ।"

विष्णुकान्त के बात सुनला के बाद हमार शरीर के प्रत्येक अङ्ग असुरक्षित हो गइल लेखा हमरा बुझाईल । हमरा भीतर में त्रास पैदा हो गइल - कौनो आदमी हमार दाँत तोड़ दी अथवा हाँथ-पैर तोड़ दी तब हम उपाय विहीन हो जाएम, हम अपाङ्ग हो जाएम ...!

कानून आ व्यवहार के बीच के अन्तर के सम्बन्ध में विष्णुकान्त हमरा बहुत समझइलन, बहुतो समस्या सब हमरा आगे रखलन, जे ऊ अभी भोग रहल बाड़न । उनकर कहब बा :व्यवहार आ कानून में सामञ्जस्य लावेके चाहत रहे । ऊ जे समस्या सब देखइलन से सब हमरा के उनकरा से

प्रश्न करे खातिर बाध्य कर देलक । एही से हम उनकरा के प्रश्न कइनी -"तू समस्या मात्र आगे राखताड़ कि ओकर समाधानो बा ?"

हमार प्रश्न सुनते विष्णुकान्त अप्रिय ढंग से कहे लागता -"तोरा मालूम बा ? अशुद्धता तबे बुझाता जब शुद्धता के बारे में जानकारी होता । प्रत्येक समस्या के समाधान बा आ प्रत्येक त्रुटि के पीछे सुधार बा । ई एक-दोसरा के पूरक बा । मुख्य बात ई बा जे एकरा विषय में निर्णय कइल कठिन बा ।"

उनकर कहल हम स्पष्ट रूप से अबो ना बुझनी कि ऊ का कहे चाहेलन । ना बुझलो पर बुझेके इच्छा हमरा नइखे । हम केवल उनकरा से हमार घड़ारी दोसर दखल करलेले बा, ओही विषय में कानूनी सलाह लेवे गइल रहनी, जेकरा विषय में हम एक-दू बेर कहिओ देले रहनी तइयो विष्णुकान्त ध्यान ना देले बाड़न ।

बातचीत के विषय बदलेके उद्देश्य से हम उनकरा के कहनी - "आजकल केतना अदालत जाताड़ ?"

"का जाईं अदालत ? एगो मुद्दा के बहस करे खातिर महिनो तक दउरेके पड़ता । कौनो दिन अइसन नइखे कि मुद्दा पेशी भइल दिन देखल गइल होखे । दिनभर अदालत के फिल्ड में राउद ताप के साँझ में घरे लौटेके पड़ता । अदालत जातानी कहीं कि ना जातानी कहीं ? अइसने बा ।"

हम कुछियो बोलही ना पइले रहीं कि ऊ फेर कहे लगलन - "का करीं अदालत जा के ? प्रायः अइसन मुद्दा नइखे जेकरा विषय में दोसरे ढंग से विपरीत निर्णय ना लेल गइल होई ! सुनले रहनी, राणा के समय में डिट्ठा-विचारीलोगन न्याय देवे खान बहुत विचार पहुँचाके आ नोकरिओ के साक्षी राखके न्याय देत रहलन, कादोनि ! कारण ओकनी के फैसला कइल मुद्दा के पाँचो प्रतिशत उलिट गइला पर नोकरिए चल जात रहे, कादोनि ! आजकाल ओइसन नइखे ! शतोप्रतिशत मुद्दा उलिट गइला पर कौनो फरक नइखे परत । एक मुद्दा के निर्णय होखेमें दस बरीस लागल त साधारण बात हो गइल बा । का करीं ? मन नाहिओ मानला पर अदालत जाहीं के पड़ता । जे पेशा आपनइले बानी ओकरा के छोड़िओ ना सकतानी । साथे कानूनी राज में कानून के मर्यदो राखेके पड़ता । कइसनो त्रुटि होखे सहहीं के पड़ता, ओहु पर आपन पेशो त ओइसने बा । एही से केहु तरे होखे अदालत जाहीं के पड़ता ।"

विष्णुकान्त के मन के भीतर अहुनारहल मनोव्यथा हम सुनेके निश्चय कइनी, उनकर अभिप्रायो रहे कि हम सुनी । हमरा मालूम बा, उनकर मन के भड़ास निकल गइला से उनकरा शान्ति मिली ।

विष्णुकान्त हमार पुरान साथी में से बाड़न । कुछ बरीस पहिले एकेगो संस्था में रहके काम कइला से हमरा दुनू जने में बहुत हेमखेम हो गइल रहे । केवल ऊ आ हम मित्रे मात्र नइखीं, हमनी दुनू जनेके घर के परिवार के सदस्य लोगन में भी एक-दोसरा से ओतने हेलमेल बा । हमनीका एक-दोसरा के निःस्वार्थ भाव से सहयोग करत आइल बानी ।

एही बीच में एगो नाया आदमी कोठली में प्रवेश करता । विष्णुकान्त के नमस्कार कके उनकर टेबुल के बगल में अर्थात् ठीक हमरा सामने के कुर्सी पर बइठके कहता - "बहुत दुःख पइनी वकिल साहेब ! सर्वोच्च काल्ह हमरा के हरादेलक !"

विष्णुकान्त अकचकाके कहलन -"का ? हरा देलक ? हारेवाला मुद्दे ना रहे !"

एही आशा में बारह बरीस गुजर गइल । ना हारेवाला मुद्दा । हमार पुर्खा के समय से हमनी के उपयोग करत आइल रास्ता, अरोसिया-परोसिया सब के मालूमे रहल बात ह । का करीं ?

हमरा सम्बोधन कके विष्णुकान्त कुदे लगलन -"हे देखीं ! इनकर मुद्दा क्षेत्रीय अदालत जीता देले रहे, कानूनतः अन्तिम निर्णयो हो गइल रहे । फेर अनुमति से हरा देलक ।"

बीचे में ऊ अपरिचित व्यक्ति कहलन -"क्षेत्रीय अदालते से मात्रे कहाँ जीतले रहीं ? शुरू के जिलो अदालत से त जीत गइल रहीं ! अञ्चलो हमार रास्ता नइखे से ना कहे सकल रहे । केवल देवाल लगा देले रहे जे से 'रास्ता खोलेके ना मिल सकता' कहले रहें ! सोरहो आना सनातन से चलत आइल रास्ता के रस्ते नइखे कहके काल्ह फैसला कर देलक । अब कहीं वकिलसाहेब, का करीं ?"

विष्णुकान्त ओ व्यक्ति से पुछलन -"राउर उमीर केतना भइल काका ?"

"अब एह जेठ से छप्पन बरीस शुरू हो जाई ।"

"राउर ई झगडा शुरू होखत समय में केतना उमीर रहे ?"

"पैंतालिस बरीस के रहीं ।"

"अब बारह बरीस के बाद फैसला होई तब रउआ केतना बरीस के हो जाएब ?"

ऊ व्यक्ति खिसियाके विष्णुकान्त के कहलन -"का कहतानी वकिलसाहेब? रस्ते छोड़ दीं ? अब हमरा पक्ष में न्याय नहिए होई त ?"

विष्णुकान्त समझावते कहलन -"न्याय ना होई से हम कइसे कह सकतानी ! न्याय व्यवस्था प्रभावकारी बनावे खातिर बहुतो सिद्धान्त सब प्रतिपादन हो रहल बा । न्याय सुलभ बनावे खातिर अनगिन्ती प्रयोग सब हो रहल बा । न्याय सुधार करे खातिर विभिन्न आयोग सब बन रहल बा । ऊ कानूनी राज्य में न्याय ना मिली से ना कहल जा सकेला । न्याय जरूर मिलता, मगर कइसे मिलता, ऊ रउआ भोग लेले बानी !"

हमरा ओरी संकेत कके ऊ कहलन -"अदालत में मुद्दा जाएके अर्थ बा घटी में पाँच बरीस के अमूल्य समय नष्ट करेके । ओहु में छोटछोट मुद्दा भइल आ झगडिया खूबे तगादा करी तबे, ना त मुद्दा खातिर दस-बीस बरीस त माहमूली बा । अभिनो चौबीस बरीस के दूगो मुद्दा आ पचीस बरीस के एगो मुद्दा हमरा फर्म में दर्त्ता बा । रउआ बताईं, आज के जइसन समय में आदमी के एतना लम्बा अवधि तक मुद्दे में लटकल रहेके चाहीं ..... ?"

बीचे में बात काटके ऊ अपरिचित व्यक्ति कहलन -"न्याय व्यवस्था त राणाशाहिए के समय में अच्छा रहे ! आउर विषय में ओकनी के जे कुछियो कइले होईहन मगर न्याय देवे में पाछा ना रहत रहलें । न्याय खातिर त 'स्वर्णिम युग' कहला से भी होई । आजकाल बारह बरीस में ना निर्णय होखेवाला काम ओ समय में बारह मिनट में निर्णय हो जात रहे ।"

उनकर बात के काटके हम कहनी -"ओ समय में कम आदमी रहे । कम मुद्दा सब रहत रहे । फेर ऊ हुकुमी शासन रहे, उनकरा बोल देला से हो जात रहे । अभी त ओइसन सम्भव नइखे आ होइबो ना करी ।"

"कइला से काहे ना होई । बहुत लोग बाटे आ बहुत मुद्दा बा त बहुत अड्डा-अदालतो त बा । इहाँ काम-कारवाही के तरिके ठीक नइखे । रउआ सुनिए लेनी हमार मुद्दा के बारह बरीस हो गइल । एह अवधि भीतर में

अड्डा-अदालत दउरे में, वकिल के देवे में केतना खर्च भइल होई ? वकिल साहेब के अभी के कहब अनुसार आउरो बारह बरीस में निर्णय होखेवाला स्थिति नइखे । एह तरहे युगोयुग तक अदालत मात्र दउरत रहेके अवस्था, कइसन बा ई परिस्थिति ?"

हम जौना काम से विष्णुकान्त के इहाँ आइल रहनी, ओ विषय में हम बाते ना करे पईनी ह । हम घड़ी देखनी । हमरा अइला बहुत समय हो गइल रहे । विष्णुकान्त ओरी घुमके धीरे से हम कहनी -"विष्णु ! हम कुछ कानूनी सलाह लेवे खातिर तोरा इहाँ आइल बानी ।"

ऊ हडबड़ाते कहलन -"पहिलही काहे ना कहले ? बोल ! बोल !"

"पहिलही कइसे कहतीं ? पहुँचते नाटक देखावेके शुरू कर देले तू !"

"छोड़ ई सब बात ! हम सोचनी तू इहाँ बात करे आइल होइब ! कहे ना, कइसन कानूनी सलाह तोरा चाहीं ?"

"हमार नगरक्षेत्र भीतर में करीब दू हजार स्क्वायरफीट के घड़ारी जमीन बा । पहिले पुर्खा के समय में घरो रहे कादोनि ! अभिनों घर के निशान तक देखाता । शहरी क्षेत्र भीतर पहिले कौनो कर तिरेके व्यवस्था ना रहे । कर तिरेवाला व्यवस्था ना भइला से कौनो कागज प्रमाण रहेके बाते ना भइल । सब से पाछे जौन नापी भइल रहे ओह में घर ना रहे से जनाके नापी भइल । ओ नापी के समय में केहु से कौनो वास्ता ना राखके भइल बात तोहरो मालूमे बा ! एह से ओ में केहु के नाम जनावेके बाते ना भइल । अभी एक जने 'ई हमार घर-घड़ारी बा' कहके घर बनावे खातिर नक्सा स्वीकृत कराके ले आइल बा । साँध-सीमाना के आदमी सब हमरा इहाँ आके खबर देले बा । खुद हमनी के पुर्खा के सम्पत्ति दोसर खाए लाग गइल । एह में कौनो उपाय बा कि ?"

हमार बात सुनके विष्णुकान्त ओठ फरफराते कहलन -"तोहरे बा से कौनो प्रमाण नइखे । रहे कादोनि के भरोसे मुद्दा जीतहुके बात नइखे । ओइसे त जे घर बनावे खातिर नक्सा पास करइले होई, ओकरा लगे भी ओ जमीन के प्रमाण ना हो सकेला काहेकि वास्तविकता में ऊ जमीन तोहार बा । मुद्दा कइल जा सकता आ मुद्दा लागिओ सकता तइयो तोहार जमीन आपन नाम में करावे में दस-पन्द्रह बरीस लाग जाई । समय मात्र लागला से त कुछियो ना रहे पइसो लाग जाई । हमरा विचार से त ओकरा के छोड़ द ।"

"का हम छोड़ दीं ? हमार बपौती सम्पत्ति पर दोसर घर बना ली ? का कहतार तू ?"

"बनावे द ! दू हजार स्क्वायरफीट जमीन खातिर बीसो हजार नगद लाग जाई । ओतना खर्च लाग गइला के बादो तोरे पक्ष में निर्णय होई ओकर कौनो गैरेन्टी नइखे । तू खुदे कहताड़ प्रमाण नइखे । तब कइसे होई ?"

"तु काहे बात नइख बुझत ! काठमाण्डू उपत्यका भीतर के शहरीक्षेत्र में पहिले कर बुझावेके व्यवस्था ना रहे । तब कइसे प्रमाण होई : हमार बा से बात उहवाँ के साँध-सँधियार आ अरोसिया परोसिया त कहिए दी नु !"

"केतनो लोग बतइहन, तोहार प्रमाणित नाहिओ हो सकता । अदालत के तह केतना बा, तोहरा मालूमे बा । झोंक में भा आवेश में आके मुद्दा दायर कइल आसान बा मगर ओकर परिणाम सहल बहुत कठिन बा । हम त तोहरा के मित्र के नाता से सलाह देतानी-छोड़िए दे ।"

हम केतना उत्साह लेके विष्णुकान्त के इहाँ गइल रहनी । हमार मित्र कानून व्यवसायी बा ओकर हमरा केतना घमण्ड रहे । हमार विश्वास टुट गइल । उनकर सलाह के विपरीत जाके बहसो कइल ठीक ना लागल । हम उनकरा से इहे पुछनी -"का छोड़िए दीं त ?"

ऊ कहलन -'बिसरिए जाए में कल्याण बा ! ई तू बुझले कि जेकरा हाँथ में लाठी होता, ओकरे सामान होता ।"

घड़ी ओर देखतानी, दिन के बारह बजे लागल बा । समय बहुत हो गइला के कारण दोसर दिन आएम कहके विष्णुकान्त से बिदा लेके चल देतानी ।

दुपहर बा ! शून्य रास्ता आपन पीछे छोड़ते हम घर ओरी बढ़ रहल बानी । विष्णुकान्त द्वारा कइल गइल अभिनय एक-एक कके इयाद आवता, ओकरा कार्यालय में भइल बातचीत आ विष्णुकान्तद्वारा हमरा देहल गइल सलाह । इयाद कइला पर हमरा आउर भय होखे लागता । कहीं भी तनिको सुरक्षा नइखी देखत । चारू ओरी अन्हार देखतानी । हमर सब साँझ आ विहान चिल्होर के पंजा के भीतर फँसल छोट मुर्गी के बच्चा लेखा हो गइल बुझाता । हमार सब दिन भूखाइल गिद्ध से घेराइल मरल पशु के शरीर लेखा

बा । अइसन असहाय परिस्थिति में ओझराइल हमार वर्तमान के कहानी सब कहिओ ना समाप्त होखेवाला क्षितिज लेखा हो गइल बा ।

ॐ शिवम् भूयात् !

✠✠✠